।। श्री सद्गुरु प्रसन्न।।

**संरक्षक**
**परमपूज्य सद्गुरु वासुदेव रामेश्वरजी तिवारी**

संपादक मण्डल :
डॉ. चन्दा रजक, रीवा
श्री आनंद मिश्रा, शहडोल

संपादकीय सलाहकार :– देवेन्द्र सिंह राय, भोपाल

# उद्बोधन –2013

## अनुक्रमणिका


| क्र0 | विषय | पृष्ठ संख्या |
|---|---|---|
| 1. | सद्गुरू स्तुति/आर्शीवाद | 1 |
| 2. | अपनी बात | 2 |
| 3. | पू. गुरूजी के प्रवचन – | 3 |
| | (अ) चित्त और मन | 7 |
| | (ब) पूज्यनीय गुरूजी की रायपुर में डा0 प्रभात आचार्य के घर पर एक शिष्य के साथ वार्ता | |
| | (स) सत्संग | 19 |
| | (द) पहले क्रिया बाद में बोलना | 24 |
| | (इ) सत्यम् वद प्रियम् वद | 26 |
| | (फ) साधन– धाम | 29 |
| | (य) समाधि | 34 |
| 4. | शिष्यानुभव, संस्मरण, आदि | 37 |
| 5. | गुरूजी–एक गृहणी की दृष्टि से | 47 |
| 6. | न्यास का वार्षिक लेखा –जोखा | 50 |


- यह सच है कि मनुष्य तत्त्वतः दिव्य है लेकिन मनुष्य उस भगवान के बारे में एकदम निश्चेतन होता है जिसे वह अपने अन्दर लिए रहता है और यही निश्चेतना जड़ जगत के मिथ्यात्व का निर्माण करती है।
- हमारी कृतज्ञता भगवान् के प्रति होनी चाहिए। मनुष्यों के लिए सद्भावना, समझ और परस्पर सहायता की वृत्ति होना चाहिए।
- सुखी और शांत होने का सबसे अच्छा उपाय है भगवान के प्रति गहराई में, तीव्रता के साथ सतत कृतज्ञता का अनुभव करना।

# सद्गुरू स्तुति

भव–भय–भंजन, पुरूष निरंजन, रतिपति–गंजनकारी।
यतिजन–रंजन, मनोमद–खंडन, जय भवबंधन–हारी।।
जय जन–पालक, सुरदल–नायक, जय जय विश्व विधाता।
चिरशुभ–साधक, मतिमल–पावक, जय चित्तसंशय–त्राता।।
सुर नर–वंदन, विजर, विवंधन, चित–मन–नंदन–कारी।
रिपुचय'मंथन, जय भवतारण, स्थल–जल–भूधर–धारी।।
शम–दम–मंडन, अभय–निकेतन, जय जय मंगलदाता।
जय सुख सागर, नटवर, नागर, जय शरणागत पाता।।
भ्रमतर–भास्कर, जय परमेश्वर, सुखकर–सुन्दर–भाषी।
अचल सनातन, जय भयपावन, जय विजयी अविनाशी।।
भक्त–विमोहन, वरतनु–धारण, जय हरिकीर्तन–भोला।
गदगद–भाषण, चित–मन–तोषण, ढलढल– नर्तनलीला।।
मतिगति–वर्धन, कलिबल–मर्दन, विषय–विराग प्रसारी।
जड़–चित्त–चेतक, भवजल–भेलक, जय नर मानस–चारी।।
जय पुरूषोत्तम, अनुपम संयम, जय जय अन्तरयामी।
खरतर–साधन, नर दुःख वारण, जय सदगुरू नमामि।।
नमो नमो प्रभु, वाक्य–मनातीत मनोवचनैकाधार।
ज्योतिर ज्योति, उजल हृदिकंदर तुमि तम भंजनहार।। जय गुरूजी

# दिव्य आर्शीवाद

**ॐ स्वस्ति न इन्द्रो वृद्धश्रवाः स्वस्ति नः पूषा विश्ववेदाः।**
**स्वस्ति नस्ताक्ष्र्यो अरिष्टनेमिः स्वस्ति नः बृहस्पतिर्दधातु।।**

ॐ शान्तिः शान्तिः शान्तिः। ॐ द्यौः शान्तिः अन्तरिक्षं शान्तिः पृथिवी शान्तिः आपः शान्तिः औषधयः शान्तिः वनस्पतयः शान्तिः

विश्वे देवाः शान्तिः ब्रह्म शान्तिः सर्व ब्रह्म शान्तिः शान्तिरेव शान्तिः सा मा शान्तिरेधि सुशान्तिर्भवतु।

सर्वे भवन्तु सुखिनः सर्वे सन्तु निरामयः सर्वे भद्राणि पश्यन्तु मा कश्चित् दुःख भागभवेत्।

जिस तरह से आशीर्वाद देकर गया था, उसी तरह से आज हम सब फिर से इकट्ठे हुये हैं, हम अपने परिवार को आनन्दमग्न पा रहे हैं जिसे देखकर मुझे अत्यंत हर्ष हो रहा है। कोई भी कार्य करने के पहले वैदिक मंत्र के आधार पर हम आशीर्वाद देते हैं।

सबका कल्याण हो, सब प्रकार के दुख, आपत्ति, विपत्ति, संकट शान्त हो, सब प्रकार की शान्ति आपको प्राप्त हो, जीवन सफल हो, जीवन यशस्वी हो, जीवन निर्मल हो और आप सतपथ पर अग्रसर हो ऐसा, मेरा स्नेहपूर्ण आशीष है ।शांतिः...........शांतिः..........शांति।

# अपनी बात

प्रिय गुरू बंधु/बहन,
जय गुरूदेव,

अपने गुरू परिवार की गुरूपूर्णिमा पर आप सबका हार्दिक स्वागत है । आज, हमेशा की तरह, हम पूज्य गुरूजी से प्रार्थना करते हैं कि सभी को वह शक्ति और विश्वास दें कि सारे परिवारजन उनके बताये हुए मार्ग पर अभ्यासपूर्वक चल सकें एवं अपने लक्ष्य को प्राप्त कर सकें।

कुछ स्थानों पर नियमित रूप से सामूहिक ध्यान का आयोजन होता है जिसमें उस नगर के अधिकांश परिवार जन आते हैं। इस वर्ष शहडोल में भी ध्यान शिविर आयोजित किया गया। इस प्रकार के प्रयास नियमित रूप से सभी स्थानों पर होते रहें एवं उनकी जानकारी हमें मिलती रहे तो प्रसन्नतापूर्वक हम ''उद्बोधन'' में उसे प्रकाशित करेंगे ताकि पूरे गुरू परिवार के लिए मार्गदर्शन एव प्रेरणा मिल सके। ''गुरूवाणी'' का संशोधित संस्करण निकट भविष्य में प्रकाशित करने का विचार है। यदि कोई परिवारजन पूज्य गुरूजी का ऐसा प्रवचन या मार्गदर्शन, जो अभी तक प्रकाशित नहीं हुआ है, भेजना चाहे तो स्वागत है। ''उद्बोधन'' का स्वरूप एवं मुद्रण/प्रकाशन प्रक्रिया वर्ष 1998 से लगभग एक जैसी रही है। गुरूजी के अप्रकाशित प्रवचन एवं नये अनुभव मिलने में प्रतिवर्ष होने वाली कठिनाई के कारण हम बहुत कुछ नया, चाहने के बाद भी, नहीं कर पा रहे हैं। इस दिशा में आपके सुझावों का हम हार्दिक स्वागत करेंगे।

''उद्बोधन'' तैयार होने में डा. चन्दा रजक और श्री आनंद मिश्रा का अमूल्य योगदान रहा । श्री कृष्णा अग्रवाल, कृष्णा प्रिटिंग होम ने हर वर्ष की तरह एवं उनकी पत्नी श्रीमती संगीता अग्रवाल ने भी पत्रिका के मुद्रण में प्रशंसनीय श्रम किया। श्रीमति कुसुम राय ने प्रूफ रीडिंग में सहायता की। हम इन सबके आभारी हैं। फिर भी यदि कोई मुद्रण त्रुटि रह गई हो तो हम क्षमाप्रार्थी हैं।

इस पुनीत अवसर पर सद्गुरूदेव से प्रार्थना है कि उनके चरणों में हमारी श्रृद्धा और विश्वास अक्षुण्ण बना रहे ताकि सभी परिवारजन आत्म कल्याण के साथ–साथ जीवन में आने वाली विभिन्न समस्याओं का सामना भी धैर्यपूर्वक कर सकें।

आपका,
**(देवेन्द्र सिंह राय)**

# चित्त और मन

(अ) दिनांक : 10.05.1992, रायपुर

चातुर्वर्ण्यं माने ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य, शूद्र नहीं है। ये तो Caste है, ये तो हम लोगों ने बनाया है। **ये चार हैं**:– स्वेदज, उद्भिज,अण्डज एवं जरायुज। **स्वेदज**– स्वेद (पसीना) से पैदा होते हैं। उद्भिज माने बीज से पैदा होते हैं, इनमें कोई परिवर्तन नहीं है अनादिकाल से। ये ज्यों के त्यों हैं। ये आम का पेड़ अनादिकाल से ऐसा ही है। **अण्डज**– जो अण्डे से पैदा होते हैं। **जरायुज**– जो अपने बच्चों को दूध पिलाते हैं, इनमें मनुष्य भी आ गया। यह है **Scientific base** इसके अलावा पाँचवां लाओ न, आप भी डॉक्टर हैं, पाँचवां दिखा दो हमको। तुलसी दास जी ने 500 साल पहले यह सब लिखा है।

**योगाभ्यास क्या है?** जब आप अभ्यास करेंगे तो आप में जो प्राण है, वह प्राण संचालन करता है, माने जब आप ध्यान करते हैं तो आप किरण का ध्यान करते हैं कि **नहीं?** **आदित्यवर्ण**– माने आदित्य सा वर्ण है और वह देखते–देखते आप उसमें डूब जाते हैं। **शरीर**– अरे! यह तो जड़ है। आत्मा की जो व्याख्या है– वह सर्व व्यापक है, हम जो ज्योति देखते हैं, एक दिन ऐसा आता है कि वह रश्मि, वह किरण, रश्मि माने Divine Quantum of Energy है। (Quantum माने Light का Single Ray है) जब हम Single Ray का ध्यान करते हैं, लक्ष्य लगाते हैं।, लक्ष्य लगाकर, फलाना जगह लक्ष्य लगाओ और लक्ष्य लगाते–लगाते, डूबते–डूबते साधक को प्रकाश आने लग जाता है और प्रकाश फैलते–फैलते इतना फैल जाता है कि सारा Universe भर जाता है, सारा World भर जाता है। एक ही Single Ray से। क्यों Single Ray से भर जाता है क्योंकि सूर्य और किरण यह अलग नहीं है, दोनों एक हैं, यह आप मानते हैं कि नहीं ? सूर्य और उसकी किरण अलग है क्या?चंद्रमा और उसकी किरण अलग है क्या?इसलिए जब आप किरण देखने जाते हैं तो चन्द्रमा दिखता है।

**अरिहन्त माने तूर्यावस्था**– वे विहार करते हैं। हमें देखो न! वही कार्य करता हूँ, उनकी भाषा में अरिहंतुम है, माने तूर्यावस्था जिसे भूत भविष्य का ज्ञान हो–चाहे तो, न चाहे तो कुछ भी नही होता। मेरे पास तो प्रमाण हैं।

ये जीव अपने आप पर आरोप किया–मेरा जन्म–मरण है, शरीर के लिए मरता है यह। चौरासी लक्ष योनि घूमकर फिर मनुष्य जन्म होता है, ऐसा लिखा है– यह चौरासी लक्ष माने क्या? चौ–माने चार, राशि– समूह, लक्ष्य– देखो ये चार ही हैं। योनियाँ– चार ही तो हैं, स्वेदज, अण्डज..... । हमको फुर्सत कहाँ है, शब्दों, भाषा को पढ़ने की। अरे! कहानियाँ सब जानते हैं, सुनाते हैं Practical नहीं है। एक भी व्यक्ति Practical वाले नहीं हैं। ये सब

गाली देते हैं, आलोचना करते हैं, सब पर लांछन लगाते हैं ये लोग। सब पर टीका–टिप्पणी करते हैं, दोषारोपण करते हैं ये सब। तुम्हारा दोष ही नही गया तो क्या गया तुम्हारा? लोग कहते हैं जब नमाज पढ़ते हैं तो शैतान पर्दे के पीछे रहता है। अरे! ये सब कुछ झूठ बात है। ये शैतान कहाँ से आया? खुदा ने शैतान पैदा किया, अरे यह सब झूठ बात है, खुदा ने कभी शैतान पैदा नहीं किया। Divine से Divine ही आया। अरबों, खरबों, नील, पद्म में आपको एकाध मिल जाये तो मिल जाये, World में एकाध अनुभवी मिल जाये, तो मिल जाये। ये जो तुम्हारे सामने बैठा हुआ है, ये अंहकार नही है, **आधी केले मग सांगितले........** । मैं रामदास नहीं हूँ लेकिन रामदास का मार्ग, मेरे से भिन्न नहीं है। रामदास शादी नहीं किये, भाग गये। मैंने शादी किया और बाल–बच्चे हैं और मैं अकेला नही हूँ। **वृहद माने बड़ा**– मैं सबसे बड़ा हूँ इसलिये उसे अनादि और अनंत कहा, और क्या व्याख्या करेंगे ?

शरीर का परिवर्तन है, आत्मा तो कहीं आता–जाता नही। आत्मा तो सर्वव्यापक है। जब सर्वव्यापक है तो आना–जाना कहाँ है? एक लोटा या पात्र है जो लबरेज माने ऊपर तक पानी से भरा है, और पानी समा सकता है क्या ?नहीं, आ–जा सकता है क्या ?जब आत्मा सर्वव्यापक है तो हिल–डुल सकता है क्या ? नहीं, लेकिन हिलता भी है, और डुलता भी है। वह सर्वशक्तिमान है, Energy सदा आन्दोलित है, यह स्थिर नहीं है। Energy स्थायी नहीं है, अस्थायी है, यह हिलती–डुलती है। जब Chamber में Light की Single ray का Blasting किये तो जो Light है जिसमें Light रखा उन्होंने और Blast किया, तोड़ा, तो जैसा था वह बाहर निकला और फिर वैसे ही अन्दर घुस गया। One Thousand Fraction of Second में उसकी फोटो ले ली गयी। ये निकल कर फिर वापस आ जाना– यह क्या है? ये ही Energy है। आप आते–जाते हैं, मिश्रा जी (एक शिष्य) को, कौन लाता–ले जाता है, इस शरीर को, जो जड़ है, कौन लाता–ले जाता है?यह किसके द्वारा होता है ?यह Energy द्वारा है– यह हवा से नही है।

**यही देश रहेगा बाकी सब देश चले जायेंगे। यही बात स्वामी विवेकानन्द जी ने बाहर (विदशों) में कही थी। आप कितने भी आक्रमण (चढ़ाई) भारत में करो; यदि एक भी आत्मज्ञानी व्यक्ति हिन्दुस्तान में रहेगा, तो हमारी संस्कृति को कोई भी दगा नहीं दे सकता, धक्का नहीं दे सकता है। वह मिट जायेगा लेकिन इसको मिटा नहीं सकता है, यह विवेकानन्द जी ने विदेशों में कहा।**

वही कार्य मैं कर रहा हूँ। सन्यासी, लोग यहाँ आते हैं बोलते हैं, आप मुझ पर कृपा करिए। अरे! काहे को सन्यासी बने, ये खोटे हैं, ये औरों को तंग करेंगे लेकिन स्वंय का संस्कार मिटा नहीं सकते।

**ये नाहीं...........। ये जैसा दिखता है ये वैसा नहीं है। यह साधारण नहीं है, असाधारण व्यक्ति है, इसमें जो व्यक्ति है, इसमें जो अभिव्यक्ति है, अभिव्यक्ति माने इसमें जो शक्ति है, वो महाशक्ति है, वह Almighty है, वह सर्वव्यापक है और सर्वत्र है और सर्वशक्तिमान है, सब जगह विद्यमान है। इस चीज को हम लोग भूल गए हैं और बार—बार भटक रहे हैं हम।** नहीं— तीन प्रकार के साधक हम पाते हैं, तुलसी दास जी लिखे हैंः— गुरू—कृपा—सिद्ध, क्या बताया— **श्री गुरूपद नख मन—गन—ज्योति, सुमिरत दिव्य दृष्टि हिय होती। अभ्यास कहाँ तक करना— कुछ लेना न देना, गुरूचरणन में लिपट रहना।** आप जब सोते हैं तो गुरू के चरण को तकिया बनाकर सो जाना और गुरू चरण तकिया है, सो गये उसमें। अब मैं Secret बताता हूँ— यह सब चोरी है, Secret है। संस्कृत में अलग है लेकिन चीज यही है। **जिस दिन आपने दीक्षा ली, गुरूचरणों की पूजा की, उसी दिन से आप मुक्त हैं, तत्काल, अचिरात, Liberation मुक्ति है। कबीर ने भी यही कहा।** गुरूजी के चरणों को लक्ष्य में रखना। वह जो नख हैं, जब तक ध्यान करते—करते—करते...... उन दसों नखों में मणिवत न चमक उठे, हमको उसमें चमक न आ जाए। **सुमिरत दिव्य दृष्टि हिय होती**— यदि आपका स्मरण बराबर है तो वे मणिवत चमक उठते हैं। मणिवत, स्फटिक मणि के समान दसों नख हो जाते हैं, **उघरहिं विमल विलोचन हिय के.......।** जब ग्रंथि, संशय, दूर हो जाती है, जैसे पानी में, Clear water में सब चीजें दिखायी देती हैं, वैसे ही बैठे—बैठे सारी दुनिया दिखायी देती है, उसे दिखायी देने लग जाती है। वह योगी हो गया, अब आत्मयोग हो गया। जहाँ आत्मयोग हुआ, वह निश्चिंत हुआ। फिर कोई चिन्ता उसको नहीं......... , सब कार्य प्रकृति करती रहती है, कहाँ से, किधर से आता है, सब बराबर होता जाता है। तो तीन प्रकार साधक बताये गये हैं। ये दर्शन होने पर— यह गुरू कृपा अंजन है,

**अज्ञान तिमिरांधस्य................................तस्मै श्री गुरवे नमः।**

**अखण्ड मंडलाकारं................................ तस्मै श्री गुरवे नमः।।**

जब दिव्यदृष्टि हो गई तब क्या होता है— उसका कौतुक हो जाता है, उसका खेल हो जाता है। वह मन्द—मन्द मुस्कुराता रहता है, वहाँ कोई worries, Anxieties, कुछ भी नहीं रह जाता। मगन रहता है अपने आप में। शैल, वन, पृथ्वी के अन्दर वह सब देखता रहता है, तमाशे सब दिखने लग जाता है। ऐसे तीन प्रकार के साधक बतलाया— सिद्ध, उनको दिखता है सब। साधक— साधना करता है तब दिव्यदृष्टि हो जाती है। **अर्चिता सर्वभावेन..**

अपने में वही तो विराजमान है और हम जाते हैं, बाहर ढूंढने के लिए। तो **साधक, सिद्ध, सुजान।** साधना में क्या करना है— **गुरू नख मणिवत चमक जाना चाहिए।**

तब तक साधना करना चाहिए और सिद्ध लोग तो देखते ही हैं। सुजान माने Scientist - वैज्ञानिक। Philosophy में जैसा बना है वैसा अपने आचरण में लाता है और अपने आचरण को उसी Mode में Mould कर लेता है वह कुछ करता–धरता नहीं, वह Philosophically चलता रहता है। संसार विमुख कोई नहीं होते लेकिन वह तत्व पर बना रहता है। एक तत्व है अभ्यासे, तन्निरोधः – गुरू माने क्या ? गु माने अंधकार, तिमिर, उसका निरोध कर देना। उसको गुरू कहते हैं माने केवल प्रकाश ही प्रकाश। वह कौतुक देखता है। यह सब हो चुका है सब अनुभव में आ चुका है, नहीं तो अत्यंत मलिनो देहो............., ये देह अत्यंत मलिन है, मल के अतिरिक्त कुछ नहीं। न नहाओ, तो गंध मारने लगता है। ये वो देह है और इसी देह से सुगंध निकलती है, यही तत्वों की शुद्धी हुयी। एक तत्व के अभ्यास से– ये पाँचों तत्व विशुद्ध हो जाते हैं। यही सूक्ष्म शरीर है। पृथ्वी गंध, रस, जल, अग्नि, रूप–दर्शन– नाना प्रकार के देवी–देवता, सिद्धपुरूष, रामकृष्ण परमहंस, विवेकानंद स्वामी, रामतीर्थ आदि–आदि सभी आते हैं, दर्शन दे जाते हैं। वायु–स्पर्श हो जाता है, दूर से, आपका कोई आता है, आपको याद करता है, तो बराबर उसको स्पर्श हो जाता है, स्पर्श हुआ और उसका काम हो जाता है, यही तो Telepathy है। आकाश–शब्द– ऐसा करना है, तुम ऐसा करो– माने Intuition, उसका Intuitive power बढ़ जाता है, तभी ये पंचतत्व शुद्ध हो जाते हैं अन्यथा नहीं। तो एक तत्व के अभ्यास से निरोध होता है। यही सूक्ष्म शरीर है, इस देह में आत्मा अत्यंत निर्मल है, कल्याण का अर्थ होता है, मलरहित। निर्मल को English में Benign कहते हैं, अभी तो सब Malign है, ये देह है ये Malign है। तब आप Benign हुए, तब आप असंग हुए, असंग माने आत्मा। इस प्रकार अपनी मन, बुद्धि को आत्मस्थ कर देना। सभी काम करते हुए भी सभी काम को बाजू कर देना और 15–20 मिनट के लिए बैठ जाना, 10 मिनट, 5 मिनट, 2 मिनट बैठ जाना चाहिए। अपनी आत्मा का अनुसंधान करना चाहिए। **''स्वस्वरूपानुसंधानं हेचि भक्ति, हेचि ज्ञान।''** भक्ति माने..............., असंग................, वह भाुद्ध हुआ। जब मन शुद्ध हुआ तो कटौती में गंगा। फिर वह न कहीं जाता है और न कहीं आता है। अपने घर में मस्त रहता है। दो प्रकार के ब्रम्हवेत्ता होते हैं, एक आत्मरति और एक आत्मक्रीड। आत्मरति माने अपना पेट भरना और राम–राम कहना। वह किसी को देता नहीं क्योंकि उसके पास कोई सामर्थ्य नहीं, देने के लिए और आत्मक्रीड Captain होता है, वह Team बनाकर चलता है।

ब्रम्ह–वेत्ताओं में वरिष्ठ कौन है? वह जो आत्मक्रीड है। वह Team बनाकर चलता है, अपने जैसे बनाता है। ये दो प्रकार के ब्रम्हवेत्ता होते हैं, एक **ब्रम्हविद्**– चौथे केन्द्र से ही

शुरू हो जाता है, यह सब। **(1) ब्रम्हविदवर**— जो मृत्युकेन्द्र तक पहुँचते हैं।**(2) ब्रम्हविदवरीयान**— जो मृत्युकेन्द्र को लांघकर ऊपर आते हैं।**(3)** जो ऊपर चला सीधे सहस्त्रार में पहुँचा, वह मुक्त हो गया; तो **आत्मक्रीड सबसे वरिष्ठ माना गया है।**

इससे बढ़कर ब्रम्हवेत्ता और कोई भी नहीं है, दुनिया में। ये जो बोल रहा हूँ। यह आधार है, अनुभव है, नही तो यह शरीर अत्यंत मलिन है, यही शरीर स्वर्णमय है, इसी से सुगंधि आती है, जीभ में रसानुभूति होती है, कभी घी, दूध, मधु — नाना प्रकार की रसानुभूति होती है, नाना प्रकार के देवी—देवता दर्शन देंगे। आपको आर्शीवाद दे जाते हैं। आपको वरदान दे जाते हैं। आपको भक्ति, सूझ—बूझ दे जाते हैं। कोई व्यक्ति कहीं कोने में हो, आपका स्पर्श हो जाता है, आपका नाम लेता है, तो उसका आपको स्पर्श हो जाता है।

**देहो देवालयम् प्रोक्तो**— ये देह देवालय है, देही है माने आत्मा है यह निरंजन है, यह नहीं दिखता, लेकिन है। वही सब काम करता है। **कर्त्तुम् अकर्त्तुम् स भा.............** वो सर्वत्र, सर्व शक्तिमान है, सर्वज्ञ है,। अगर ऐसा न होता **तो Paul Brunton का कहना है कि— If the Universe had not been formed of a Divine Essence, none of the creation within it could hope or truly trust to come into the Divine State.** यदि उस दिव्य शक्ति, State से, उस Divine का अस्तित्व न होता तो कोई भी कभी उस दिव्यत्व को नहीं प्राप्त करता। दिव्य स्थिति को कभी प्राप्त नहीं होता। इसीलिए इस जग को **विराट ब्रह्म** कहा गया है, और विराट ब्रह्म की हम सेवा करते हैं, हमारे सिद्धांत में उसे **विराट** कहा है। **राट माने राज— राज माने महान,** ऊपर से यह समझ में नहीं आती है। गुरूमुख बिना होता नहीं **Without a true Guru, None has found God.** जब तक यह सतपुरूष मिलता नहीं, उस परमात्मा को कोई भी प्राप्त न कर सका, कोई भी साक्षात्कार न कर सका। यह है गुरूजी की महिमा।

**अर्चिता सर्वभावेन......... स्वविराजते।** किसकी अर्चना करना? अरे! अपने में ही Surrender होना है, यदि आप अपने में Surrender नहीं हैं तो आप किसी भी काम को नहीं कर सकते। आप यहाँ कार्य करती हैं (मेडम डा. आचार्य से), अगर आप अपने आप में Surrender न हों, अगर एकाग्र न हो तो कोई कार्य आप कर सकते हैं? सब कार्य अपने आप बराबर चलता जाता है।, हम इसको Surrender कहते हैं। अपने आप में जब एकाग्र होते हैं, एकतानता होती है, एकाग्रता होती है, एक ही कार्य करना अपने आप को, वह एक प्रकार की शक्ति है, एक प्रकार से वह Method of work है, जब आप उस Method of work में लीन हो जाते हैं, तो जो आपको कार्य करना है, जो लक्ष्य है कि ऐसा हो जाना

चाहिए; आपने सीखा, समझा और कर रहे हैं, ऐसा कार्य हो जायेगा, इसीलिए उस कार्य का आप अदब करते हैं, आप प्रारंभ करते हैं, और आपका कार्य सिद्ध हो जाता है, इससे बढ़कर कोई दूसरा Example नहीं।

**जो लोग कहते हैं मेरा मन एकाग्र नहीं होता, मुझे हँसी आती है; इसीलिए उनको हम कहते हैं, जिसमें आपका एकाग्र होता हो, वह करो, जिसमें मन हो, वह करो, हमें तंग न करो, बस ! आनंद हो, जिसमें तुम्हें अच्छा लगे, वह करो। मैं चर्चा नहीं करता, मैं लेक्चरबाजी नहीं करता, मैं कीर्तनकार नहीं हूँ, मैं कथाकार नहीं हूँ, जो कुछ कहता हूँ, मैं सत्य कहता हूँ, और वही मैं बोलता हूँ और जो मुझे मालूम है, वही हम समझाते हैं, जो हम समझे और शास्त्र का आधार है, वही हम सिखाते हैं सबको। और यह करना पड़ता है। करनी जो भरनी................ ।**

आप जो करेंगे, वही आप को मिलेगा। आप नहीं करेंगे, आपको कुछ नहीं मिलेगा। स्वर्ग में सभी प्रकार के प्राणी जाते हैं, खाली एक प्राणी नहीं जाता, कौन नहीं जाता? आलसी नहीं जाता, क्योंकि आलसी कुछ नहीं करता।

**अलसस्य कुतो विद्या, अविद्यस्य कुतो धनम्।** आलसी को कुछ होता है ? कहाँ–......कहीं नहीं! **भाग्यम् फलति सर्वत्र्, न च विद्या, न च पौरूषम्।** यह गलत अर्थ लगाते हैं कि पौरूष– ऐसा नहीं है। ऐसा है– **भाग्यम् सर्वत्र न फलति, कश्चिद् विद्या, कश्चिद् पौरूषम्।**

भाग्य का फल तो आपको मिलेगा ही; जो आप सिधौरी बाँधकर लाये हैं। लेकिन जो विद्या आप पढ़े हैं, उससे आप आज लाखों रूपये कमा रहे हैं और आनंद से हैं। प्रतिष्ठा, सम्मान, आदर से समाज में हैं। सरकार भी आपकी सर्विस मानती है, **पौरूषम् – माने आत्म–साक्षात्कार, आत्म–शक्ति, आत्मविद्या– ये सामर्थ्य है, जब प्राप्त हो जाता है।** आप सब समर्थ हैं, सामर्थ्यवान हैं, लेकिन हम अपनी सामर्थ्य को भूल गए हैं, और हम कुछ नहीं करते। क्या जानना है ?**Know Thyself, Know Yourself** अपने आपको जानना है। आपकी जो इन्द्रियाँ हैं, गोलक हैं, वस्तुओं से उनका जो संबंध है, संबंध क्या है, किस प्रकार से है, इन्द्रियों के कार्य कैसे हैं? वे क्यों करती हैं, उनके गोलक कहाँ हैं? वे वश में आ सकती हैं क्या? शरीर शास्त्र भी मालूम होना चाहिए। कितने प्रकार के अवयव हमारे मस्तिष्क में हैं, उनके द्वारा जो बाहर गति आती–जाती है, अवयव Control में आ जाते हैं, उनके Control में आने के बाद, क्या स्थिति होती है, यह अनुभव, अभ्यास की बात है, यह यहाँ बोलने की आवश्यकता नहीं। **"Man can conquer thousands of battles but the greater conquerer is, who conquers himself".** मैं किसी अफलातून को नहीं जानता,

मैं बस इतना ही जानता हूँ कि मनुष्य प्राणी मेरे सामने आता है। मेरे सामने न कोई Sex है, Fax है, Vax है, ये आज से नहीं बचपन से है। बोलते हैं पागल है, आपको पागल बनना है। काम के लिए कैसे पागल हैं आप? **पाग का अर्थ होता है रंग, रंगना उसमें।** जलेबी बनाते हैं, यदि शक्कर के रस में, पाग में, ये उसे न डुबाएं तो मजा आता है उसे खाने में? नहीं। जब तक आप पागल नहीं होंगे किसी काम के लिए, तब तक आप उसके अधिकारी कभी नहीं हो सकते। सब **कर्मण्येवाधिकारस्ते मा फलेषु कदाचन्..........**। आप जो कार्य करते हैं, वह किसी मांग के लिए नहीं करते हैं। तब कर्मण्ये– तब कर्म सफल हो जाते है, माँ फलेषु माने उसकी कोई इच्छा ही नहीं, फल की। कदाचन माने कभी भी नहीं, क्योंकि बिना माँगे सब काम होता है, सब काम बनता है। मैं अपना उदाहरण देता हूँ– बीस साल मैंने दवाखाना चलाया, 12–12 आदमी हमारे घर में भोजन करते थे, लेकिन कभी मांगा नहीं, कभी बिल नहीं बनाया। है हिम्मत किसी की– तेल्हारा में जाकर पूछो, तो आज भी तेल्हारा के लोग पर्व में आते हैं, रोते हैं, सब मिलकर। फिर यहाँ– **अयम् निजः परोवेत्ति गणना लघुचेतसाम्.........., उदार चरितानाम् तु वसुधैव कुटुम्बकम्। ..............।**

यह सभी सुभाषित हैं और सही बात है, सारा विश्व कुटुम्ब है मेरा, जब यह सब मेरा कुदुम्ब है तो मुझे माँगने और जमा करने की जरूरत ही क्या है? इसीलिए हमेशा मैं कहता हूँ कि मैं जहाँ जाता हूँ Family का एक मेम्बर बन जाता हूँ, Family जैसा चाहे हमें रखें, हमारा कुछ कहना नहीं। वो जैसा चाहे, जैसा जिस समय उसके पास है, जैसा चाहे वह भोजन करे, कराये, स्नान कराये, न कराये, खिलाये, पूछे, बोले, चाहे न बोले, न चाले– Family का Member माने Member, जब हम family के हो गए तो हम तो साथी हैं आपके। यह मेरी वृत्ति है।

और कुछ लोग कहते हैं मुझे वहाँ से कोई Benefit नहीं हुआ, उसने हमें राम नाम दे दिया लेकिन हमें कोई Benefit नहीं हुआ। आध्यात्मिक से कोई Benifit नहीं मिला। तो मैं बोला– यह तो सौदे–बाजी है, ये तो अपने आपको जानना है, इन्द्रियों की सीमा कहाँ तक है, आपको इन्द्रियों की सीमा को लाँघना है, लाँघने के बाद, वहाँ आत्मा का प्रवेश है, आत्मा को लाँघना नहीं पड़ता।

किसान खेती किया, बाँध बनाया, बाँध में पानी भरा है लेकिन सिर पर हाथ रखकर बैठा है, कि मेरा अन्न सूखा जा रहा है। तभी एक बूढ़ा आया, बोला भाई! ये बाँध है, तो इसमें छेद करो, कुदाली लो और इसमें छेद करो। कुदाली लो और रास्ता बनाओ, आपको खाली रास्ता बनाना है। जैसे पानी का Level बना, वह दौड़ा और खेत में भर गया, पानी को लाना नहीं पड़ता, पानी अपने आप दौड़कर फैल जाता है सारे खेत में। इसी प्रकार आपके शरीर

(क्षेत्र) में, क्षेत्रज्ञ है आत्मा और आपका Crop  हरा–भरा हो जाता है और चारों ओर आनंद ही आनंद आने लग जाता है। **और जो Benefit लेकर आता है वह समझता नहीं और उसको कभी भी वह नहीं मिलेगा, कभी नहीं मिलता, ये सौदेबाजी से कुछ नहीं होता। जनम–जनम मुनि जतन कराहिं, अन्त राम कहिं आवत नाहि। ये बात भूलना नहीं चाहिए।** तब आपका शरीर शुद्ध हुआ। जब शुद्ध हुआ, तो शुद्ध शरीर आपको प्राप्त हो जायेगा, तब आनंद ही आनंद है। यह देह देवालय है– ऐसा कहा गया है क्योंकि इस देह में वह जो आत्मा है, जिसे निरंजन कहा गया, क्षेत्रज्ञ है।

इस प्रकार इन्द्रियाँ जो कर्मरत हैं, आप वासना, इच्छा कामनाओं से, मैं और मेरा में फँसे हैं।यह कुछ नहीं रह जाता है, यह सब तेरा है। वह पानी शरीर में आ गया तो यह क्षेत्र (शरीर) लहलहा उठता है, धान आपका लहलहा उठा, Crop आपका बन गया। आप Crop को reap कर लिये। **God visits you everyday, but you are not present at home.** अब किसकी fault है ये? आप दोषारोपण लोगों पर करते हैं, अपना दोष देखो, दूसरों का दोष क्यों देखते हो? हम कुछ करते नहीं और सब कुछ पाना चाहते हैं। **पैर गोड़ न भीजे;**................ मेहनत करने वाले और हैं और खाने वाले और हैं। माने Parasite.................. । परजीवी– कमाओ तुम और खायें हम। आज जो संस्कृति है, मैं धर्म नहीं बोलता। हमारी संस्कृति रसातल में पहुँचा दी गई, हमारी संस्कृति का स्वरूप बदल दिया, ये मन्दिर, मस्जिद वालों ने। सब बदल दी है। संस्कृति माने आप जानते हैं? संस्कृति माने सम्यक रूप से, पूर्णरूप से, कृति माने कृति– आप जो काम किये, यह कृति है, यह संस्कृति है, जब आपकी कृति बराबर है, Pure, Sure है, तो आपके सामने यह परिणाम आ गया। आज हम अपनी संस्कृति को रसातल में ले गए हैं।

ये धर्म–वर्म मैं नहीं जानता। हमें मालूम है, धर्म की उत्पत्ति कैसे होती है ?Etiology मुझे मालूम है। ये ही हम लोगों से पूछते हैं तो लोग नाराज हो जाते हैं। तो तात्पर्य यह है कि पहले मैंने सब किया है तब बोलता हूँ, मेरी किताब उठाइए, पढ़िये उसको एक–एक शब्द समझ लीजिए, समझकर मुझसे बात करना। जो चीज आप समझते नहीं, उस पर Discuss करने की कोई आवश्यकता नहीं, आपका अधिकार ही नहीं। विद्यार्थी जब स्कूल में जाता है, नाम लिखवाता है तो Headmaster से discuss नहीं करता। उसके माँ–बाप उसका नाम लिखवा देते हैं; और बाप उसे सौंप देता है और कहता है कि आप पालक हैं आज से। मैं माँ–बाप हूँ, यहाँ तक ला दिया है, अब उसका उत्तरदायित्व आप पर है, अगर ये सही है, तो ये भी सही है।

**गुरू क्या करता है, आत्मा के हवाले कर देता है। जब आत्मा के हवाले कर दिया तो पूर्ण हो गया। ऊँ पूर्णमदः पूणमिदं पूर्णात् पूर्णमुदच्यते................। ऊँ द्यौः शांतिः.............ऊँ शांतिः शांतिः शांतिः।**

जिसको ब्रह्म बोलते हैं, मैं ब्रह्म हूँ बोलने से नहीं होता बाबा। अगर शांति न मिले

तो दो–चार शांति को और ले आओ, शादी करके। बड़ी शांति मिलेगी फिर। एक नाक खींचेगी, एक कान खींचेगी और एक पूँछ खींचेगी, बड़ा मजा आता है, दो–चार शांति को घर पर ले आओ। बड़ी शांति मिल जाएगी। इस प्रकार शांति भी शांति को प्राप्त हो जायेगी।

राम कहते हैं, रा एक धातु है। शांति एक अवस्था है। जब इस अवस्था को प्राप्त होंगे तब शांति अपने आप में रहकर **'आत्मस्थ कुरू कर्माणि'**– तब आप आत्मस्थ होकर कर्म करेंगे तब सफलता हुयी सब जगह। **So I wish you a very long-long happy & prosperous life. Why we worry about life, why we think about future, why we think for future? Future is not born, yesterday is dead, why to wait for future, present is to be-** भविष्य की चिंता हम क्यों करें ?आज हमें क्या करना है ?जब सुमिरत दिव्य दृष्टि हिय होती – त माने भविष्यत, सुमिर यह प्रत्यय है, **सुमिर**– माने स्मरण करते ही सामने आ जाना चाहिये। आपको क्यों नहीं आता, आप स्मरण करते हो, क्यों नही सामने आता है ?क्यों बातचीत नहीं होती, क्यों Intuition नहीं होता? क्यों आपका Prediction गलत होता है, क्यों ?**अस्मिता**– आप कुछ नहीं जानते, लेकिन कहते हैं, मैं सब कुछ जानता हूँ– ये अपना है, ये पराया है। आपको मृत्यु का भय बना हुआ है– यह **क्लेश** है। हम क्लेश से युक्त हैं और क्लेश में सने हुए हैं, मरे जा रहे हैं। कहते हैं आत्मा में परमात्मा है, परमात्मा का नाम लेकर दुनिया में उल्टे–पुल्टे धंधे करते हैं।

**निर्वाण चित्तानि अस्मिता मात्रा..........**इससे आपके अनेक चित्त हैं, अनेक देवी–देवता हैं, किसी पर भरोसा नहीं है, यहाँ स्वंय पर भरोसा चाहिये। **Surrender-Sur माने अधिक से अधिक। Render माने बँध, माने कहीं आना–जाना नहीं, एक ठिकाना।**

आपको स्थायी होना है; Self पर होना है। अपने भीतर, जो गुरूजी ने आपको बताया है, आपको दीक्षा दिया है, वह अपने भीतर, उसमें बने रहना, उसमें बने रहने से, ये बराबर जो दिव्य दृष्टि है– **सुमिरत दिव्य दृष्टि हिय होती** – त प्रत्यय, माने यदि आप करेंगे भविष्य में, यदि आप रत हैं, माने आप लगे हुये हैं तो भविष्य कभी नहीं आता– **tomorrow never comes.** अगर कथन बराबर है, तो जो मैं यह जो कह रहा हूँ यह बराबर है। 3 किलो रोज खाते हो, बोलते हो कि खाऐंगे नहीं, तो बीमार पड़ जायेंगे। नियम, संयम से रहना पड़ता है, तब सब काम होता है। तो तात्पर्य है कहने का– **शम माने शांति** । तब कर्मण्येवाधि.............. तब आप अन्दर जायेंगे और अधिकारी होते हैं और जो आप कार्य करते हैं उसका डर नहीं होगा– बनेगा कि नहीं बनेगा, बनेगा कि नहीं बनेगा........... ये सब चला जाता है। **कदाचन्**– कभी भी चिन्ता नहीं होती और आपका कार्य, आपका फल अपने आप हो जाता है। 2 घंटे लगें, 3 घंटे लगें, वह बराबर प्राप्त हो जाता है। सब प्रसन्न हो जाते हैं। अरे! मैं कार्य करता हूँ... मैं यह जानता हूँ और कुछ नहीं जानता। ये सब लेन–देन बौद्धिक है, ले न लें, दें न दें, लेकिन जो वेदांत है, जो सत्य है, **सत्यम ब्रह्म जगत मिथ्या**– ये आना–जाना जो है, यह शरीर का आना–जाना है। जब तक यह शरीर आपके हाथ में,

वर्तमान है, तब तक कर लो, जो करना है। **देहो देवालय प्रोक्तो, अर्चिता सर्वभावेन....... ....... विराजते।**

**यह स्व के अनुभव से होता है। स्व की अनुभूति– स्वयं मरो, तब स्वर्ग मिलता है। ये जो मेरे पास आते हैं न, मैं पैर पड़ता हूँ, हाथ जोड़ता हूँ, दण्डवत डालता हूँ। मुझे बचाओ बाबा, अपने घर में रहो, जाओ। जाओ घर में। मैं नालायक हूँ, बुद्धू हूँ, मैं पढ़ा–लिखा तो हूँ नहीं, हमें कुछ आता नहीं, अगर आता होता तो मैं यह चर्चा नहीं करता। मैं खुद उसकी शरण लिया हूँ, उसकी शरण में पड़ा हूँ। मैं आत्मा की शरण लिया हूँ और मैं कुछ नहीं जानता। परमात्मा हम देखे हैं कि नहीं लेकिन मैं परमात्मा के भरोसे जिन्दा हूँ। और जो कुछ कार्य हो रहा है, लोग मुझसे करवा ले रहे हैं, मैं किसी का कार्य करता नहीं और लोग मुझसे अपना कार्य करवा लेते हैं। गुरूगोविन्द सिंह का कहना– मैं आपण बोल न जाणना, जो सब कहा, हुकुमा.......... सब कुछ करवा लिया। सब कोई अपना–अपना काम करवा लेते हैं। मैं तो बुद्धू आदमी, निकम्मा आदमी हूँ। कुछ भी जानता नहीं, कुछ भी नहीं समझता और कुछ भी नहीं करता। हम तो परजीवी आदमी हैं, सबको दुख देता हूँ और सब को दुख देते हुए जा रहा हूँ। क्या मालूम, क्या है, क्या नहीं, हमको कुछ पता नहीं। कहा गया– आप लोग कहवा दिये। मेरी बात कुछ नहीं, ये सब पुराना है,– मुझे क्षमा करेंगे, ऊँ शांतिः ................ऊँ शांतिः................. ऊँ शांतिः ।**

जब लोगों से ''विनम्र'' होने के लिए कहा जाता है तो वे तुरन्त'' लोगों के सामने नम्र'' होने की बात सोच लेते हैं, यह नम्रता गलत है। सच्ची नम्रता भगवान् के प्रति नम्रता है। यानी, एक यथार्थ, ठीक–ठीक, जीता–जागता भाव कि हम भगवान् के बिना कुछ भी नहीं हैं, कुछ भी नहीं कर सकते और कुछ भी नहीं समझ सकते, कि अगर हम बहुत ही अधिक तथा विरल रूप में बुद्धिमान् हैं, फिर भी यह भागवत चेतना के सामने कुछ भी नहीं है। और यह भाव हमेशा बना रहना चाहिये क्योंकि तब ग्रहणशीलता का सच्चा भाव हमेशा बना रह सकता है– एक ऐसी विनम्र ग्रहणशीलता का जो भगवान् के सामने व्यक्तिगत आत्म–प्रदर्शन नहीं करती।

## (ब) श्री गुरूजी से एक शिष्य का वार्तालाप (रायपुर)

**गुरूजीः**— यदि यह Universe, उस Divine Essence से पैदा न हुआ होता, तो आज जिसको हम कह रहे हैं कि फायदा नहीं है, तो उस Divine State में आज तक कोई न पहुँच पाता। वह है, इसीलिए उसकी खोज होती है। न जायें खोजने को, लेकिन उसे खोजने की इच्छा होती है। लेकिन है या नहीं, यह प्रश्न उठता है।

**एक शिष्यः**— हमारे सामने चुने—गिने लोग हैं, जिन्होंने उसे पाया है और जो पूर्ण प्रमाणिकता से दावा करते हैं, कि हाँ हमने उसे पाया है। चूँकि ऐसे उदाहरण, ऐसे लोग और ऐसे ज्वलंत प्रमाण नही मिल पाते हैं तो बार—बार रह—रहकर यह प्रश्न उठता ही रहता है और अंत होने का नाम नहीं लेता। और कभी—कभी यह बात भी आती है कि हम जब कह रहे हैं कि वह है, तो कहीं हम अपने आप को तो ही आरोपित नहीं कर रहें हैं, किसी शून्य पर। हम चूँकि कुछ हैं इसीलिए हम उसे शून्य में जोड़ करके उसे अस्तित्व दिये जा रहे हैं जो कि अस्तित्वहीन है।

**गुरूजीः**— नहीं, अस्तित्व है। अस्तित्वहीन है ऐसा नहीं है। अस्ति है। अस्तित्व माने **यत् दृष्टम तत् नष्टम्**। जो दिखता है, जो चीज दिखायी देती है, उसे आज की भाषा में अस्तित्व में रहना कहते हैं। उसका रूप हो जाता है, आकृति  हो जाती है। जो रूप और आकृति में आ जाती है वह सदा परिवर्तनशील है। लेकिन जो आकृति आती है जो मैंने कहा है उस Divine Essence से सब आये हैं। उसी दिव्य शक्ति से, उस दिव्यत्व से सब कुछ प्राप्त हुआ है। सब उस सत्ता से प्रकट हुए हैं, जन्म नहीं हुआ है। है अस्तित्व है, शून्य तो हम नहीं कहते; यह तो बौद्धमत है। शून्य हम नहीं कहते हैं; जब उनको (महात्मा बुद्ध से) पूछा गया कि अस्ति है; तो वे मौन हो गये। माने इसके पीछे कोई है, तो वे मौन हो गये। और जो मैं पढ़ा हूँ कि जिसको वे लोग शून्य कहते हैं वह है प्रत्याहार। अभ्यास करने पर **'बाह्य संवेदना' शून्यत्व**— बाह्य संवेदना चली जाती है। शून्य हो जाता है, शरीर भी नहीं रह जाता जब शरीर का ही बोध नहीं है तो बाहर के विषयों कर ज्ञान रहेगा ही नहीं। विषयों से, इन्द्रियों से संपर्क शिथिल हो जाते हैं। और यह शिथिलता, शरीर की, अपने को भान नहीं रह जाती। तब इस स्थिति को प्रत्याहार कहा जाता है। माने यहाँ से शुरूआत होती है, अन्यथा नहीं। जब तक यह स्थिति नहीं हो जाती है, आपके अभ्यास द्वारा होता है। क्यों सोचने से होता है, सोचना माने उसका पर्याय शब्द ध्यान है, उसका पर्याय शब्द है खोजना। यह मानसिक है न कि शारीरिक है। यह बौद्धिक है। मन को हम कार्य देते हैं कि उसको करो, उसको ढूँढ़ो। यह कैसा है! कैसा नहीं है? ऐसा करते—करते वह विलय हो जाता है। क्या विलय हो जाता है— विषयों का इन्द्रियों से संपर्क छूट जाता है। शरीर विषयाधीन, इन्द्रियाधीन है लेकिन विषयों से इसका संपर्क छूट जाता है, कुछ काल के लिए। यहाँ तक

कि शरीर की संवेदनाएँ समाप्त हो जाती हैं। यहाँ तक कि श्वास–प्रश्वास क्रिया भी बन्द हो जाती है। ये श्वास–प्रश्वास की क्रिया का बन्द हो जाना, इन्द्रियों का शिथिल होना, विषयों से उसका सम्पर्क छूट जाना, टूट जाना– **इस स्थिति को हमने प्रत्याहार कहा**। लेकिन फिर भी दिल्ली का दरवाजा अभी बहुत दूर है। तब कहीं **धारणा** जिसे कहते हैं, जैसे आप भोपाल से चले, यहाँ आना है, तिथि निश्चित हुई, गाड़ी तय हुयी, समय निश्चित हुआ, तब आपने सूचना दी, जब कार्य बन गया, तैयार हो गया और हम आ रहे हैं, हमें Receive करें।

तो इस प्रकार से इसका नाम है **धारणा**। केवल Planning करते हुए, कल्पना करने से कुछ नहीं होता, ये संकल्प होना चाहिए। **माने जो सुना है, जो देखा भी है, और जो किया गया है, इन तीनों के सम्मिलित रूप को हम सत्य कहते हैं।** ये व्यवहारिक विषय कह रहा हूँ। देखा, सुना और किया गया– **इन तीनों के सम्मिलित रूप को सत्य कहते हैं।** ये व्यवहार है। और उस जगत में जाना हो तो ये तीनों समाप्त हो जाते हैं, Time & Space से परे वह है। उसका कोई रूप नहीं, कोई रंग नहीं है, वह महान है, वह एक महाशक्ति है, अगर वह महाशक्ति नहीं होती तो आज हम सब, किसी का अस्तित्व न रहता। जो आयु मिली, जिस आयु के अन्तर्गत शरीर का अस्तित्व है और ये भोग है, भोग है जब तक आयु है, अनंत जन्म हमारे हो चुके हैं। Scientist लोग भी आज मानते हैं। **ये शरीर जो है, जो हमारा मूल शरीर है यह यहाँ से transmit होता है, यह नष्ट नहीं होता है, form यही होता है लेकिन इससे निकल जाता है तो कैसे निकलता है, यह अभी तक कोई नहीं जानता है; कैसे प्रवेश होता है, ये भी नहीं जानते हैं। हमारा मूल शरीर है जो अनादि है, जो पुरूष है, पुरूष माने पौरूष एक महाशक्ति कहते हैं, एक महाशक्ति के साथ यह जुड़ा हुआ है, इन दोनों का ऐसा है– प्रकृति च................ पौरूषम् च.................। इन दोनों का निकटतम संबंध है और scientists ने भी यह माना है, इसीलिए यह अनादि है। जिसका आदि ही नहीं है,उसका कैसे पता चले**?

**शिष्यः**– ऐसी कड़ी, जो शक्ति है जो परा है; उससे वह संभवतः प्रतीति है हमारी। एक Strong feeling हो सकती है हमारी। क्योंकि देखना, सुनना, कहना, इस जगत का है। एक बड़ी Strong feeling एक Inward accession तो होता है, कम से कम।

**गुरूजीः– अपना तो स्वयंभू आ गया है, यही तो self है**। मेरा तात्पर्य, मैं संकेत किया था, तो वह पहले से है, अभी भी है, आगे भी वही रहेगा। वह सबका आधार है, जिसका नाम है सत्। वही सत्ता है, नाम कुछ भी लें चाहे Scientist, वैज्ञानिक बोलें, अवैज्ञानिक बोल दें,

सारी दुनिया, सारे सम्प्रदाय, नाम कुछ भी लें; वह एक ही सत्ता है। सर्व जगत में विद्यमान है, सब जगह वही है। तो हम उनको नाम दिये, हम उनको अपने form दिये।

कहने के लिये चार भुजा हैं, दस भुजा हैं, हजार भुजा हैं, छः हाथ हैं, तीन सिर हैं, ये तो हमारी है। तो हम उनको form देते है वरना वे formless है। ये जो आप Strong feeling कहते हैं वह, Strong feeling से हमारे सामने Appear होता है और हम उसको अनुभव करते हैं। यही सगुण साकार है, वही निरगुण निराकार है। वह स्वयं सगुण साकार होता है।

**शिष्यः**– फिर भी कुछ ऐसे नियम होने चाहिये जो शाश्वत हों, पारलौकिक हों और सर्वहितकारी हों। फिर इसमें कभी–कभी ऐसा लगने लगता है कि जो विशुद्ध आध्यात्मिक चिंतन है हमारा, वही बताता है कि जो आध्यात्मिक शक्ति है उससे कोई भौतिक लाभ की कामना नहीं करना चाहिये, कल्पना नहीं करना चाहिए, अगर हम अध्यात्म को और भौतिकतावाद को इस तरह से Dissect (पृथक) कर देंगे तो उससे कठिनाईयाँ खड़ी होगीं। तो ऐसे नियमों की कल्पना नहीं कर पायेंगे, जो सर्वहितकारी हों। तो वे कौन से सिद्धांत हो सकते हैं?

**गुरूजीः**– इस कथन से हम विपरीत हैं। कैसे विपरीत हैं? हमारा जो कार्य है, जो हम कर रहे हैं, हमारे सभी लोग गृहस्थ हैं, मैं स्वयं गृहस्थ हूँ, और सभी लोग गृहस्थ हैं, और इस साधना के द्वारा, ये सब हंसवृत्ति में, परमहंस वृत्ति में हैं, और अच्छे हैं, अनुभव है, अनुभूतियाँ हैं, सब मजे में हैं और सब अपने कार्य में, क्रियाकलाप में निमग्न हैं, हाँ, वह स्थिति होती है जब आप बढ़ते–बढ़ते उस स्थिति में पहुँच जायेंगे, तो उस काल में, State में आप पहुँच जायेंगे, तो आपके चरित्र में भी परिवर्तन होता चला जाता है और वह चरित्र, सतचरित्र होता है, और उस सतचरित्र से जगत का कल्याण, उनके द्वारा होता है। नहीं तो यह बड़े–बड़े दिव्य लोग, संत लोग आये हैं, ये किसलिए आये हैं, ये लोगों को जोड़ने के लिए आये हैं।

ये लोग जो कहते हैं– **ये लोग एकांगी हैं, ये Partial है।** ये कहते हैं कि यह जगत खोटा है, यह जगत खोटा नहीं है, ये झूठा नहीं है, यह है। ये सृष्टि का तत्व, शरीर है; आपको मैं जवाब दे रहा हूँ। एक है शंकराचार्य का कहना, यह **सब मृषा है मृगमरीचिका है** तो उनको कहता हूँ, मैं साँप पकड़कर लाता हूँ, उसमें अंगुली डाल। वह नहीं डालेगा। अग्नि लाता हूँ उसमें हाथ डालो। क्यों नहीं डालते भाई! जब यह सब झूठा है, मृषा है, मृगमरीचिका है, तो आप डरते क्यों हों?ये सब Partial है, एकांगी है, एकांगी न होता तो शंकराचार्य उस राजा के शरीर में घुस कर के, भारती को रति के संबंध में जवाब नहीं देते।

जो यह– अद्वैत, द्वैत, द्वैताद्वैत, शुद्धाद्वैत, विशिष्टाद्वैत, और शास्त्रीय। ये छः प्रकार के मोक्ष हैं। ये तीनों है, हमें सब कुछ चाहिए। सब प्रकार की मुक्ति है। मुक्ति माने बंधन से मुक्त, जिसे भय कहते हैं; जन्म–मरण का जो भय होता है।

**शिष्यः**– एक कारण और लगता है कि हम आध्यात्मिक कारणों को भौतिक उपलब्धियों से नहीं जोड़ सकते हैं, कि यदि आध्यात्म हमारे भौतिक समृद्धि का कारण बनता है, तो भौतिक सुख है, जो सुविधाएँ हैं, वह हमको जोड़ता है, बाँधता है, कर्म बंधन उत्पन्न करता है, कड़ियाँ नई–नई खड़ा करता है, और वह एक अंतहीन दिशा की ओर ले जाता है, जहाँ से लौटना शायद नामुमकिन है।

**गुरूजीः**– अरे! वहाँ से तो हम आये हैं, तो लौटना जरूरी है। वहाँ से हम आये हैं, उससे हम दूर हो गये हैं, इसीलिए ये चिन्ताएँ बन जाती हैं– है कि नहीं? इसको संशय कहते हैं, इसको दुविधा कहते हैं। ये प्रश्न तो उठना ही चाहिये। ये प्रश्न नहीं उठेगा तो खोजने कौन निकलेगा ? हाँ तो क्या?यहीं से तो आरंभ है मनुष्य का। हमें तो सब चाहिये। यह सृष्टि तो अनादि है, यह सिद्ध हो गया है, तो इसको कैसे कह सकते हैं कि यह नहीं हैं। यही द्वैतवाद है, इसे ही शास्त्रीय मुक्ति कहा मैंने। ये तीनों हैं– यह जगत भी है, यह प्रकृति है और हम भी है और वह भी है जिसका यह सब है।

**शिष्यः**– इतना मान लेने के बाद कि सृष्टि है, फिर हमें अपनी भूमिका का ख्याल आता है कि उसमें हमारी क्या भूमिका है ? हमें क्या करने की आवश्यकता है ?

**गुरूजीः**– हम संसार में बार–बार आते हैं, अपने आप को जानने के लिए आते हैं। बार–बार जो जन्म होता है, अपने आप को जानने के लिए होता है। लेकिन हम बाहर ढूँढ़ते हैं, यह हमारे में हैं, इसे जिसने जान लिया, उसने सब कुछ जान लिया। अपने अन्दर ही ढूँढ़ना है, क्योंकि शरीर की रचना ऐसी रची गयी है कि हमारी इन्द्रियाँ बहिर्मुख हैं, अन्दर एक दीवार खड़ी कर दी गयी है। जिसे हम आध्यात्मिक कहते हैं, वह एक शक्ति हैं, उस शक्ति से परिचय नहीं हो पाता। क्यो नहीं हो पाता ? इन्द्रियाँ अंदर से ठेस दी गयीं हैं, इन्द्रियों का मुँह बंद कर दिया गया है, बहिर्मुख कर दिया गया है, और योग में उसका नाम है **सुषुम्ना** और मेडिकल साइंस में– ................Lining of central canal सुषुम्ना उसे कहते हैं जो, रीढ़ के अंदर, spine के अंदर, जो एक central canal है, उसमें एक lining है, उस lining को सुषुम्ना कहते हैं।

**शिष्यः**– वह एक नाड़ी है?

**गुरूजीः**– उसे नाड़ी माना गया है, लेकिन मेडिकल term में जब हम आते हैं, सभी प्रोफेसर हैं, अभ्यास करने के बाद, तमाम इसी शरीर से होता है, इसी शरीर से जाना गया है,

और यह सिद्धांत है। कोई वेद लेकर चला, और कोई द्वैत, अद्वैत, विशिष्टाद्वैत, द्वैताद्वेत ले कर चला। सब को लेकर चलना है। और आज हम हैं। हमारे हिन्दू, मुस्लिम, जैन, बौद्ध, श्वेताम्बर, दिगम्बर, क्रिश्चियन, सनातनी सभी सम्प्रदाय के लोग हमारे पास आये हैं। हमारा इतना ही कहना है कि आप जितना अभ्यास करें, उसे पचाते हुए चलें। भोजन इतना करें कि अजीर्ण न हो। अभ्यास में व्यक्ति पागल हो जाता है, अभ्यास बराबर न हो तो हानि भी हो सकती है। इससे शनैः शनैः अभ्यास करने से, यदि Proper channel मिल जाये, कोई channelize कर दे, सत पुरूष मिल जाये, जिनको अनुभव, अनुभूति है, उसके द्वारा यह अनुभव में आ जाता है। ये है, ऐसा नहीं कि यह नहीं है। **आत्मा स्वयं ज्योर्तिभवति, स्वयं revealing है,** वह सदा प्रकाशित है, सदा प्रकाश में है। Know thyself, know yourself, यही हमारा सिद्धांत है, अपने आप को जानो। हमारे पास किसी की निंदा नहीं, स्तुति नहीं है, कोई छोटा नहीं, कोई बड़ा नहीं, किसी के कर्मों से, उनके गुरूजी से, उनके वाद से, कोई संबंध नहीं है। मैं सत्य की खोज में हूँ। सत्य क्या है ? मैं केवल एक बात की खोज में हूँ Search after truth.

**शिष्यः**— असत्य क्या है?जो होगा?

**गुरूजीः**— हमने Conscious को Blast किया। वह light में आ गया, light में आने के बाद, उसको cross किया तो light के अलावा कुछ नहीं मिला। वही Energy है, वही light है। तो यहाँ तक हम आ गये। ये जो Material side आ गये, तो Materialistic हो गए। हम जो कर रहे हैं, हम conscious को Blast करते हैं, हमारा subconscious mind है, फिर Super conscious mind है। जब हम Super Conscious mind में पहुँच जाते हैं अन्दर, बाहर जो रहस्य चलता है, वह सब खुल जाते हैं, इसीलिए हम शून्य की ओर नहीं जाते। हमारी जो पाशविक वृत्ति है, Subconscious mind, उसको हम Blast करते हैं, उसको शुद्ध करते हैं, फिर conscious में आते हैं, यह भला बुरा, है ये ईश्वर का है, फिर वह Super human being हो जाता है, इस वास्ते हम शून्य भी नहीं कहते। आपका Knowledge बढ़ जाता है, आप देख, सुन, जान एवं समझ सकते हैं, सब कुछ होता है। और **जो कह रहा हूँ, अनुभव के आधार पर है। बिल्कुल सरल, सहज व्यक्ति हूँ मैं। यही कार्य करते हैं हम। हम प्रचार नहीं करते हैं, प्रसार करते हैं, प्रचार के लिए Agents होते हैं, हमारे कोई Agents नहीं हैं, यहाँ सिर्फ अभ्यास करो और पाओ।**

मो0 साहब कहते हैं— **अल्लाह नूर है,** पर्शियन कहते हैं— **ईश्वर अग्नि है,** वेदों में भी इसे **अग्नि** कहा गया। उपनिषद में आते हैं तो **आत्मा स्वयं ज्योति है, माने एकोऽहम् बहुस्यामः।** एक होते हुए भी बहुत है और बहुत होते हुए भी एक है। जैसे ही पुराण काल आया, तो पौराणिक काल में हम बंध गये। पौराणिक काल में यह हमारा देवता है, यह

तुम्हारा देवता है............ नाना रूप, नाना काम............। जैसे–जैसे हम योगशक्ति से, योगमार्ग से विचलित होते गए, च्युत होते गये; वैसे–वैसे ही बाहर के आडम्बर में आ गये। अपने आप में देखना है क्योंकि अपने आप में ही उत्तर मिलता है। Medical Sciecne में Six senses हैं, पंच कर्मेन्द्रियाँ और Intellect है, अभी Intellect हैं आप। अरे! ऐसा–ऐसा होना, ये नहीं होना।

**शिष्यः**– There is something beyond these senses?

**गुरूजीः**– ये जो है, यही है हम, यही आप हैं, आप हैं, आप हैं................। ये खोज करने से होता है, यही खोज है कि सत्य क्या है?और कुछ नहीं।

**शिष्यः**– कैसा रहस्य का आवरण है, लिपटा हुआ है, वह अच्छा भी लगने लगता है और कुछ पकड़ में भी नहीं आता।

**गुरूजीः**– (हँसते हुए) पकड़ में आता है और फिर हाथ से निकल जाता है। **आया और चला गया.......। वह आता है, करके चला जाता है, हम तो ज्यों के त्यों हैं, ऐसा समझ के रहें तो आनंद आ जायेगा; और जो भी आता है, वह तो कटने के लिए आता है और हम काटने के लिए तैयार हैं। भाषा ही केवल यदि समझ में आ जाये कि Under that power– तो जो आयेगा, सब कटता चला जायेगा।**

**शिष्यः**– जब हमें जूझने के लिए कहा जायेगा तो कुछ शक्ति तो उसमें व्यय होगी। कहीं हममें यह भाव आ गया कि जो हमें सामना करना है, कर पाएँगे या नहीं..............।

**गुरूजीः**– ये मानव है न! मानव की यह वृत्ति है लेकिन वह जब कदम रख देता है तो पीछे हटता नहीं। जब तक बैठे हैं, तब तक यह विचार आते हैं और जब उसका आरंभ कर लिया तो उसकी समाप्ति है, सम्पन्न होगा वह। ये तो माना गया है कि शुरू तो करो, अपने आप हो जाता है। जब शुरू ही नहीं करेंगे तो सम्पन्न कैसे होगा? Well begun is Half done. ये अच्छा प्रसंग है, इसमें कोई प्रलोभन नही है, कोई वासना नहीं है, कोई हेतु नहीं हैं। यह अच्छा लगता है और यही सत्य है।.......

**इत्यलम्**

सच्ची नम्रता इसमें है कि तुम
यह जानो कि केवल ' परम चेतना', ' परम
संकल्प' का ही अस्तित्व है और' मैं'
का अस्तित्व नहीं है।

(स)

# सत्संग

लोग कहते हैं–भई हमको सत्संग में जाना है।

उनसे पूछो– सत्संग क्या है ?

सत् संगति तो है। लेकिन सत् संगति क्या है ?

सत्संग में जाना तो ठीक है, ये हमारी समझ में नहीं आया।

**'' पोथी पढ़ पढ़ जग मुआ, पंड़ित भया न कोय, ढाई अक्षर प्रेम का पढ़े सो पंड़ित होय''** ऐसा है और ये ढाई अक्षर मैंने बहुत लोगों से पूछा। **'प्रेम'** जो शब्द है, ये ढाई अक्षर है ऐसा मुझसे बहुत लोगों ने कहा। ऐसा मैंने सुना। नहीं समझा। एक तो ये ढाई अक्षर समझ में नहीं आया मेरे, और ये सत्संग, नहीं समझ में हमारे आया। हम सत्संग में जाते हैं, वहाँ सत्संग खूब होता है। ठीक है– बाबा। बहुत वर्षों बाद हमारे भी ख्याल में आई ये बात। मैं अपनी बात कहता हूँ। पढ़ा है, एक दोहा है– **तात स्वर्ग अपवर्ग.......**। अपवर्ग माने मोक्ष होता है। जो सुख होता है–स्वर्गादि सुख, अपवर्गादि सुख। **तात स्वर्ग अपवर्ग सुख धरिय तूल एक संग।** तराजू लो और एक पलड़ा में स्वर्ग और अपवर्ग/ मोक्ष का सुख दूसरे पलड़ा में। **'तुलइ न ताहि सकल मिलि , जो सुख लव सत्संग' ।** लव माने पलक मारते। एक पलक मारने में जो समय लगता है, वो लव निमेष है। पलक मारने में जितना समय लगता है , उतने समय में ये सत का संग अगर हो जाय, एक लव मात्र का सत्संग हो जाये, यानि दर्शन हो जाये तो ये स्वर्ग अपवर्ग जितने हैं, ये सब किसी प्रसंग में नहीं आते। **तुला न ताहि सकल**– यानि एक लव मात्र का सत्संग उसको उठा ही नहीं सकते।

तो भाई लोग पुण्य करते हैं– स्वर्ग जाने के लिये। तपस्या करते हैं मोक्ष पाने के लिये। अपवर्ग माने मोक्ष । आसपास कोई चिंता ही नहीं सभी कुछ है जैसे मोक्ष। सत्संग क्या है ?कुछ समझ में नहीं आता। मैं बहुत से लोगों से पूछता हूँ कि यही सत्संग है ? सत्संग का अर्थ अगर ये है, भई ऐसा लिखा है, संतों की वाणी है तो हमको एक छोटा सा दोहा मिला है ,जो इस प्रकार है–**''सत् मत छोडो सूरिमा, सत् छाड़े पथ जाये, सत् के बाँधे लक्ष्मी, फेरि मिलेगी आये''** जिसमें सतसंग को यहॉ स्पष्ट कहा है कि सत् मत छोडो सूरिमा, सत् छाड़े पथ जाये। सत् माने गाँव में जो प्रतिष्ठा है, और वो सत् अगर आपके पास न हो , तो आपको कोई पूछता नहीं। सत् को अगर आपने छोड़ दिया, तो प्रतिष्ठा गिरी समाज से, घर से। सत् संगति ये बड़े बडे श़ब्द लोग बोलते हैं। उनसे हम पूछते हैं कि भई इसी को सत्संग कहते हैं ? बस किताब पढना, एकादशी करना, या कहीं भी कीर्तन हो रहा है, मंदिर में कुछ हो रहा है यही सत्संग है? यह हमारी समझ में नहीं आया और ऐसा भी दिया है कि तुलइ न ताहि सकल निधि, जो सुख लव सत्संग। तराजू का पलड़ा लो और एक पलक मारते मात्र से जितना अवकाश है, जितना समय लगता है, उतना ही केवल आत्मदर्शन हो जाये, आत्मा

रूपी सत्ता है वो जो सत् है, उसका संग अगर हो जाये, लव निमेष मात्र, ये सब पलड़ा उठ जाते हैं, ऊपर टंग जाते हैं, प्रसंग में नहीं आते। तो सब सोचने की बात है। ये बहुत लोगों से पूछा, हमको किसी ने नहीं बताया। आप लोग ये सोचें इस बात को, क्या बात है ? ये हम करते हैं जो, ये सत्संग है –क्या ? इसके पीछे एक कहानी है। एक धनाढ्य सेठ था। उसकी पत्नी, स्वयं के दो–चार लड़के बहू एवं बाल बच्चे हैं। घर भरा है, हजार पाँच सौ आदमी है, खूब व्यापार चल निकला। एक दिन ऐसा मौका आता है लड़के आगे बढे करोड़पति बन गए, लेकिन लड़के कैसे रहे ? कभी दुःख तो देखा नहीं, तो दुःखी जन का उनको कुछ पता नहीं, उनसे लोग जरा दुःखी होने लग गये। बोले– सेठ जी अच्छे थे। इनके जो बेटे हैं वो तंग करते हैं लोगों को। शिकायत सेठ जी के पास जाने लगी । एक दिन ऐसा मौका आया कि एक आदमी आ जाता है और सेठ जी को नमस्ते, नमस्ते कहता है। सेठ जी ने कहा– हाँ नमस्ते। कौन ?मैं तेरा पुण्य हूँ। सेठ जी ने कहाँ–क्या कहना है तुम्हारा ?उस आदमी ने कहा– अब हमारा कोई काम नहीं, सो हम जाते हैं। सेठ जी बोले– ठीक है भाई, जाईये। इसके बाद परोपकार, फिर दान, फिर शान्ति भी चली जाती है बारी–बारी से। इसके बाद लक्ष्मी जी आती हैं। सेठ जी ने पूछा– लक्ष्मी जी आज आप कैसे आ गईं ? लक्ष्मी जी ने कहाँ– मेरे सहचर दान, पुण्य, शान्ति आदि सब चले गये। इसलिये मुझे भी इजाजत दीजिये। सेठ जी ने भी उन्हें भी जाने के लिये हाँ कह दिया। अब धीरे–धीरे सब सूना सा हो जाता है। लक्ष्मी के जाने के बाद सब वैभव चला जाता है। इधर– उधर उदासी छा जाती है। सब कारोबार उल्टा हो जाता है। जो लोग आकर सर झुकाते थे, वे अब आँख दिखाने लगे। ऐसी विपन्नावस्था में एक जो सत्य है, माने उसका पुत्र, जो उसको पालने में समर्थ है। सत् को पा लेने से उसका उद्धार हो जाता है, मोक्ष हो जाता है, वो सेठ जी के पास आये। सेठ जी पूछते हैं– अब तो हमारे पास कुछ भी नहीं है भाई, सब चला गया। अब जाने वाले आप कौन हैं ?और किसलिये आयें है?़ आगन्तुक ने कहा– मैं सत्य हूँ। मुझे भी अब जाने की आज्ञा दीजिये। सेठ जी बोले– सब गया तो कोई परवाह नहीं, तुम नहीं जा सकते। तुम तो मेरा जीवन हो। तुम्हारे बिना मैं नहीं रह सकता। सेठ जी सत्य को छोड़ने को तैयार नही होते। सत्य वहाँ रहता है। जैसे ही सत्य वहाँ बैठा , वैसे ही जो सब गये थे, सब वापस आ गये। इसलिये **''सत् मत छाँड़ो सूरिमा, सत् छाँड़े पत जाय, सत् के बांधे लक्ष्मी फेर मिलेगी आय''**–अगर दृढ़ रहा सत्य के लिये जीना है, सत्य के लिये मरना है, जब ये व्रत हो जाता है, तब ये कोई आते जाते नहीं। ये सब बंधे–बंधे चले आते हैं, तो **''सत् मत छाँड़ो सूरिमा, सत् छाँड़े पत जाय, सत् के बांधे लक्ष्मी फेर मिलेगी आय''।** इसके बिना आपकी प्रतिष्ठा न घर में है, न बाहर है, कहीं भी नहीं। थोड़ा बहुत जो सत् हमारे पास है, उसी कारण से हम उपकारी हैं। उपकारी माने हम अच्छे माने जाते हैं, जाने जाते हैं। किसी को कोई चीज सौंपने में या धारण करने में या धरोहर रखने में भरोसा लोग करते हैं

और अपने आप वो महान हो जाते हैं।

**''सत् मत छाँड़ो सूरिमा, सत् छाँड़े पत जाय, सत् के बांधे लक्ष्मी फेर मिलेगी आय''।** दु:खी हो जाते हैं तो उस सत्ता को छोड़ देते हैं। सत्य किताब से नहीं, सत्य आचरण है। **धर्मम् चर, सत्यम् वद्**। धर्म माने आचरण। इस सत्य को हम नहीं छोड़ेगें और सत्यम् वद्।

युधिष्ठिर दो शब्द पढ़े, द्रोणाचार्य के पास बारह वर्ष तक रह कर। **धर्मम् चर, सत्यम् वद्** और कुछ नहीं पढ़ा, बाकी सब पंड़ित बन गये। धर्म माने आचरण। इस सत्य को हम नहीं छोड़ेंगे और सत्यम् वद्। सत्य बोलना, पर हम पर कोई आपत्ति– विपत्ति आई नहीं, कभी कोई प्रसंग नहीं आया, समाज में। कुछ लेने–देने का, आने–जाने का, इसलिये हम बोलें क्या ? इसलिये मौन रहे वो। परीक्षा देते समय कुछ बोला नहीं। सब विद्यार्थी अपनी परीक्षा देकर उत्तीर्ण हो गये। युधिष्ठिर मौन हो गये, कुछ नहीं बोले। एक बार हो गया, दो बार हो गया, तब द्रोणाचार्य जी उठे और उन्हें चिढ़कर एक थप्पड़ दे दिया। थप्पड़ खाने के बाद तुरन्त युधिष्ठिर जी का मुंह खुल गया–अब मैं बोल सकता हूँ। मैं मौन रहा क्योकिं धर्मम् चर। मैं आचरण में लाया। लेकिन आचरण में क्या सुख, दु:ख होता है ? ये मुझे मालूम नहीं। याद तो कर लिया। राजकुमार होने से मुझे कोई कष्ट नहीं है किसी प्रकार का। इसलिये हम बोल नहीं सकते कि दु:ख माने क्या ?और सुख माने क्या ?भाई मैंने कोई अनुभव नहीं किया, तो मैं बोलता क्या ?मैंने पढ़ा, जरूर पढ़ा। परीक्षा ली जा रही थी, मुझे परीक्षा देना था। जितना मिला अपने को, उतना ही बोलना था, लेकिन क्या बोलना था ? आचरण में ले आया, लेकिन अनुभव कुछ नहीं है, न सुख न दु:ख। पूछा गया, नहीं बताया तो गुरू जी ने थप्पड़ मारा। तो अब हम कह सकते है कि गुरू जी हमको जो दण्ड दिये, मैं इस दण्ड का पात्र था। सत्य का मैनें अनुकरण नहीं किया, क्योंकि मुझे कोई अनुभव नहीं था। इसलिये हमारे जो प्राचार्य हैं, गुरूदेव हैं, उन्होनें जो मुझे दण्ड दिया, मेरा उसमें कल्याण हैं। पर बीती तो कल्पना मात्र है, केवल आप बीती ही सत्य है। तुकाराम जी ने आप बीती के आधार पर कहा है–

**'' तुका कहे वो ही संत, जो घात सहे अनंत ''**

इसलिये अपने से जो बड़े हैं, माता पिता, जो हमको प्यार करते हैं दुलार करते हैं और कभी दण्ड़ देते हैं, हमारे कल्याण के लिये। इसलिये हमारा कार्य है सत्य बोलना। सत्य कब बोलना ?अनुभव के बाद । मेरे कोई अनुभव नहीं हैं। इस धर्म की कोई अनुभूति नहीं है, धर्म माने धारणा। थप्पड़ मारा। गुस्सा नहीं आया। धारणात् धर्म इत्युच्यते। ये धारणा से ही धर्म शब्द की उत्पत्ति है। धर्म कोई काली, पीली, नीली चिड़िया नहीं है। हमारी जो धारणा है, यानि सत्य को नहीं छोड़ना है, चाहे प्राण निकल जायें।

**''सत् मत छाँड़ो सूरिमा, सत् छाँड़े पत जाय, सत् के बांधे लक्ष्मी फेर मिलेगी आय''**

तात स्वर्ग अपवर्ग सुख, धरहिं तुला इक संग,
तूल न ताहि सकल मिलि , जो सुख लव सतसंग।।

युधिष्ठिर केवल ये दो शब्द सीखे हैं, तीसरा शब्द उन्होंने सीखा ही नहीं । इसलिये युद्ध में भी उनकी बुद्धि स्थिर रही। इसी कारण उनका नाम युधिष्ठिर था। उनके लिये दोनों पक्ष समान थे। वे सत्य बोलते थे। सत्यं वद्.........धर्मम् चर। हमारा काम है सदा सत् का संग। सत् को मत छोड़ो, सत् छोड़े पत जाय, और सत् के बांधे लक्ष्मी फेर मिलेगी आय'' । मैंने ऐसे समझा है सत् को। सत् है आत्मा। वो महाशक्ति है। अभ्यास करते हैं, जैसे– जैसे अभ्यास करके अंदर आप जाते हैं, वैसे–वैसे उसमें जो गुण हैं, वो गुण आपमें आते चले जाते हैं जिसके कारण संसार में धीरे–धीरे आपके सारे काम होते चले जाते हैं और आप का जीवन शान्तिमय व्यतीत होने लगता है और जो कुछ आपको चाहिये वो मिल जाता है। समाज से, देश से, राष्ट्र से, कटुम्ब से, परिवार से, हितजन से, मित्रजन से, सबसे आपका काम बनता चला जाता है और आनन्द मिलता चला जाता है। मैंने सतसंग का ऐसा अर्थ समझा, जो थोड़े में आपके सामने मैंने रखा। वो जो लोग बोलते हैं कि हम सत्संग से आये हैं, हम सत्संग में जा रहे हैं, यह मेरी समझ में नहीं आया। तो मैंने जो समझा, वो आपके सामने रखा। ये है सत्। ये सत्य परमपद है– इसके प्राप्त होने से आप महान व शक्तिमान हो जाते हैं। तो तुम्हें अमर शक्तिमान होना हैं। इस प्रकार से उस सत् वस्तु को मत छोड़ो। बाकी सब कुछ छोड़ो और सत् को पाओ। लेष मात्र, माने पलक मारने मात्र में जो समय लगता है, अगर इतना भी आपको मिल जाये, तो ज्योति दर्शन हो जायेगा और आपका कल्याण हो जायेगा।

वशिष्ठ जी बोले– लव मात्र का सत्संग का दर्शन जिसको हो जाये, तो वह सबसे बढ़कर है और सबसे बड़ा है, सबसे भारी है और सबसे उन्नत है और सबसे उत्तम है।

विश्वामित्र जी कहते हैं कि मैनें सात हजार वर्ष तक तपस्या की हैं, मैंने नये– नये पौधों का निर्माण किया है पुराने हटा दिये, नष्ट कर दिये। देखो नये– नये पौधे बनाये। किन्तु वशिष्ट जी ने कुछ नहीं किया, इनके पास क्या है ? शेषनाग जी ने कहा– अच्छा– अच्छा, आप सात हजार वर्ष तपस्या किये, पौधे बनाये, रचना किये, और वशिष्ठ जी खाली आत्म दर्शन, ज्योति दर्शन किये, अच्छा– अच्छा। निर्णय देने के लिये शेषनाग जी बोले– मैं दुनिया को सम्भाला हूँ। दुनिया मेरे सिर पर विराजमान है, ये जो बोझा है, अगर कोई उतार दे थोड़ा सा, तो निर्णय लेने की मुझमें क्षमता आ जायेगी। मैं सोचकर निर्णय दे दूंगा ठीक है वशिष्ठ जी आपका क्या मत है ? विश्वामित्र जी बोले– हाँ ठीक है। शेषनाग जी ने कहा– विश्वामित्र जी आपके सात हजार वर्ष की तपस्या से यदि पृथ्वी मेरे सर पर से थोड़ी भी उठ़ जाय, खड़ी हो जाये, तब आप वशिष्ठ जी से श्रेष्ठ होंगे और आप ब्रम्हर्षि कहलाने योग्य होंगे।

तब विश्वामित्र जी ने कहा– मेरी सात हजार वर्ष की तपस्या अगर सही है और अगर मेरे पास कोई शक्ति है, तो पृथ्वी उठ जाये। किन्तु पृथ्वी टस से मस नहीं हुई, कई बार उठाने की कोशिश की........। विश्वामित्र जी गुस्से में आ गये, गुस्सावश तो थे ही । शेषनाग जी बोले – विश्वामित्र जी। ये जो गुस्सा, क्रोध तुम्हारे पास है, इसके जाये बिना ये पृथ्वी मेरे सर पर से उठ नहीं सकती और अभी तुम कच्चे हो। तपस्या किये, ठीक है, लेकिन तुम कच्चे हो क्योंकि जो जाना था, वो तो अभी तक गया ही नहीं, तुम्हारे पास है, उसी की वजह से तुम स्वयं ......। तब विश्वामित्र जी लज्जित हो गये। उन्हें अपनी वस्तु स्थिति का एहसास हो गया। उसी तरह शेषनाग जी ने वशिष्ठ जी से कहा– यदि लव मात्र भी ज्योति दर्शन आपको हुआ है तो पृथ्वी मेरे सर पर से उठ जाये, तो देखा कि पृथ्वी तुरन्त उठ गई। तब शेषनाग जी ने विश्वामित्र जी से कहा– निर्णय तो हो गया, मैं तो खाली साक्षी हूँ, मैं निर्णय क्या करूं ? तब दोनों महाशय चल पड़े,।

संतों ने कहा है– **तात स्वर्ग अपवर्ग सुख, धरहिं तुला इक संग।**
**तूल न ताहि सकल मिलि, जो सुख लव सतसंग।।**

यदि लव मात्र के लिये, पलक मारने मात्र के लिये आत्म दर्शन या ज्योति दर्शन हो जाये ....... ...देखिये आज आप लोग उसी ओर जा रहे हैं, उसी ओर चलने के लिये आज हम लोग यहाँ बैठे हैं। इत्यलम्। आज इतना ही पर्याप्त है।

सबका कल्याण हो, सब प्रकार के दुख, आपत्ति, विपत्ति, संकट शान्त हों, सब प्रकार की शान्ति आपको प्राप्त हो, जीवन सफल हो, जीवन यशस्वी हो, जीवन निर्मल हो और आप सतपथ पर अग्रसर हो ऐसा, मेरा स्नेहपूर्ण आशीष है । शांतिः......शांतिः.......शांति। इत्यलम्।

अपने –आपको बड़ा या छोटा, बहुत महत्त्वपूर्ण या एकदम नगण्य न समझो ; क्योंकि हम अपने–आपमें कुछ भी नहीं हैं। हमें भगवान् जो बनाना चाहते हैं, वही बनने के लिए जीना चाहिये।

महान् सत्ताएं हमेशा सबसे अधिक सरल और विनयशील होती है।

## (द) पहले क्रिया बाद में बोलना
## ''आधी केळे मग सांगितले'' (रामदास)

हम सिर्फ बोलना जानते हैं, करना नहीं जानते। उपदेश देना प्रत्येक व्यक्ति जानता है। उपदेश करना, निन्दा करना, आरोप करना, बदनाम करना, दोषारोपण करना, ये सारी बातें प्रत्येक व्यक्ति जानता है। कपड़े में छेद हो जाये तो उंगली ड़ालकर फाड़ देना। धीरे–धीरे जो सद्गुण हैं या गुण कहिये, सद्गुण तो बहुत बड़ी बात है, गुण कहिये, वो आज दोष में बदल गया है, गुण लोप हो गया है, और केवल दोष रह गया है और उसी का बोलबाला है। जो बहुत बोलना जानता है वह बहुत होशियार है। बोलने वाले की छॉछ बिक जाती है, न बोलने वाले का दूध फट जाता है। ठीक है? तुलसीदास जी लिखे हैं...........

**पर उपदेश कुशल बहु तेरे।** बहुजन आपको मिल जायेगें जो सिर्फ उपदेश करने वाले हैं। **जो आचरहि ते नर न घनेरे।।** आचरण में लाने वाले बिरले होते हैं, They are rare। कदाचित् एकाध आपको मिल जायेगा, तो मिल जायेगा, नहीं तो वो भी मिलना कठिन है। आचरण में लाना बहुत कठिन है।

भजन– पूजन कौन नहीं करता, भारत में करीब–करीब सभी करते हैं। भजन –पूजन माने वही उपदेश लोकेषणा मैं बड़ा भजन करने वाला हूँ। ये बड़ा पूजन करने वाला है। बड़े भ्रम में रहता है। मेरे समान कोई दूसरा त्यागी नहीं। मैं बड़ा भक्त हूँ क्योकि मैं किसी के हाथ का खाता नहीं हूँ। किसी को छूता नहीं हूँ। मतलब ये सब दुनिया को दिखाने के लिये है। इसी को लोकेषणा कहा है। मेरा लोगो में मान हो, मैं बड़ा भक्त हूँ, ये सब करते हुये, घर–घर में पूजा, और घर–घर में भजन हो रहा है। लेकिन एक चीज है, वो जाती नहीं। भजन–पूजन और दूसरों को उपदेश देना, आचरण में लाना नहीं, आचरण हीन होने से क्या होता है ?उनकी जो कामनाएँ हैं, इच्छाएँ हैं, वासनाएँ हैं, क्रोध, लोभ, मोह, मान, भय आदि बना रहता है ये तो कम होता नहीं। तो फिर ये पूजन जो है ये बराबर है क्या ? सोचो इसमें क्या बात है ?ये कामनाएँ, इच्छाएँ वासनाएँ, मान, अपमान, सुख, दुःख ये दूर होते तो नहीं है। भय तो दूर होता नहीं हैं, अभाव तो दूर होता ही नहीं है, फिर ये भजन पूजन सही है क्या ?तो वही बात जो कल कहॉ– **धर्मम् चर, सत्यम् वद्।** युधिष्ठिर द्रोणाचार्य जी का शिष्य था। द्रोणाचार्य जी ने कहा–भाई पहले आचरण में आयो फिर बोलो। स्वामी रामदास जी ने भी कहा –**'' आधी केळे मग सांगितले ''** –पहले करो, फिर बाद में बोलो, यह सांकेतिक है। यह विज्ञान सिद्ध है क्योंकि आप विश्लेषण करके औरों को भी सिखा सकते हैं। माने **ऑन लाइन** भी कर सकते हैं, कि ये ऐसा– ऐसा है। आप किसी से एक्सपेरिमेन्ट भी करा सकते हैं लेकिन ये चीज हमारे पास से चली गई, क्यों ?ये हम नहीं जानते कि क्यों गई ?लेकिन प्रत्येक व्यक्ति उपदेश करने में नहीं चूकता है। हर आदमी आरोप प्रत्यारोप

करता है। तू बेवकूफ है, आप ऐसे थे, इसलिये ऐसा हो गया। अरे पहले से क्यों नहीं बतलाये भाई ?बेवकूफ शब्द सब कहते हैं, मगर बेवकूफ का अर्थ क्या होता है, यह कोई जानता नहीं, इसलिये तुम्हारे पास वो चला गया। बेवकूफ माने कि जानकारी नहीं है, तो तुम करोगे तो नुकसान होगा ही, काम कभी भी बनने का नहीं, वह काम आपसे बन नहीं सकता। बेवकूफ शब्द हर कोई बोल देता है, लेकिन भाई, हम बेवकूफ कैसे हो गये, यह कोई हमको समझाता नहीं है। जब हम जानते नहीं, फिर बोलते क्यों हैं ?तो कहते हैं लोग, इसलिये हम बोलते हैं। माने खाली दुनिया बोलना जानती है। दूसरों पर आरोप करना जानती है, और आप को अयोग्य ठहराना जानती है क्योंकि अपने आप को योग्य मानती है। मैं योग्य हूँ बाकी सब अयोग्य हैं। बड़ी कठिन बात है, इसी का बोलबाला है। जो ज्यादा बोलता है, ज्यादा नखरा करता है, उसकी पूजा पाठ होती है।

लंगोटी लगा लिया, नंगा फिर रहा है, तो दुनिया उसको कहती है, भाई, ये संत हो गया। उठाया लकड़ी और मार दिया, बोले, उसका काम हो गया। जिसको लकड़ी मिल गई, उसका कल्याण हो गया। झूठ बात है, कुछ नहीं होता। ऐसे बने हुये कितने लोग फिरते है, न अपना कल्याण कर सकते, न औरों का । ये विषय अलग है। तो कहने का तात्पर्य यह है कि दुनिया में बोलने वाले का बोलवाला है और जो नहीं बोलता, उसका कुछ नहीं होता। कौन नहीं जानता, यहाँ एक ऐसी चीज है, आत्मकल्याण कराने के लिये, आत्मकल्याण होने के लिये अपना परिवार है। न्यूनाधिक सब कोई है, लेकिन आत्मकल्याण के लिये, माने निर्मल मल रहित होना है। आत्मकल्याण का अर्थ है मल रहित होना, निर्मल होना। मन, वाणी, कर्म और शरीर से भी निर्मल होना है। अब बतलाइये, मन मे हमारे कुछ अलग है, कर्म में कुछ अलग है, और वाणी में कुछ अलग है, तब कहाँ मेल खाता है। इन तीनों पर संयम होना चाहिये, तब आप अधिकारी होते हैं। संयम तो है नहीं, आप जो कुछ बोलते हैं, वह भी याद नहीं, शब्द के अर्थ मालूम नहीं, बोल दिये, भूल गये, क्या बोले, मालूम नहीं। बोले तो ठीक है, लेकिन उस समय बोला था। अब थोड़ी बोल रहा हूँ। तब बोला था, आप तो आश्वासन दे देगें। आप तो आश्वासन देकर उसको विश्वास में डाल देगें और विश्वास दिलाने के बाद कहेगें भाई, हमको कुछ मालूम नहीं। ठीक है। निकल जाते है। उसको होशियार कहते हैं। ये होशियारी जो है वह कहाँ तक अच्छी है ?यह सोचने की बात है। सत्य क्या है ? पहले क्रिया, बाद में बोलना यही सत्य है। **'' आधी केळे मग सांगितले'' – इसी का नाम सत्य है।** आज इतना ही पर्याप्त है। सबका कल्याण हो, सब प्रकार के दुख, आपत्ति, विपत्ति, संकट शान्त हो, सब प्रकार की शान्ति आपको प्राप्त हो, जीवन सफल हो, जीवन यशस्वी हो, जीवन निर्मल हो और आप सतपथ पर अग्रसर हो ऐसा, मेरा स्नेहपूर्ण आशीष है । शांतिः...........शांतिः..........शांति। **इत्यलम्**

(इ)

# सत्यम् वद प्रियम् वद

सत्यम् वद् प्रियम् वद् न वदेत् सत्यम् अप्रियम् ।। सच बोलो, सच माने '' **आधी केळे मग सांगितले '' (रामदास) ,** ये है सच , पहले करो। अनुभव में आये और दूसरों को फिर अनुभव करा देने में आप सक्षम रहे कि भाई, जो आपने देखा, जो किया , ये देखो ऐसा है। पहले विज्ञान सिद्ध होना है। यही है सत्य। वद् नाम है बोलने का। सत्य बोलो, प्रिय बोलो, लेकिन प्रिय बोल तो भी सत्य है। वो अनुभव में है। तो कभी भी आप प्रिय ही बोलेगें, मधुर कहेगें कि भाई, मेरा किया हुआ है । और जो कोई किया नहीं और केवल गप्प मारता है वो तो गरम हो जायेगा। वाह, हम कहते हैं कि तुम सुनते नहीं हों, बोला था मैं, तुमको क्या करने का, पूछने का, तुमको हम सिखाते हैं। बहुत हैं, ऐसे गुरू स्कूल से लेकर के आश्रम रूपी जो नाव हिन्दुस्तान में चल रही है, अरे, तुम्हारी कामना नहीं गई, इच्छा गई नहीं, वासना गई नहीं, तुम्हारा क्रोध गया नहीं, लोभ गया नहीं। मुझको कम दिया, मुझे ज्यादा मिलना चाहिये और जो मिला उसको छोड़ने को तैयार नहीं है। यह कहावत है– चमड़ी जाय, लेकिन दमड़ी न जाय, और शत्रुता, वैमनस्यता यह सब बढ़ जाता है कहने का तात्पर्य यह है कि फिर ये सब दूर क्यों नहीं होता क्या बात है ?सत्य क्या है ?तो सत्य ये है जो किया है हमने, जो मुझे ज्ञान है, औरों को भी ज्ञान कराने में हम समर्थ हों तो वह व्यक्ति मधुर हो जाता है। वहाँ फिर क्रोध नहीं आता क्योकि किया हुआ है, उसको प्रमाण की जरूरत नहीं है। मैनें किया है, देखा है। ये देखो, तुम भी सीख लो, यह है सत्य, बाकी सत्य की परिभाषा हमको नहीं मालूम।

मैंने ऐसा –ऐसा किया, मुझे इसका ज्ञान है। ऐसा –ऐसा किया, ये चालू हो गया। ये देखो ये बन्द हो गया। प्रक्रिया का बोध आपको होना चाहिये कि किस प्रकार से ये फलसिद्धि आपको मिली, तो और लोग भी आपके पास आकर सीख सकते है और तुम्हारे जैसे वो भी तैयार हो सकते हैं। **आपल्या सरीखी करिती तात्काळ।।** आपको सीखने की जिज्ञासा होनी चाहिये, खाली गप्प मारने के लिये, टटोलने के लिये, निंदा करने के लिये नहीं, जो अधिक बोलता है वह वीर नहीं होता। अधिक बोलता है, अधिक झूठा होता है। अनुभव में आना बहुत कठिन होता है, अनुभूति में आना बड़ा कठिन है,अनुभूति ही सत्य है। **पातञ्जलि योगदर्शन में है। अनुभूतविषयासंप्रमोषः स्मृतिः ।।** अनुभव किया, सुना, और देखा, ये तीनों समकाल में जब आते हैं, उसी का नाम है सत्य। उस पुस्तक को शास्त्र कहा गया है। शत् धातु से वना है । उससे शासन होता है तो शासन को मानना– उससे आपका कल्याण होगा। जैसा मेरा कल्याण हुआ, आपका भी कल्याण होगा और सब का कल्याण होगा। तो हमने इसको सत्य माना और जो दुनिया है क्या सत्य मानती है ? हमको मालूम नहीं कसम खाती है सत्य की, लेकिन सत्य बहुत दूर है। मैं कभी कसम नहीं खाता और मैं शपथ लेकर कभी नहीं बोलता क्योंकि सत्य है। क्या कसम खायेंगें ! सत्य है।

कोर्ट में बोलना पड़ता है, ये कोर्ट का नियम है। बोलो कि मैं सच बोल रहा हूँ सच के सिवाय हम और कुछ नहीं बोलेंगे, वो कोर्ट है, वहाँ का नियम है तो नियम का उल्लंघन नहीं होना चाहिये। नहीं तो तुमको सजा हो जायेगी, ठीक है? नियमों का पालन हमको करना है । ये व्यवहारिक नियम अलग है और यह सत्य है। आप जहाँ जाते हो वहाँ का नियम पालन करना यह भी सत्य है। मैं ऐसा सत्य माना हूँ लेकिन दुनिया जो है असत्य के प्रलोभन में ऐसी फसी हुई है, झूठे कारोबार में ऐसी फंसी है कि जिसका नाम नहीं।

एक नगर में गरीब ब्राम्हण था। ब्राहम्ण सुबह भजन– पूजन तथा रूद्राभिषेक करता था लेकिन भोजन के लिये उसको गॉव में जाकर एक–एक दिन एक–एक के घर जाना पडता था। सात दिन के सात घर थे। ब्राम्हण कभी सत्यनारायण की कथा, कहीं शनि का पाठ, कही दुर्गा सप्तशती का पाठ करता था । ब्राम्हण सीधा–साधा था, एक दिन उसके मन में विचार आया कि भाई, कि इतना हम जप, तप, भजन, पूजन करते हैं लेकिन ये भीख मांगना तो बन्द होता ही नहीं है। लोगों को कथा सुनाना, पुराण सुनाना, मैं ही लोगों को राहू, केतु, मंगल बताता हूँ लेकिन वो तो सभी मजे में हैं और में ही सभी को उससे बचने का उपाय बताता हूँ और मुझे ही भिक्षा मागंने के लिये गाँव गाँव जाना पड़ता है। क्या बात है ?ये जो मैं भजन, पूजन, पुराण कथा सुनाता हूँ ये बराबर है कि नहीं ? इस प्रकार का प्रश्न उसके मन में आया और उसको एक दम से भीतर कुछ लगने लगा कि सच बात क्या है ? उसका जो भीतर मन था वो बोलने लगा अरे ये सब सच नहीं है ये प्रलोभन है। दूसरों को बनाना दुःख में डालना, और उस पर गुजर करना। भीख माँगना तो गया ही नहीं, हम अगर घर–घर माँगने जायेंगे नहीं तो हम दोनों को भूखा रहना पड़ेगा क्योकि लोग कहते हैं कि आप आये और ले जायें । इस प्रकार हमें मॉगने के लिये जाना पड़ता है। उसने सोचा एक दिन चार घर जाकर सीधा मॉग के लाये ताकि भाई, हम चार दिन भीख माँगने नहीं जायेंगे। चार दिन का चार घर जा–जाकर माँग कर ले आये और अपनी पत्नी से कहा– मैं तीन दिन दूसरे गाँव जाकर आता हूँ। इससे ये लाभ होगा कि तीन दिन का सीधा बच जायेगा। पत्नी बोली ठीक है। उन्होनें तीन दिन का सीधा इकटठा लाकर रख दिया और वे चले गये। पत्नी ने ये सोचा कि तीन दिन का सीधा उनके पास जमा हो गया। पत्नी का अलग, उनका अलग माने जो आता था सो बच गया। वो जैसे यहाँ से निकलकर दूसरे गाँव जाते हैं वैसे ही हमारे सरीखा एक धोती पहने हाथ में लकड़ी, रूमाल कंधे पर, कमीज पहने हुये आ गये और पूछा फलाने पांडुरंग कहाँ गये हैं ?बोली– पंढ़रपुर गये हैं, कब लौटेंगे ? मैं तो उनसे मिलने आया था। वे हमारे परम मित्र हैं। कभी– कभी इच्छा हो जाती है कि भाई – बचपन के मित्र है, चलो मिलकर आ जाते हैं। अच्छी बात हैं । वह बोली– तीन दिन तक वो आयेगें नहीं। वो बोले– मैं तो इतनी दूर से आया हूँ। अब बहुत दिन बीत गये मिले नहीं। तो बोले – अब मैं नहीं लौटता। तीन दिन के बाद ही मिलकर मैं वापस जाऊँगा। पत्नी बोली– ठीक है। बाबा जी– ये बिस्तर है, ये खाट है, आप बैठिये, भोजन ग्रहण करिये। एक दिन हो गया, दूसरा

दिन हो गया, तीसरा दिन भी हो गया। ब्राहम्ण ने सोचा कि अब तीन दिन का सीधा बच गया, और तीन दिन आराम से गुजर जायेगा। बड़ी बुद्दि से काम किया भाई। अब तीन दिन भीख माँगने नहीं जाना पड़ेगा। चौथे दिन जैसे दिन निकलता है पांडुरंग (ब्राहम्ण ) जी वापस आ गये। बाबा जी ने कहा– अरे कहो–कहो बहुत दिनों के बाद मुलाकात हुई। हाँ–हाँ बहुत दिनों के बाद मुलाकात हुई। ठीक है न। अरे, भाई , जिस दिन तुम निकले, उसी दिन मैं यहाँ आ गया, मुलाकात के लिये मैं तीन दिन तक तुम्हारा इंतजार किया क्योंकि मुझे पता चला कि आप पंढरपुर में तीन दिन तक ही रहेगें तथा चौथे दिन वापस आयेगें, और आप आ गये बड़ा अच्छा हो गया। तो बोले आप कब गये ?कब पहुंचे ?पांडुरंग (ब्राहम्ण ) जी बोले– मैं कहीं नहीं गया था। भाई, बहुत अच्छा हुआ, मुलाकात हो गई, अब मैं जाता हूँ, अब आप बचत करने जाओ । देखो भाई, बोलने वाले का ही बोलबाला है। ब्राहम्ण ने सोचा कि अब क्या करें ? भजन– पूजन से काम नहीं चलेगा। रत्नाकर कहाँ गया, समुद्र में चौदह रत्न हैं। अगर समुद्र प्रसन्न हो जाये, तो एकाध रत्न हमको भी दे देंगे, अपना कल्याण हो जायेगा, तो बस्ती छोड़ दंगा। ब्राहम्ण अब चला, चलते–चलते ब्राहम्ण एक छोटे से गाँव में पहुँचा, जहाँ एक बनिया रहता था जो कि अपना व्यापार करता था। बनिया ने ब्राहम्ण से कहा– कि यहाँ कैसे आना हुआ ? बोले– भाई ऐसी बात है कि अब मैं समुद्र के पास तपस्या करने जा रहा हूँ। समुद्र का एकाध रत्न यदि हमको मिल जायेगा, तो अपना कल्याण हो जायेगा। ठीक है, लेकिन रत्न पाकर जब तुम वापस लौटोगे, तो यहीं पर रात्रि विश्राम कर, फिर वापस लौट जाना। ठीक है। बनिया खुश हो गया। ब्राहम्ण अब समुद्र के पास गया, आसन लगाकर बैठ गया, मंत्र पढ़ा, कई दिन तपस्या करने के बाद समुद्र देवता प्रसन्न प्रकट हो गये। समुद्र देवता ने कहा'– वरदान माँगो। ब्राहम्ण ने कहा–हाँ, हाँ आप कौन हैं? बोले मैं समुद्र हूँ। अच्छा ! हमको ऐसा कुछ दो कि मेरा कल्याण हो जाये, मैं कहाँ तक भीख माँगू ? आप रत्नाकर हैं, आपके सामने यदि मैं भीख माँगता रहूँ, तो आपका क्या महत्व है?ठीक है। एक छोटी सी शंखी पकड़ा दिये, इसको पूजा गृह में रखना, अलग नहीं रखना। जब पूजा हो जाये, तब शंख से हाथ जोडकर, आँख बन्द कर बोलना कि एक सोने की मुद्रा मुझे प्रदान करें। थोड़ी देर बाद आप शंखी उठायेंगे तो आपको एक सोने की मुद्रा मिल जायेगी। ऐसा करने पर ब्राहम्ण ने सोने की एक मुद्रा प्राप्त की। मुद्रा को खीसे में डाल बनिये के गाँव की ओर चल पड़े। बनिये के पास पहुँचे, बनिये ने कहा– समुद्र देवता प्रसन्न हुये कि नहीं, वरदान का क्या हुआ ?बनिया होशियार था, सोचा कि वरदान तो कोई बाँट नहीं सकता। बनिये ने उसकी अच्छी सेवा की तथा एकाध दिन और रूकने का आग्रह किया। ब्राहम्ण ने पूजा–पाठ कर हाथ जोड़कर बताई हुई विधि से शंखी से स्वर्ण मुद्रा प्राप्त करने के लिये आँख बंदकर विनती की। ब्राहम्ण ने पुनः सोने की मुद्रा प्राप्त की। बनिये को जब इस रहस्य का ज्ञान हुआ, उसने अवसर देखकर, उस शंखी को अपने पास रख लिया और उसके जगह में दूसरी शंखी को रख दिया। अब ब्राहम्ण ने रोज की तरह पुनः स्नान –ध्यान कर हाथ

जोड़कर बताई हुई विधि से शंखी से स्वर्ण मुद्रा प्राप्त करने के लिये आँख बंदकर विनती की। कुछ भी प्राप्त नहीं हुआ। करीब दो घन्टे तक प्रयास किया, असफल रहा। बनिये ने कहा—समुद्र देवता ने तुम्हें ठग लिया। जायो उसके पास। ब्राहम्ण गुस्से में आकर पुनः समुद्र के पास जाकर जी भर के करीब चार दिन तक गालियाँ दीं। चार दिन के बाद समुद्र देवता ने कहा— क्या बात है ?ब्राहम्ण ने कहा— तुम धोखे बाज हो, उस शंखी से अब कुछ नहीं निकलता। समुद्र देवता ने कहा— ये नकली शंखी है, बनिये का यह सब किया धरा है। अब मैं तुमहें एक महाशंख देता हूँ जो बोलता है । पूजा करने के बाद इससे बोलना कि मुझे 100 सोने की मुद्रा मुझे प्रदान करें। महाशंख ने कहा— अरे भाई, सौ क्या माँगता है, दो सौ ले ले। अरे भाई, दो सौ क्या माँगता है, चार सौ ले ले। ब्राहम्ण ने लालची बनिया को, महाशंखी लाकर दे दिया और छोटी शंखी बनिये से ले लिया। बनिया ने महाशंख लेकर, पूजा गृह में रखकर, एक सौ मुद्रा प्रदान करने हेतु विनती की। महाशंख ने कहा— अरे भाई सौ क्या माँगता है, दो सौ ले ले। अच्छा पाँच सौ ले ले। बनिया माँगते— माँगते हार गया , परन्तु एक भी स्वर्ण मुद्रा नहीं मिली।

**पर हस्ते गता शंखी स्वर्ण मुद्रा प्रदायिनी। अहम् ढपोर शंखोस्मि। वदामि, न ददामि।।** सोने की मुद्रा प्रदान करने वाली शंखी तो गई। मैं खाली बोलता हूँ, देता नहीं हूँ। बोलने वाले का बोल बाला है। हम खाली बोलते हैं, कुछ देते नहीं। यह संसार अत्यन्त विचित्र है। सबका कल्याण हो, सब प्रकार के दुख, आपत्ति, विपत्ति, संकट शान्त हो, सब प्रकार की शान्ति आपको प्राप्त हो, जीवन सफल हो, जीवन यशस्वी हो, जीवन निर्मल हो और आप सतपथ पर अग्रसर हों, ऐसा मेरा स्नेहपूर्ण आशीष है । शांतिः...........शांतिः.......... शांति। **इत्यलम्**

---

**(फ)**

# साधन —धाम

गुरू उपदिष्ट मार्ग से प्राप्त स्थान ( धाम )। साधना के पश्चात प्राप्त धाम। जो कम या जो आदेश दिया जा चुका है, जो प्रकिया बतला दी गई है, उसे प्राप्त कर उसे अपनी सीट (seat) बना लो, वही तुम्हारा धाम है। दूसरे शब्दों में साधना क्रम – प्रक्रिया द्वारा प्राप्त आदेश, उसे साध लेने या सिद्ध कर लेने पर सुषुम्ना को खोल लेने पर ही परलोक की प्राप्ति सम्भव है। इसलिये यह मानव तन या देह दुर्लभ है। यह देह पूर्ण है तथा सब कुछ प्राप्त करने में सक्षम है। आदित्य वर्ण का ध्यान तथा कवच मंत्र का जप को साथ रखें । जिसे शरीर का भय, धन, मान का भय हो, उसे कभी आनन्द प्राप्त हो ही नहीं सकता। तुम्हें इसी जन्म में ईश्वरत्व को प्राप्त करना है, अतः धारणा मे ढील न आने दो। सफलता और असफलता में सामान्य रहना है। इच्छा की अधिकता के कारण सुख, दुःख आते हैं।

अपने में जन्म– जन्मान्तरों की बुनियादी वासनायें भरी हुई हैं। ये ही निर्विचार होने में बाधक हैं। इसमें स्तब्ध और मौन सहायक हैं, उससे ही आगे बढ़ते हैं। सावधान रहते हुये कार्यरत हों (अभिवन), यह सदैव ध्यान रहे। ''**वयम् न भोक्ता, वयमेव भुक्ता '' ।** तात्पर्य यह है कि क्रियायें शरीर का अंग है। आत्मा तो द्रष्टा मात्र है। ऐसी स्थिति में शरीर भाव बनाकर चलने से शरीर भाव समाप्त होने लगता है, और सोऽहम् की स्थिति आती है, कुछ न करना ही ध्यान है।

सजग और सावधान रहें कि हम आत्मा हैं। यह नाम किसी का दिया हुआ है या रखा गया है, यह सब अभिनय है, जो आप संसार के लिये कर रहे हो। अपने आपको स्व में लाना किन्तु आप उस स्व मे ठहर गये या स्थिर हो गये तो पूर्णत्व की ओर चले। श्वांस चल रही है, आप कुछ नहीं कर रहे हैं। आप कुछ नहीं कर रहे हैं, मात्र दृष्टा हैं, अकर्ता होना है।

**'' खोजोगे तो खो दोगे, जब नहीं खोजोगे तो पा जाओगे ''**

क्रिया है तो व्यस्तता है। खोजने की स्थिति भविष्य की ओर जाती है। ईश्वर अन्दर है। वर्तमान में हुये कि पा गये, रूको क्षण भर और देखो कि जिसे तुम खोज रहे थे, उसे तुम पाये हुये हो।

**'' मैं की समाप्ति हुई कि वह पास में ''**

अहंकार को समाप्त करना है, अहंकार समाप्त हुआ कि ''अस्मि भाव'' की जाग्रति और पुष्टि होती है। जब तक कर्ता हम अपने आपको मानते हैं, तब तक 'स्व' की अनुभूति दूर है, कर्ता पन से दूर हुये कि 'स्व 'भाव स्वयं होने लगता है। यह मोक्षानन्द की एक अवस्था है जिसे शरीर धारण की हुई अवस्था में ही प्राप्त करना है।

योगनिद्रा, व्रम्हानन्द, निजानन्द, बोधचेतना, जागृति, समाधि, आत्मा और प्रकृति का आनन्द आपको लेना है तो ऐसी सन्धि में खड़े हो जाओ कि जहाँ से आपको बोध होता रहे कि आपको ऐसी लाइन प्राप्त हो गई है, यह स्पष्ट होता है।

**सकल दृष्टि उदर मेलि, दृष्टा दृश्य ग्रासी।**
**मध्य लेखु निवासी, ऐसी योग भूमिका ऑसी ।।** संत ज्ञानेश्वर

दृष्टा, दृश्य रहित स्थिति में एक ऐसी संधि पड़ती है, जैसे सगुण से र्निगुण की संधि (**निद्रा अंते जाग्रति स्वादो**), योग भूमिका को प्राप्त होता है। ''स्व स्वरूपो दृष्टि स्थिति मोक्षः'', ऐसा साधक कैवल्य का अधिकारी होता है। उस संधि पर आपको ठहरना है। सर्वदा इसी स्थिति में रहने में **समाधि आनन्द** प्राप्त हो जायेगा । उस काल या स्थिति में साधक जो बोलेगा, वही होगा। योगनिद्रा में देह भाव नहीं रहता, अतः अपने को यही अभ्यास करना है कि अधिक से अधिक काल तक योगनिद्रा में ही रहें।

**दृष्टा दृश्य विरहित स्थिति।** दृष्टा ने जब यह अनुभव कर लिया कि दृश्य वस्तु और कुछ नहीं तू ही है। तू उस दृश्य का ही स्वरूप है। वस्तु बना हुई है वह हमीं तो हैं। एकोऽहम्

बहुस्याम्। ऐसी इच्छा करने पर ही तो आत्मा, प्रकृति बना। प्रकृति की प्रत्येक वस्तु उसी की इच्छा स्वरूप है। ब्रम्ह अयं (आत्मा का स्वरूप)। ब्रम्ह के अनुभव से आत्मा सभी में दृष्टिगोचर होने लगती है, उसे वस्तु न समझकर आत्मा समझने पर उसका प्रभाव मन पर नहीं पड़ता है। यही सर्व संकल्प के त्याग का रहस्य है जो क्रमशः निद्रा, जागृति, मध्य संधि की स्थिति प्राप्त करने पर प्राप्त हो जायेगी। इसे ही निजानन्द, मोक्षानन्द, ब्रम्हानन्द, योगनिद्रा, समाधि, आत्मा प्रकृति का आनन्द स्वरूप की स्थिति आदि का नाम दिया गया है। प्राण, अपान को सम करना है। दृष्टा, दृश्य विरहित स्थिति, इस अभ्यास से दृष्टा भाव शीघ्र नष्ट हो जायेगा और जब दृष्टा ही हो (दर्शक के रूप में न रहा मात्र साक्षी रूप में है ) फिर दृश्य पर दृश्य वस्तु के समानुपस्थित रहते हुये दृष्टा के लिये वह नहीं के समान रहा। इस प्रकार जब दृष्टा न रहा तो फिर दर्शन ( संस्कार ) के रहने का प्रश्न ही नहीं रहा। ऐसा अभ्यास अपने को करना है। यही **ब्राम्ही स्थिति** है।

**संत तुकाराम —    बैसूनिया निवाक शुद्ध करि चित्त अन्मरी।**
**ये उनि रहिल गोपाल सा या साचे फल वेसनिया ।।**

**अन्मरी—** दीप शिखा के समान स्थिर, जो इन्द्रियों का पान करने वाला ब्राम्हण ।

**बैसूनिया—** अनायास फल की प्राप्ति।

ऐसा बैठने से, या बैठकर न कुछ करने से जो फल आप प्राप्त करना चाहते हैं, वह अनायास प्राप्त हो जायेगा (वृत्ति रहित होना ) क्योंकि आत्मा वृत्ति रहित है। इससे उसमें तदात्मय स्थापित करना है, एकात्मता स्थापित करना है। अभ्यास से आपको वृत्ति रहित होना हैं। वृत्ति — इच्छा— स्फुरण — चलतल रहित, निष्काम कर्म योग से ही सम्भव है। भक्ति मार्ग, ध्यान योग से सहज है। आत्मा के साथ एकात्मता रखना सबसे बड़ा एवं प्रभावशाली भजन है। इसी क्रिया से अहंकार जाता है।

गुरू को सर्मपण ही आत्मा को सर्मपण है। अवस्था रहित होना—जागृति, स्वप्न, सुषुप्ति इन तीनों अवस्थाओं से परे होना है। तूर्यातीत अवस्था प्राप्त करना ही लक्ष्य है। परिपक्व, पूर्ण तूर्या में रहने का अभ्यास करना है। इसके बाद तूर्यातीत अवस्था —जिसमें साधक को होशोहवास नहीं रहता, कोई खिला दिया, तो खा लिया, नही ंतो अपनी मस्ती में मस्त रहता है।

सुषुप्ति का आनन्द तो जागने के बाद लगता है कि मैं खूब सोया किन्तु यदि सुषुप्ति अवस्था का बोध होता रहे, उस आनन्द का बोध होता रहे, तो यह तूर्यावस्था है। यदि ध्यान में बाघ दिखाई दे और आप डर गये, चेतनाहीन हो गये, तो यह तटस्थ अवस्था है। किन्तु उस बाघ को देखने पर भय का कोई संचार नहीं हुआ, उस भय के भाव को आप सहज वृत्ति से पचा गये और स्थिर रहे, यह वास्तविक समाधि लक्षण है, इसे चेतन समाधि कहा गया है। काम, क्रोध, मोह, लोभ का नाश हो जाता है। यह आत्म स्थिति की अवस्था है, इस समाधि में

कोई वासना नहीं रह जाती है। आपके आचार–विचार में साम्य रहता है, जैसा बोलते हैं, वैसा ही करते हैं किन्तु जड़ समाधि में वासना का नाम नहीं होता, कोई न कोई वासना रहती ही है। चेतन समाधि में वासनाओं की समाप्ति हो जाती है। बोध बना रहता है। जितने समय या बर्ष का संकल्प लेकर चेतन समाधिष्ठ बैठता है, उतने समय या काल बाद उठ बैठता है ओर पूर्ववत् स्फूर्ति एवं ताजगी बनी रहती है जबकि जड़ समाधिष्ठ पीला पड़ जाता या अस्वस्थ हो जाता है ।

आत्मा के स्वरूप का बोध दृढ़तापूर्वक कैसे हो? "सर्व खलु इदम् ब्रम्ह," ब्रम्ह की धारणा में दृढता कैसे आये ?तूर्यातीत में देह भाव नहीं रहता। ब्रम्हविद चौथी अवस्था में कभी समाधि में रहता है, कभी नहीं – ब्रम्हविद पाँचवी अवस्था है– साधक स्वयं उठता है और नीचे आ जाता है, इसे सुषुप्ति भी कहा गया है। ब्रम्हविद वीर्यवान, छठवीं भूमिका –साधक को कोई उठायेगा , तभी उठेगा। ब्रम्हविद वरिष्ठ, सातवीं भूमिका – इसे तूरिया या तूरियातीत अवस्था भी कहा गया है कि साधक न स्वयं उठता है न उठाने से उठता है।

मैं प्रकृति हूँ जब तक मनुष्य ऐसा समझता है, तब तक उसमें अहंकार की बू आती है और तब तक उसमें देह भाव है। ऐसा कहा गया है कि मुझसे ही प्रकृति बनी है अथवा मैं ही शक्ति रूप बनकर प्रकृति बन गया, ऐसा बोध होने पर शिव भाव है अथवा आत्म भाव है क्योंकि एकोऽहम् बहुस्यामि की इच्छा भाव से प्रकृति बनी है। ऐसा साधक जाग्रत हो गया, स्वस्वरूप का बोध हो गया। रामकृष्ण ने जान लिया था कि माँ ही ब्रम्ह है ।

जीव भाव कैसे जाये ?याद रखो **सः कर्मकारः मस्त्रैव स्वसन अपि न जीवति** ।प्रकृति तीन गुण से युक्त है, अतः शिव भाव प्राप्त होने के लिये त्रिगुणातीत होना जरूरी है। ब्रम्ह इन्द्रिय गोचर नहीं है। इसलिये सत, रज, तम इन तीनों से परे होना है अर्थात निद्रा, जाग्रति, स्वप्न ये तीनों अवस्थायें गुणशाली हैं और आप को गुण रहित होना है। आत्मा गुण रहित है। अतः जब साधक या साधक की बुद्धि तीनों गुणों से रहित होती है, तब आत्मा में लय होने के लायक या योग्यता को प्राप्त होती है। इसलिये इन तीनों से परे निद्रा, जाग्रत, स्वप्न आदि से परे स्थिति में अधिक से अधिक काल तक रहता है और रहने का अभ्यास करता है ताकि यह अवस्था दृढ़ हो जाये।

इस अवस्था को चिंतन रहित स्थिति कहा गया है। एक गुण का दूसरे गुण पर प्रभाव नहीं रहेगा, तीनों गुण एक साम्यावस्था को प्राप्त हो गये, तब साधक शान्तातीत बनता जाता है। सत, रज, तम माया के गुण हैं। गुण प्रकृति के कार्य हैं। गुण की उत्पत्ति प्रकृति से होती है गुण और आत्मा की संगति कभी होती ही नहीं अतः पहले सद्गुण को उदय करना है (रजो, तमो गुण को नष्ट करके)। सत् का प्रधान दुर्गुण ज्ञान है कि मैं ज्ञानी हूँ। रज की प्रधानता है कि क्रिया मैं करने वाला हूँ , तम की प्रधानता है –अहंकार ,निद्रा, आलस्य, भय, मैथुन।

त्रिपुरी– इच्छा, क्रिया, ज्ञान, अविद्या आदि शामिल है। अतः आपको सतोगुण को भी नष्ट करना है। तमो गुण के रहते न ज्ञान ही काम देगा, न ही ध्यान में चित्त लगेगा। रजो गुण वालों को विषय आदि का मोह घेरे रहेगा। सतोगुणी भगवान का चिन्तन करेगा और उसी में अहंकार उत्पन्न हो सकता है कि मैं भक्त हूँ किन्तु जब सतोगुण की वृद्धि होगी तो सद् धर्म में बृद्धि होगी, गुरू से प्रेम बढेगा। जब गुरू चरणों में प्रीति होगी तो उल्लास बढेगा। गुरू और ब्रम्ह एक हैं, ऐसा भाव उत्पन्न होने लगेगा। तब समझो उस साधक में सतोगुण का विकास होने लगेगा। जब तक साधक में एकनिष्ठता नहीं आती तब तक यह शुद्ध सतोगुण बन ही नहीं सकता। मनसा, वाचा, कर्मणा गुरू और ब्रम्ह में एकात्मता का विकसित होता ही एक निष्ठता है। तभी वह शुद्ध सतोगुणी हो जाने की योग्यता प्राप्त करेगा। मनसा, वाचा, कर्मणा से उनसे तारतम्य स्थापित करने पर ही हम उससे अभेद हो सकेंगे। **'' जड़ चेतनहि ग्रन्थि पड़ि गई , गर्दनि मृषा छूटत कठिनाई '',** कैसे छूटे? गुरू आदेशानुसार –nil होने का सतत् अभ्यास करें। उससे सत, रज, तम तीनों गुण समाप्त हो जायेंगे । जागृति, स्वप्न, सुषुप्ति तीनों सम हो जायेंगे, यह अवस्था रहित हो जायेंगे। आत्मा या ब्रम्ह अवस्था रहित है। अतः ऐसे अभ्यास में दृढ़ता लाने से वह साधक उस योग्यता को पा लेता है, जिससे आत्मा में लय होगा, आप सदा सर्वथा समाधिस्थ रहेंगे ।

**काम क्या होगा ?**

1. आप हमेशा ब्रम्हानन्द या परमानन्द में डूबे रहेंगे ।
2. देह भाव की समाप्ति हो जायेगी, आप उसी देह में सच्चिानन्द स्वरूप को प्राप्त करने में समर्थ हो जायेंगे।
3. धीरे–धीरे भूत, भविष्य, वर्तमान का ज्ञान होने लगेगा।
4. बुद्धि सूक्ष्म, अतिसूक्ष्म हो जायेगी।
5. परम ब्रम्ह भी सूक्ष्म है। वह स्वयं ब्रम्ह को प्राप्त कर लेगा।
6. अब और आगे जाना चाहते हैं तो मौन हो जायेंगे, कुछ नहीं है, का बोध हो जायेगा, तब ब्रम्ह का भास होता है, अनुभव होने लगता है। उसे ही ब्रम्ह का नाम दिया गया है।

यदि गुरूजी से कोई आदेश प्राप्त करना चाहते हैं तो nil होकर उनका ध्यान करें। आपको वहाँ से प्रेरणा मिलेगी, उचित मार्गदर्शन मिलेगा, आपकी समस्या का स्वमेव समाधान हो जायेगा या कठिनाई का हल प्राप्त हो जायेगा। जिस तरह से आशीर्वाद देकर गया था, उसी तरह से आज हम सब फिर से इकट्ठे हुये हैं, हम अपने परिवार को आनन्दमग्न पा रहे हैं जिसे देखकर मुझे अत्यंत हर्ष हो रहा है। कोई भी कार्य करने के पहले वैदिक मंत्र के आधार पर हम आशीर्वाद देते हैं–

सबका कल्याण हो, सब प्रकार के दुख, आपत्ति, विपत्ति, संकट शान्त हों, सब प्रकार की शान्ति आपको प्राप्त हो, जीवन सफल हो, जीवन यशस्वी हो, जीवन निर्मल हो और आप सतपथ पर अग्रसर हों, ऐसा मेरा स्नेहपूर्ण आशीष है । शांतिः..........शांतिः..........शांति।

(य)

# ''समाधि''

सविकल्प, निर्विकल्प। ध्याता एवं ध्येय का भान नहीं रहता। चेतन समाधि, जड़ समाधि, उन्मना समाधि, स्थित समाधि। ब्रम्ह ज्ञानी को सत्, असत् का बोध ही नहीं होता। परमहंस अवस्था में सब कर्म छूट जाते हैं, पूजा, तप, तर्पण, संध्या केवल मन का योग रहता है। सदा स्मरण और नमन किया करता है।

**'' यदेक निष्कर्म ब्रम्ह व्योमातीतं निरंजनम्''**

ब्राम्हणों का देवता– अग्नि, मुनियों का देवता– हृदय में है । स्वल्प बुद्धि वालों के लिये –प्रतिमा ही देवता है। समदर्शी महायोगियों के लिये देवता –सर्वत्र हैं। उर्ध्व पूर्ण, अधः पूर्ण, मध्य पूर्ण यदात्मकम् सर्वपूर्णस्य आत्मेति समाधिस्थस्य लक्षणम्। संसार की रचना ईश्वर ने की है, इसे छोड़कर भागा नहीं जा सकता। यह शरीर भाव है, यह शरीर भी संसार है,। छोड़ना है तो मन से छोड़ो। वासना के रहे बिना शरीर धारणा नहीं हो सकता। कृष्ण पाण्डवों के साथ–साथ रहे फिर भी उनका कष्ट, दुःख दूर नहीं किया।

विवेक, वैराग्य, गुरू वाक्य पर ध्यान, नाभि से नाद उठता है। मन का निवास आज्ञाचक्र है, जहाँ समुद्र की कल्लोल सुनाई पड़ती है। मैं पन रहने पर दर्शन नहीं होता। अहा ! मैं भी नहीं, तुम भी नहीं, एक भी नहीं, अनेक भी नहीं, वहीं ईश्वर दर्शन होता है। ज्ञान से अज्ञान को दूर करो, विज्ञान (self realisation) से दर्शन होता है। बातचीत होती है, साथ रहता है। दूध सुना– अज्ञान, दूध देखा– ज्ञान, दूध पीकर मोटा हुआ– self realisation अनुभव,। साधु कभी जड़ की तरह, कभी पिशाच की तरह, कभी बालक की तरह, कभी उन्मादी की तरह, कभी समाधि मग्न होकर, बाह्य संवेदना शून्यत्व (self realisation) के बाद काम, क्रोध, सब अपने आप छूट जाते हैं। त्यागी हुये बिना लोक शिक्षा नहीं होती। जहाँ भोग है, वहाँ चिन्ता, भोग के त्याग से ही चिन्तायें समाप्त होती है। ज्ञान की सात भूमिकायें– सुमेक्षा, विचारणा, तनुमानसा, सत्वापत्ति, आसक्ति, पदार्थ भावना, तूर्यगा।

1. मोक्ष प्राप्ति करने की इच्छा – अहम् ब्रम्हास्मि तत्वमसि अयमात्मा , इसे श्रवण भूमिका भी कहते हैं।

2. गुरू आज्ञापालन, शास्त्रों का अध्ययन, सत्, असत् का निषेध करना, इनका विचार करना – **विवेक है।** जीव ब्रम्ह है, मन हटाकर समझना संसार से,, ब्रम्हस्थ होना,–**वैराग्य है। विवेक–वैराग्य होने पर चित्त निर्मल, क्षमा, सरलता, पवित्रता, प्रिय, अप्रिय प्राप्ति में समता, समस्त इच्छाओं का अभाव होता है।**

**3.** विषयों से अनासक्त होना– **विचारणा है।**

4. मन जब सूक्ष्मता को प्राप्त हो जाता है, अत्यन्त विरक्त हो जाना, सत्य स्वरूप परमात्मा में तद्रूप हो जाना– सत्याभक्ति है।

5. नित्य समाधि रहती है, विचारों के सिद्ध हो जाने पर (सुभेक्षा, विचारणा, तनुमानसा, सत्वापत्ति ) । विषयों से असंग हो जाना, अन्तःकरण का समाधि में आरूण , आसक्ति।

6. बाहर, भीतर किसी पदार्थ का भान नहीं होता– **' ब्रम्हविद् वरीयान' ।** मुर्दा तुल्य हो जाना– **ब्रम्हविद् वरिष्ठ।**

**तूर्यावस्था**– अहंकार का त्याग, चित्त का विलीन हो जाना, समता की उत्पत्ति, चित्त एकाग्र , साक्षी भाव, जाग्रत अवस्था, चित्त– धीर, स्वप्न, शान्ति। **सुषुप्ति से परे– मूढ़। जाग्रत, स्वप्न, सुषुप्ति से परे– चित्त – मृत है।** पौरूष को **दैव** कहा जाता है, चैतन्य भाव स्वरूप प्रज्ञा पुरूष स्वयं प्रकाश सूर्य चेतन है। मानव जीव के लिये दो मार्ग हैं, पाप–पुण्य, सत् –असत्। यह मन किसी न किसी पर अवश्य रहता है। चक्षु बन्द करने पर भी अंधकार मिट जायेगा, तभी देह भाव चला जायेगा, चिदाकाश में देव दर्शन होता है, प्रकाश चिदाकाश से आता है। सकल रूप दृश्य के अलावा मन का कोई स्वरूप नहीं है, द्रष्टा से दृश्य भिन्न नहीं है।

–ज्ञान का पहला लक्षण – शान्त स्वभाव, निराभिमान

–विज्ञान का स्वभाव– बालक वत्, उन्मवत्, जड़वत, पिशाचवत्

–भक्ति तीन प्रकार की होती है–

भक्ति का सत्वगुण

भक्ति का रजोगुण

भक्ति का तमोगुण

– सतोगुण – जो भक्त छिपकर साधना करता है, उसे ईश्वर की प्राप्ति शीघ्र होती है।

–रजोभाव– षोडशोपचार, माला फेरना,, रेशमीवस्त्र धारण करना, एवं माला पहनना इत्यादि।

– तमोगुण– डाकू जैसा मारो, काटो अभिभाव।

पानी में डूबने पर बाहर निकलने की जैसी छटपटाहट होती है, वैसी पूर्णत्व प्राप्त करने के लिये होनी चाहिये। जब लिंग , गुदा और नाभि से मन हट जाता है, तब प्रकाश के दर्शन होते हैं। जब मन पाँचवी भूमिका में आता है, तब उसे ईश्वरी प्रसंग सुनने की व्याकुलता हो़ती है। सहस्त्रार में जाने के बाद 21 दिन में मृत्यु हो जाती है। ईश्वर कोटि या

अवतारी पुरूष ही वहाँ से लौट सकता है।

संसार में इस प्रकार रहना चाहिये—जैसे बड़े लोगों की नौकरानियाँ उनकी आज्ञानुसार सारा काम करती हैं किन्तु सोचती हैं कि यह मेरा घर नहीं है। मन उनका अपने घर पर लगा रहता है। स्थूल, सूक्ष्मकारण, महाकारण। महाकारण में जाकर केवल देवता लौट सकते हैं। अवतार के साथ जो आते हैं, नित्य शुद्ध होते हैं। मैं अवतार के साथ आया हूँ ( गुरूजी )। कामिनी कंचन, भोग—वासना एवं विषय तृष्णा, इनसे दूर रहकर साधना करनी चाहिये। सिद्ध हो जाने पर इनका प्रभाव नहीं पड़ता। एक हाथ ईश्वर चरणों पर, दूसरा हाथ कर्म में । कर्म पूरा हो जाय तो दोनों हाथ ईश्वर चरणों में रखकर लग जाएं। लोग जनक—जनक कहते हैं, पहले जनक ने क्या किया या वैसा करके देखो, फिर जनक बनोगे। अभी ईश्वर दूर है, ज्ञान होने पर, पास में, ईश्वर अंदर हो जाता है। ईश्वर प्राप्ति के लिये प्रेम और अनुराग होना चाहिये। विषय की आसक्ति जितनी घटती जायेगी, बुद्धि उतनी ही आत्मस्थ होती जायेगी, आत्मज्ञान बढ़ता जायेगा। विषयासक्ति संपूर्ण नष्ट होने पर आत्म ज्ञान होता है। आत्मा— अलग एवं शरीर—अलग दिखाई पड़ते हैं। ईश्वर प्राप्त होने पर बुद्धि समाप्त हो जाती है, देह के अन्दर सुख, दुःख का अनुभव नहीं होता, वह जीवन मुक्त हो जाता है। आज इतना ही पर्याप्त है।

सबका कल्याण हो, सब प्रकार के दुख, आपत्ति, विपत्ति, संकट शान्त हों, सब प्रकार की शान्ति आपको प्राप्त हो, जीवन सफल हो, जीवन यशस्वी हो, जीवन निर्मल हो और आप सतपथ पर अग्रसर हो ऐसा, मेरा स्नेहपूर्ण आशीष है । शांतिः.......शांतिः.....शांति। इत्यलम्।

**सभी खिन्नता<br>और विषाद को<br>विरोधी शक्तियाँ ही पैदा करती है,<br>उन्हें तुम्हारे ऊपर उदासी<br>फेंक कर जितनी<br>खुशी होती है उतनी<br>और किसी चीज से<br>नहीं होती।**

# शिष्यानुभव एवं संस्मरण

## दिव्य दर्शन

**(1)** दि0 25/11/2012 की सुबह 5 बजे गुरूजी दुकान पर बैठे हुये थे। मैं रो पड़ा, आजकल गुरूजी मुझे चक्कर आते हैं और ऐसा लगता है कि मैं गिर जाऊँगा। चलते वक्त कोई मुझे पकड़ ले, तो ठीक है। पूज्य0 गुरूजी बोले– ये सब कर्म भोग हैं, समाप्त हो जायेगा। दिव्याम्बु निम्नजन पढ़ता हूँ, तो अपने आप से बाहर हो जाता हूँ। दि0 21/3/2012 पूरे शरीर में पूज्य0 गुरूजी का दर्शन हुआ, मेरे शरीर के अन्दर से आवाज सुनाई देती है, जैसे बाल्यकाण्ड़ रामायण का श्लोक, गुरूजी की आरती आदि, सिर पूरा ज्योति से भर गया, रात भर सोया नहीं उसी में मगन रहा। दि0 12/5/2013 को पूज्य. गुरूजी पूर्णरूप से सामने दिख रहे थे, दो दिन से ज्योति– ही ज्योति दिख रही थी। सिर से पैर तक उसी ज्योति के घेरे में मैं बैठा रहा।

**गजानन बड्यालकर, गवली पारा, दुर्ग छ.ग.**

**(2)** दि0 20/7/2010 पूज्य0 गुरूजी को याद करने पर करीब 8–10 बार गुरूजी का चेहरा सामने आ जाता है, और मैं मस्ती में डूब जाता था। गुरूजी से मन में बाते करने पर गुरूजी की स्पष्ट वाणी सुनाई देने लगती जिसके कारण आनन्द और भी बढ़ जाता था।

दि0 05/11/2010 आज गुरूजी ध्यानावस्था में मोबाइल के अन्दर दोनों हाथें से आशीष देते हुये दर्शन दिए दि0 03/12/2010 को एक तीव्र तरंग हृदय के पास से उठकर पूरे शरीर में फैल गई, यह प्रक्रिया करीब 2–3 घन्टे तक चली। मुझे लगा कि गुरूजी यह सब करा रहे है। गुरूजी की आकृति शुन्य में आशीष की मुद्रा में बनी। मेरे अन्दर से मेरा शूक्ष्म शरीर बाहर निकला और और हल्का होकर शून्य में ऊपर उठने लगा, जैसे शरीर में कोई भार ही न हो, फिर हृदय से आवाज आई आज के लिये इतना ही, फिर क्रिया बन्द हो गई।

दि0 25/3/2011 आसमान में बहुत सारे तारे कुछ त्रिभुज, कुछ अलग–अलग आकृति के तीव्र प्रकाश के चमकने लगे, आसमान में छाई बदली को चीरकर सूर्य बहुत ज्यादा जाज्वल्यमान /चमकने लगा। मेरे भ्रूमध्य में गहरा स्पंदन हुआ, मैं हाँफने लगा और गुरूजी से कहने लगा, तभी आसमान में लाल रंग के सूर्य भगवान प्रकट होकर दर्शन दिये।

दि0 15/11/2011 गुरूजी का दिव्य समारोह हो रहा है। हजारो भाई बहन समारोह मे उपस्थित हैं। मैंने गुरूजी की मूर्ति से कहा– गुरूजी आप के नख दिव्य ज्योति स्वरूप हैं, दर्शन कराइये, बोलते ही गुरूजी के चरण कमल सजीव हो गये तथा हर उंगली ज्योति

स्वरूप जगमगाने लगीं। मैनें प्रार्थना के साथ कहा– गुरूजी, आपका स्वरूप क्या है ?दर्शन कराइये, तुरन्त गुरूजी की मूर्ति गोल्डन लाईट मे कृष्ण जी के दिव्य स्वरूप में परिवर्तित हो गई। जिस दर्शन को मैं अपलक निहारता रहा। दि0 1/8/2012 गुरूजी विशाल रूप में दर्शन दिये, गुरूजी की याद और मस्ती में रहने लगा। गुरूजी का बार–बार दर्शन होने लगा। अब सब कुछ छोडकर उनके भरोसे रहने लगा। दि0 23/10/2012 को विजय दसवीं के दिन गुरूजी दर्शन दिये, बातचीत किये, फिर गुरूजी flash light में दिव्य स्वरूप में दर्शन दिये। दि0 3/12/2012 माँ राधे कृष्ण की अलग –अलग मूर्तियाँ थीं जिन्हें मैं प्रणाम कर रहा था। बाद में सजीव होकर राधा कृष्ण रास करते हुये दिख रहे थे। मैं दर्शन कर रहा था। दि0 9/3/2013 गुरूजी आसन में बैठे थे। सभी लोग पूजा कर रहे थे पूज्य0 गुरूजी को याद कर मैं अत्यन्त व्यग्र हो रहा था। गुरूजी प्रकट हो गये, 5 मिनट तक मुँह और आँख हिला–हिला कर बोल रहे थे। आवाज सुनाई नहीं दे रही थी, किन्तु मन से आवाज आई कि गुरूजी बोल रहे हैं मैं तुम लोगों के पास हूँ।

**जय प्रकाश मिश्रा गेवरा रोड़, छ0 ग0**

## दिव्य आशीर्वाद

(3) पू0 गुरूजी के सम्पर्क में आने का श्रेय मैं अपने फूफाजी प्रो0 बाला साहेब देशपाण्डे जी को देती हूँ। गुरूजी से दीक्षा मिलने के बाद मानों जिन्दगी की दिशा ही बदल गई। मैं बहुत छोटी थी, पर गुरूजी जब कुछ बतलाते थे, वह बहुत अच्छा लगता था। गुरूजी हमेशा ध्यान करने पर जोर दिया करते थे। कहते थे कि दिन में जबभी समय मिले, गुरूजी को याद कीजिये। जरूरी नहीं कि आप ध्यान सुबह ही करें। हर वर्ष गुरू पूर्णिमा पर अलग–अलग जगहों पर जाने का अवसर मिलता था। कभी रायपुर, तो कभी इन्दौर, तो कभी ग्वालियर, तो कभी मुंगेली गुरू पूर्णिमा पर्व होता था। कॉलेज जाने के बाद थोड़ा सम्पर्क कम हो गया, परन्तु जब भी मुंगेली जाना होता था और अगर गुरूजी मुंगेली आश्रम होते थे, तब मैं उनके दर्शन के लिये जरूर जाती थी। डर भी लगता था क्योंकि गुरूजी कभी – कभी डॉटते भी थे कि गुरूजी को भूल गये। बोला था कि रोज ध्यान किया करो। बहुत आश्चर्य होता था कि गुरूजी को कैसे पता चल जाता है ? गुरूजी क्या हैं ?यह समझने का सामर्थ मुझमें नहीं थी। किन्तु इतना अवश्य है कि हमें गुरूजी के रूप में एक दिव्य शक्ति के सम्पर्क में आने का ईश्वर ने एक अवसर प्रदान किया है। गुरूजी का हमारे जीवन में महत्वपूर्ण स्थान है। अपने शिष्यों के लिये गुरूजी का आशीर्वाद हमेशा बना रहता है। हमको उनसे सद्बुद्धि, योग्य

र्निणय लेने की क्षमता, विपरीत परिस्थितियों से लड़ने की ताकत सदैव प्राप्त होती है। यह मैनें अपने अनुभव से सीखा है। शादी के बाद दिया हुया उनका आशीर्वाद मुझे हमेशा याद रहेगा। मेरे बेटे श्रेय के जन्म के समय सिजेरियन ऑपरेशन की पूरी तैयारी के बाबजूद मैने गुरूजी को पूरी श्रद्धा के साथ पुकारा और जब डिलेवरी सामान्य हो गई, तब डा0 आश्चर्य चकित हो गये थे। मेरी बेटी के समय जब मुझे हरपिज जैसी बिमारी हुई थी, मुझे अलग कमरे में रखा गया था, तब वे गुरूजी ही थे, जो हमेशा मेरे पास रहते थे और मुझे धीरज दिया करते थे कि सब कुछ ठीक हो जायेगा। मेरी सबसे प्रिय सहेली निक्की के आखरी समय में गुरूजी ही थे जिन्होनें मुझे बुम्बई में बैठकर नागपुर के हॉस्पिटल में भर्ती निक्की से मिलवाया। निक्की के मृत्यु के बाद भास्कर दादा से मेरी गुरू बन्धु कहकर पहचान कराई। भास्कर दादा मेरे रिश्ते में हैं, जिन्हें मैं बचपन से जानती हूॅं, पर गुरू बन्धु करके उनसे तथा नन्दा बहन से मिलाने का श्रेय सिर्फ गुरूजी को है। दादा और बहन की वजह से मुझे बहुत सारी नई बातों का ज्ञान हुआ। मैंने अपने आपको गुरूजी के और नजदीक महसूस किया। उन्होनें मुझे विष्नु जी के रूप में दर्शन दिये। पिछले साल जब मेरी मॉ मृत्यु शैय्या पर थी , गुरूजी आखिरी सॉस तक हॉस्पिटल में बेड़ के पीछे खड़ै थे और क्या –क्या लिखूं मेरा जीवन ही गुरूमय है। मैं उनसे रोज एक मित्र की तरह सारी बातें बाँटती हूँ। जय गुरूजी ।

**ममता पुजारी, मुम्बई**

## शिष्यों की डायरी से

(1)दिनांक 05.11.1996 स्थान : श्री सद्गुरू आश्रम, मुंगेली

हम लोग लगभग 11 बजे प्रातः गुरूजी के पास पहुंचे। गुरूजी आराम कर रहे थे। गुरूजी 11.15 बजे शौच के लिए उठे। अशोक भैया ने हमें बाहर जाने को कहा। हम लोग आश्रम के बरामदे में बैठ गये। इसी बीच अशोक भैया भी वहाँ आ गये और कुछ कालूपुर (गुरूजी का पैतृक गाँव) से संबंधित बातें करने लगे। इस वार्तालाप में श्री गुरूजी के संबंध में यह कहा गया कि– श्री गुरूजी Foreigner हैं, अतः समय को अत्यंत महत्व देते हैं, इसीलिए श्री गुरूजी काम की बात करने के बाद आने वाले व्यक्ति को अपने पास रूकने नही देते। यद्यपि कई लोग इस बात को न समझकर बुरा मानते हैं ।अशोक भईया ने बताया कि पहले वे ही श्री गुरूजी के पास जाते थे और तत्काल श्री गुरूजी से मिलकर वापस आ जाते थे। लगभग 20 मिनट पश्चात हम लोग श्री गुरूजी के पास पहुँचे। अशोक भैया ने बताया कि मनोज एवं आनंद आये हुये हैं। श्री गुरूजी ने कहा– कैसे आना हुआ? मनोज ने कहा– गुरूजी दीपावली के अवसर पर मैं अपने गाँव बाँकी (मुंगेली) आया हूँ। श्री गुरूजी

बोले– इस समय कहाँ हो? मनोज बोला– गुरूजी बाँकी में हूँ। श्री गुरूजी बोले– अभी पढ़ रहे हो। मनोज ने उत्तर दिया– हाँ, गुरूजी। इतने में गुरूजी ने आनंद से पूछा–तुम कहाँ हो?आनंद ने उत्तर दिया– शहडोल में गुरूजी। श्री गुरूजी बोले– नौकरी मिली कि नही?आनंद ने उत्तर दिया– नही गुरूजी, अभी तैयारी कर रहा हूँ, P.S.C. की। श्री गुरूजी बोले–B.S.C. की, आनंद ने कहा– नही गुरूजी P.S.C. की ( Public Service Commission)। श्री गुरूजी बोले– हाँ, ठीक है, हो जायेगा....... ठीक है, जमाओ। तुम्हारी चिट्ठी मिली थी। श्री गुरूजी बोले– आगे का क्या प्रोग्राम है?हम लोगों ने कहा– गुरूजी, हम लोग बॉकी जा रहे हैं।

<u>(2)दिनांक : 06.11.1996</u>

हम लोग लगभग दोपहर 12:15 पर मुंगेली आश्रम पहुँचे। श्री गुरूजी सो रहे थे। मनोज एवं आनंद बैठ गये। लगभग दोपहर 12:45 पर अशोक भैया ने श्री गुरूजी से पूछा– खाना लगवा दूँ। श्री गुरूजी ने कहा– हाँ। श्री गुरूजी उठकर बैठ गये। रामशरण ने भोजन का टेबल लगा दिया। भाभी जी ने भोजन की थाली लगा दी। श्री गुरूजी ने खाते समय कहा कि यह हलवा ठीक नही है। हलवा मतलब हलवा.......। हलवा में दाना नही होना चाहिये। यह ठीक से पचता नही है। भोजनोपरान्त श्री गुरूजी के दाँत मनोज ने पकडकर पानी में डाल दिये। फिर मनोज, आनंद, भाभी जी, रामशरण, गुड़िया आदि सभी ने श्री गुरूजी ने चरण. स्पर्श किये। श्री गुरूजी ने ढेर सारे आशीर्वाद दिये। फिर श्री गुरूजी लेट गये। भाभी जी ने श्री गुरूजी से कहा– मनोज एवं आनंद आये हुये हैं। श्री गुरूजी ने आशीर्वाद दिया। श्री गुरूजी ने कहा– मनोज, शहडोल गुरूपर्व (1996) कैसा रहा?मनोज ने कहा– अच्छा रहा गुरूजी। गुरूजी ने कहा– हाँ बहुत अच्छा था, किसी को कोई शिकायत नहीं हुई। भोपाल वालो ने आप लोगों को पहले से निमंत्रण दे दिया है। आप लोग सात लड़के पहले से भोपाल पहुँच जाना। आनंद ने कहा– हम लोग राय साहब से मिले थे। श्री गुरूजी बोले– हाँ, वहाँ का मुखिया राय है, लेकिन मुख्य मुखिया एम.पी. सिंह है। मेरे सभी शिष्य हैं, आई.जी., डी.आई.जी., डी.एस.पी., सी.एम.ओ., बी.डी.ओ........... डॉक्टर्स आदि सभी हैं, क्या वे पागल हैं? नहीं..................। कल ही, मेरे पास चौहान (आई.जी.) आये हुए थे, पेण्ड्रा से। मैने उन्हें ठाकुर साहब कहा। मैने चौहान भी नही कहा– ठाकुर साहब कहा... कहकर श्री गुरूजी हँसने लगे। मैं अपनी सब बातें अंदर रखता हूँ। मेरा यह तीसरा जन्म है। यह कोई बताता नहीं है। मैं इस जीवन में पाँच बार मर चुका हूँ। तीन वर्ष में माँ के मरने के बाद मैंने सब छोड़ दिया। नौ वर्ष में कुण्डलिनी जागृत हो गई, पढ़ाई लिखाई सब छूट गई,

इसलिए तो मैं आपको मना करता हूँ ; क्योंकि इसमें नशा चढ़ता है, व्यक्ति को एक ही धुन रहती है, फिर कहाँ पढ़ाई–लिखाई...... सब छूट जाती है। मैं 1937, 38 को मरा। आनंद बोला– नही गुरूजी, 1939 को जब आप 31वे वर्ष में थे। गुरूजी ने कहा– हाँ, बराबर है। 1983 में, दुर्ग में जब आप संगीत सुनकर घर की तरफ दौड़े थे। श्री गुरूजी ने कहा– हाँ........ ...। आनंद ने कहा– गुरूजी जब आप शहडोल में थे तो आपका सिर अत्यंत गर्म हो जाता था तो आप नल के नीचे अपना सिर रखे रहते थे। श्री गुरूजी बोले– हाँ–हाँ बराबर.........। श्री गुरूजीने कहा–एक बार वर्धा में भी ऐसा हुआ, धर्माधिकारी वह जो लड़का आया था, उसका भी था। मैने कभी मॉगा नहीं, पानी तक नही माँगा। मै गाँव के बाहर रहा करता था। लोग कभी चना, चूड़ा (सूखा पोहा), दूबा (घास), बेर, फल आदि, सूखा आलू, लौकी आदि खाया करता था। मैं कच्चा भोजन ले लेता था जिसे पका कर खाता था। लेकिन मैं रातों जागता था, लोग घर में सोते थे, मैं बाहर धूमता रहता था, नींद ही नही आती थी। मेरा सभी अनुभूत है, मुझे विश्व में कहीं भी खड़ा कर दो, भारत में ही नहीं बल्कि विश्व में कहीं भी। जब मैं पूछूँगा तो जबाब नही मिलेगा। आनंद ने कहा– गुरूजी आपने छः अक्टूबर, ''भारत आगमन दिवस पर'' लगभग आधा घंटा प्रवचन दिया। पहले 20 मिनट तक माइक लगा था कि बाद में हटा दिया गया। श्री गुरूजी बोले– अरे! यह ठीक नही हुआ, माइक हटाना नहीं चाहिए। श्री गुरूजी बोले– मैंने समाधि के संबंध में बोला। समाधि को रसगुल्ला समझते हैं। मेरा जन्मतः है, मेरे कई जन्म बीत चुके हैं। आनंद ने कहाः गुरूजी हम लोगों ने लगभग 9 केसेट्स एकत्र किये हैं। सत्यमेव जयते, मुक्ति के प्रकार षट . संपत्ति, वर्धा, रायपुर आदि सभी केसेट्स हम लोग के पास है। श्री गुरूजी ने कहा– यह बहुत अच्छा है ये सभी केसेट्स बहुत अच्छे हैं। षट. संपत्ति कसेट् बहुत अच्छा है, मुझे याद है। इतने में भाभी जी ने हमें भोजन के लिए बुला लिया। श्री गुरूजी ने कहा हाँ ठीक है भोजन कर लो।

(3) दिनांक : 07.11.1996

आज सुबह श्री गुरूजी बैठे हुए थे। मैं और मनोज ने श्री सद्गुरूजी का चरण– स्पर्श कर आशीष प्राप्त किया। मैने श्री गुरूजी से कहा– गुरूजी, सत्यवती खरे (शहडोल) ने श्री गुरूजी के चरणों में 50 रूपये अर्पित किये हैं। सुनकर, श्री गुरूजी ने आशीष दिया और कहा– मैंने उसका नाम 'श्रद्धा' रखा है। साथ में मैंने भी कुछ रूपये अर्पित किये यह कहा तो श्री गुरूजी हँस कर बोल उठे– अच्छा, आनंद ने भी दिया है। श्री गुरूजी ने कहा कि श्री गुरू प्रसाद जी को मेरा आशीष कहना और वे दीक्षित परिवार को साथ लेकर चलें, ऐसा भी कहना। मैंने श्री गुरूजी के कहा– कि आजकल उनके गुरू चर्चा के दौरान आँसू निकलते

रहते हैं। तब श्री गुरूजी ने कहा कि वह मेरा 24 दिसम्बर 1974 से शिष्य है, उसका उसी दिन हो गया था। अब ऐसे लोग rare हैं। अब योग का समय नहीं है, समाधि तो किसी को लगना नहीं है, नशा चढ़ेगा, पागल बनोगे। वह आदमी संसार के लिए बेकार हो जाता है। खूब संपत्ति हो, आश्रम हो। नही तो मुझे सेवा करना पड़ेगा। इसलिए 15–20 मिनट अभ्यास करो। श्री गुरूजी को याद कर अपना काम करो। दोपहर के भोजनोपरांत श्री गुरूजी ने कहा– आनंद 2 बजे चले जाना वहाँ से 5 बजे गाड़ी मिलेगी। इतना कहकर श्री गुरूजी लेट गए। मैं श्री गुरूजी का हाथ दबाने लगा। अरे! यह काम तो रवि का है। वह बहुत बदमाश है और चालाक भी है। लेकिन हमारे लिए तो अच्छा है। हमेशा हंसता रहता है। अभी शहडोल में भी वह भूला नहीं था तुरंत हाथ दबाने लगा। मैंने कहा– हाँ गुरूजी, वह कहता है कि यदि श्री गुरूजी नाराज है तो उनके हाथ दबाने लगो तो वे खुश हो जाते हैं। श्री गुरूजी हंस पड़े.........। बराँव (रीवा) में वह बहुत रहा है। मैं पुनः बोला– गुरूजी, रवि बता रहा था कि आपने एकबार उसे खूब डाँटा कि गुट बनाते हो, मुझे समझाते हो। जबकि मैं तुम्हारे बाप को समझाता हूँ। श्री गुरूजी हँसने लगे.......। श्री गुरूजी बोले–शहडोल का गुरूपर्व बहुत अच्छा था। मनोज एवं उसके पिता को श्रेय मिलना चाहिए। उन्होंने काफी कार्य किया। (इस काल में मनोज, मुंगेली बाजार में Greeting लेने गया हुआ था ) श्री गुरूजी बोले– रायपुर में बहुत से पंथ हैं, वे सभी मेरे पास आये, खूब संतुष्ट होकर गये। हाँ, श्यामाचरण के एक रिस्तेदार को मैंने भगा दिया था। कारण कि वे घमंड से बोल रहे थे कि मैं श्यामाचरण शुक्ल का यह हूँ। मैंने कहा– मेरे लिए क्या.........मुझे क्या लेना–देना है। मैंने कहा– गुरूजी, श्शहडोल का गुरूपरिवार काफी बड़ा हो गया है। श्री गुरूजी ने कहा– हाँ, 150 लोगों का नाम लिखा गया है लेकिन संख्या 165 है। मैंने कहा– गुरूजी, जहाँ देखो वहीं गुरूभाई दिखते हैं। श्री गुरूजी ने पुनः कहा– हाँ ठीक है, पहले तुम लोग देखते थे तो कुछ लगाव नहीं था किन्तु अब प्रेम उत्पन्न होता है अच्छा लगता है..........। आगे मैंने कहा– गुरूजी हम लोंगो ने आपका पलंग, बिस्तर, चरणपादुका, मसनद आदि सभी मठ में रख लिया है। श्री गुरूजी बोले– वाह!....... सबका कल्याण हो गया। देखना अब सभी को नशा चढ़ेगा, तुम भी बचे रहना.........(हँसते हुए) वह तो आश्रम हो गया। मैंने कहा– हाँ, गुरूजी, हम लोगों ने वहाँ श्री सद्गुरू निवास का बोर्ड भी लगा दिया है। इतने में श्री गुरूजी ने दूसरा हाथ दबाने को दे दिया। लो, इसे भी दबाओ, नही तो यह नाराज हो जायेगा...........। थोड़ी देर बाद, बस ठीक है।

(4)दिनांक : 28.12.1996

आज शाम 4 बजकर 5 मिनट पर मैं मनोज के साथ गुरूजी के आश्रम पर पहुँचा। उस समय श्री सद्गुरू जी अमरूद खा रहे थे। खाते–खाते वे भाभी जी से कुछ बातें कर रहे थे। आज गुरूजी काफी चंचल और चपल लग रहे थे। वे स्वयं हंस रहे थे और हंसा रहे थे। अमरूद खाते–खाते वे कह रहे थे कि अब जो भी मिलेगा सब खायेगें। इसी बीच वे विवाहोपरांत एक मनुष्य के स्त्री के वश में हो जाने की प्रक्रिया को रामायण के एक दोहे से समझा रहे थे और साथ ही अभिनय भी कर रहे थे। उन्होने अनेक प्रकार की भाषाओं के माध्यम से कुछ बातें कहीं और हंसे । अमरूद खाने के बाद उन्होनें विस्किट खाने के लिए मना किया, लेकिन कुछ समय बाद बिस्किट माँगने लगे। बिस्किट लाने में देर हो जाने की वजह से उन्होनें भाभी जी को स्त्री की आवाज में चिढ़ाया। चाय पी लेने के उपरान्त मैंने गुरूजी को प्रणाम किया, लेकिन वे बातचीत में मग्न थे। कुछ समय के पश्चात भाभी जी के कहने पर पुनः प्रणाम किया, लेकिन इस बार भी गुरूजी ध्यान नहीं दिये। इसके कुछ समय पश्चात भाभी जी ने गुरूजी से कहा कि मनोज प्रणाम कर रहा है। गुरूजी ने पूछा–कौन?मैनें जवाब दिया मनोज गुरूजी बोले– अच्छा! बॉकी वाले कहा– जी गुरूजी। उन्होनें कहा कि क्या सिर को प्रणाम कर रहे हो। फिर तुरंत बोले–अच्छा मैं ही तुम्हे प्रणाम करता हॅू। यह सुनकर मैं चौक गया लेकिन गुरूजी जोर–जोर से हंसने लगे। इसके बाद उन्होने पूछा कि शहडोल से कब आये?मैंने कहा– 25 तारीख को। शहडोल वालों की कुशलता पूछने के उपरान्त गुरूजी बोलने लगे कि मैं 15 साल की उम्र में घर छोड़ा हॅू। अभी भी हमारी पैतृक संपत्ति है। मेरी माता के पास इतने सोना (Gold) था कि आज की कीमत में वह 50–60 लाख से ऊपर का रहा होगा। यह सब छोड़कर मैं घर से चला था। मैं 70 बीघा जमीन छोड़कर गया था। गुरूजी ने कहा कि मै हमेशा सच बोलता हूँ। मैंने सिर्फ एक बार झूठ बोला हॅू। मैंने सिर्फ एक बार झूठ बोला है 7 साल की उम्र में। उसके बाद से आज तक मैं झूठ नहीं बोला। मै सच बोलता हूँ, इसलिए लोग मुझे पागल कहते हैं। फिर गुरूजी ने मुझसे पूछा– क्यों, मैं पागल हूँ क्या ?मैंने उत्तर दिया– नहीं गुरूजी। फिर गुरूजी हॅसे और बोलने लगे कि मैं हिमालय को छोड़कर. पूरा भारत घूमा हूँ, लेकिन एक भी योगी नहीं मिले, उन्होंने कहा अनेक बाबा जी ऐसे हैं जो दिन में सन्यासी की तरह दिखते हैं, लेकिन रात को गृहस्थ हो जाते हैं। गुरूजी बोले–ऐसे बाबाओं को मैने अपनी ऑंखों से देखा है। उन्होनें कहा कि एक बार एक बाबा जी को मैने रंगे हाथों पकड़ा था, उसके बाद उसने अपने शिष्यों से मुझे पकड़वाने की कोशिश की लेकिन मैं भाग गया। गुरू जी बोले– आप हमारे शिष्य हैं, इसलिए आपको सावधान करना हमारा कर्तव्य है। गुरूजी बोले– तुम इन लोगों से बच के रहना। ये लोग चोरी तक कर सकतें हैं। सब चोर हैं, इसलिए इनसे सावधान रहना। गुरूजी बोले– अरे बाबा जी लोग क्या बताएंगें, इनके पास कुछ अनुभव हो, तब न। उन्होंने

कहा–मेरे पास अनुभव है। मैं पाँच बार मर चुका हूँ मैंने इस दुनिया को देखा है। आगे गुरूजी बोले– मैंने कभी तुमसे पूछा - कि तुम्हारे माता पिता कैसे हैं?कभी पूछा - कि तुम्हारे पास कितनी जमीन है, खेती कैसी है?कभी पूछा. कि कितने भाई बहन हैं। कभी पूछा कि पत्नी कैसी है। मैं बोलो– नहीं, गुरूजी। गुरूजी बोले–में कभी नही पूछता ये सब। मेरे को क्या मतलब। मैं अनावश्यक बातें नहीं करता। मैं सिर्फ काम की बातें करता हूँ। आप हमारे शिष्य हैं, आप आते हैं, हम आपका स्वागत करते हैं, आने का प्रयोजन पूछते हैं और आपसे बाते करते हैं। बस और हम इधर–उधर की बातें नहीं करते बिल्कुल नहीं। हाँ, इतना जरूर कह सकते हैं कि आपके घर वालों ने शहडोल में गुरू पर्व के सफल आयोजन में पूर्ण योगदान दिया। गुरू पर्व की सफलता में आपके घर का और कटनी वाले, इन्हीं दोनों का योगदान है। गुरूजी ने कहा– कटनी वाले ही हैं न। फिर तुरन्त उन्होनें कहा– नरसिंहपुर वाले। मैंने कहा– जी विनोद पाण्डेय। गुरूजी ने कहा, शहडोल का कार्यक्रम बहुत ही अच्छा रहा। न भूतो, न भविष्यति, इतना अच्छा कार्यक्रम न हुआ है और न ही होगा। गुरूजी ने कहा– अगले साल तो भोपाल में है। लेकिन शहडोल जैसा कहाँ।। उन्होनें कहा–देखो, यदि जीवित रहे, तो भोपाल जाएगे। उन्होने कहा– देखो कितने जल्दी समय बीत गया। मैंने कहा– कितने जलदी पाँच महीने गुजर गये। गुरू जी बताने लगे कि भोपाल में मेरे अनेक शिष्य हैं, अफसर हैं, इंजीनियर हैं, डायरेक्टर आदि। उसके बाद गुरूजी ने मुझसे पूछा कि तुम शहडोल में क्या कर रहे हो ? मैंने कहा– PSC की तैयारी कर रहा हूँ, गुरूजी। उन्होंने कहा– BSC की। मैने कहा– PSC की। गुरूजी बोले– अच्छा, अच्छा। फिर बोले– माफ करना, मैं पढ़ा–लिखा नहीं हूँ। लोग मानते ही नहीं कि मैं पढ़ा–लिखा नहीं हूँ। उन्होनें मुझसे पूछा कि क्या तुम मानते हो कि मैं पढ़ा लिखा नहीं हूँ। मैंने कहा कि मै तो मानता हूँ, लेकिन कुछ लोग कहते हैं कि ऐसा हो नहीं सकता। गुरूजी हंसे और बोले मैं सिर्फ घर पर ही पढ़ा हूँ, कभी स्कूल नहीं गया। गुरूजी ने कहा कि मेरी **English** के सामने बड़े–बड़े अधिकारी अंग्रेजी बोलने में हिच किचातें हैं और कहते हैं कि **English** आपकी **Mother tongue** है। गुरूजी हंसे और बोले कि वाह! लोग **English** को मेरी **Mother tongue** बताते हैं। फिर हंसे................। मैंने कहा– गुरूजी, आनंद मिश्रा बोलते हैं कि गुरूजी के सामने भूलकर भी **English** मत बोलना। बहुत ही जल्दी गलतियॉ पकड़ते हैं। यह सुनकर गुरूजी हंसे और बोले– बराबर। सही बात है, मैं बहुत जल्दी पकड़ लेता हूँ। ठीक कहा। फिर वे **English** के कुछ बारीक तथ्यों के बारे में मुझे बताये। इसके बाद गुरूजी ने मुझसे कहा कि आज ही मैं आकाश वाणी भोपाल से **Sub Inspector** के रिक्त पदो ंके बारे में सुना हूँ। तुम भी फार्म डाल दो। अच्छा रहेगा। मैंने कहा– जी गुरूजी। फिर उन्होनें कहा– **Inspector** माने निरीक्षक। **Circle** माने नगर अधीक्षक और **Superintendent** माने पुलिस अधीक्षक। गुरूजी बोले– तुम्हें तो पुलिस की नौकरी

पसंद है न। मैंने कहा– जी गुरूजी। गुरूजी बोले– तुम्हारा PSC में भी Call आ जायेगा। प्रयास करते रहो। इस बीच रामशरण ने गुरूजी से कहा–बब्बा, मलहम लगा दें। गुरूजी ने कहा– ठीक लगा सकोगे क्या। देखो ठीक से लगाना। गुरूजी मलहम लगवाने लगे। इससे पहले चर्चा के दौरान गुरूजी ने मुझसे पूछा– कि तुम इस बार जो मैं बोला हूँ, वह कैसेट सुने हो। मैनें उत्तर दिया -हम लोग हर गुरूवार को कैसेट सुनते हैं। गुरूजी बोले– बहुत अच्छा है। कैसेट जरूर सुनना। उसमें मैं बहुत अच्छी–अच्छी बातें बोला हूँ। मलहम लगवाते समय गुरूजी रामशरण से बात करने लगे और उसे बोले– तुम्हें सेवा का पुण्य जरूर मिलेगा। तुम जल्दी डॉक्टर बनो तो हम तुम्हारे पास जाया करें। चर्चा के दौरान गुरूजी मुझसे समय पूछे। मैंने जवाब दिया– पाँच। गुरूजी बोले –पाँच बजने में पाँच मिनट कम है। मैं बस वालों के लिए घड़ी पाँच मिनट फास्ट रखता हूँ। इसके बाद गुरूजी मुझसे बोले कि अब घर जाओ, ठंडी लगेगी। इसके बाद मैंने गुरू जी को प्रणाम किया। गुरूजी खूब आशीर्वाद दिये, जिसमें परीक्षा में पास होने, तरक्की करने आदि का आशीर्वाद शामिल था। इसके पश्चात गुरूजी ने कहा– ठीक है। आइये............आइये। तत्पश्चात मैं वापस आ गया।

<u>(5) 01 जनवरी 1997</u>

मैं 10:30 बजे आश्रम पहुंचा । गुरूजी विश्राम कर रहे थे। मैंने चरण. स्पर्श कर अपना नाम बताया। तत्पश्चात उन्होंने आने का प्रयोजन पूछा। मैंने कहा कि गुरूजी मैं शहडोल जा रहा हूँ। इसके पश्चात गुरूजी ने कहा–शहडोल के सभी लोगों को आशीष कहना। गुरूजी ने कहा, अच्छा है, आइये। इसके बाद मैं प्रणाम किया। गुरूजी आशीर्वाद दियें और मैं बस स्टैण्ड के लिए प्रस्थान किया।

<u>(6) दिनांक : 05.09.1997 (शुक्रवार)</u>

समाज में दो प्रकार के व्यक्ति होते हैं एक प्रकाण्ड विद्वान और एक साधारण। ऐसे दो प्रकार के समाज हैं। प्रकाण्ड विद्वान जो होते हैं वे इस प्रकार जीवन व्यतीत करते हैं कि 'काव्य शास्त्र विनोदेन कालो, गच्छति धीमताम् ' माने वे शास्त्र, मनीषियों के, ऋषियों के, साथ वेद–शास्त्र उपनिषद्, दर्शन इसमें अपने जीवन व्यतीत करते हैं। ये उत्तम प्रकार है। और दूसरे प्रकार में वे इसमें सब आ जाता है, ''व्यसनेषु–शराब, जुँआ, व्यमिचार, चोरी, छिनार, लड़ाई–झगड़ा करना, अपना खुद खाना, घर के लोग खाएँ या न खाएँ, खूब सोना और सबसे झगड़ा करना, ऐसी उनकी आदत हो जाती है। व्यसनेषू च मूर्खाणाम्– इनको क्या कहा गया– ये विद्वान है और ये लोग मूर्ख है। ''व्यसनेषु च मूर्खाणाम निद्रया कलहेन वा'' अब समझ में आया। व्यसन करना, शराब पीना, माँस खाना, किसी की न सुनना और अपनी मनमानी करना, और किसी से बनता नहीं और खूब खाना। घर में सबसे पहले खाना और न

मिलने पर बाहर जा कर खाएँगे। और सबसे झगड़ा करेगें बातों–बातों में। और खूब सोएगें। हमको कोई उठाना नहीं क्यों उठाया। इस प्रकार उनका जीवन व्यतीत करते हैं। इनको मूर्ख कहा। ये दो प्रकार के ऐसे लोग आपके सामने जगत में हैं। यहाँ सभी सेठ के लड़के रखैल रखे हैं ये अपने बाप को मार डाले। ये सब गुंडे थे। शराब, जुँआ, चोरी, छिनारी– ये चार चीज यहाँ प्रसिद्ध हैं। यहाँ आत्मविषयक चर्चा किसी को नही होना। और न किसी को पसंद और न ही कोई करता है, मुझे माफ करना। यह हर बस्ती में आपको कम ज्यादा मिलेगा। आनंद हो! माफ करना। आप जब आते हैं तो यहाँ कोई नही आता सिवाए शांतिलाल लूनिया एवं उसकी पत्नी के। ये समाज जो है यह इस प्रकार से है। विद्वान लोग कम है 1/4 कहिए आप। 3/4 मूर्ख है। मूर्ख आप समझ गए न। अभी बताया मैने। समाज के 3/4 भाग मूर्ख है और 1/4 विद्वान है और ''सिद्ध पुरूष एक ही है अभी जो आपके सामने बोल रहा है यह सिद्ध पुरूष है यह आत्म साक्षात्कारी है, अष्ट सिद्धि, नवनिधि हमने सब देख लिया। पैंतीस साल बाहर महाराष्ट्र में । यहाँ भी जीवित हैं लोग। करना। मैंनें रिद्धि–सिद्धि सब छोड़ दिया अहंकार में आता है–वह। इसे जड़ कहा आप पुण्यवान है जो आपको ऐसा गुरू मिला। यह कौन सा गुरू है–यह सतगुरू है। मुझको माफ करना, यदि अहंकार नही गया तो आपने साधना क्या किया। अहंकार ही नही गया तो क्या गया?मैं किसी से क्यों, कैसे, क्या, कब, कभी नहीं पूछता। आप गाली दें, अपमान करें, मारने को दौड़े, आप जैसा चाहें, मैं नहीं बोलता वैसा व्यवहार उल्टा करें। मैं मुस्कुरा दूगाँ, चुपचाप सुनुँगा। फिर भी आप आयेंगे, तो मैं आदर करूँगा। उसका कर्म उसके साथ, मेरा कर्म मेरे साथ ठीक है न। मुझको माफ कर देना। आज मैंने अपनी पोल खोल दिया है। आप देखते हैं जब–जब मैं प्रवचन करता हूँ वार्षिकोत्सव में अलग–अलग रहता है। बड़ा deep रहता है, बड़ा सहज रहता है सबको समझ में आता है और सभी धर्म के लोग रहते हैं। ऐसा कहीं और है क्या। और हर डिपार्टमेंट के हर रीजन के बड़े–बड़े लोग सब मेरे शिष्य हैं । यह अहंकार नही है। ये महान लोग हैं जो सेवा करते हैं। मैं तो सेवा करवाता हूँ। वो महान है– त्यागी वे लोग हैं। मैं तो भोगी हूँ। मुझको माफ करना–बस। आज आपको मिल गया। आप मानो या न मानो। समझो न समझो। आप क्या करते हैं, मैं कभी पूछताछ नहीं करता हूँ पूछा हूँ क्या? हमको कोई अधिकार नहीं किसी से पूछने का। किसी ने कहा– तुमको क्या करना है, फिर क्या करूँगा मैं? इससे पहले चुप रहना ठीक हैं। हम मूर्ख हैं। मैं पढ़ा–लिखा नहीं हूँ।

(दिनाँक 05.09.1997 शुक्रवार को श्री गुरूजी आश्रम (मुंगेली) में आनंद, विक्रम एवं मनोज के मध्य श्री गुरूजी की वार्तालाप का एक अंश)

**आनन्द मिश्रा शहडोल, म. प्र.**

# गुरूजी –एक गृहणी की दृष्टि से

श्रीमति कुसुम राय, भोपाल

यह उन दिनों की बात है जब मेरे पति रतलाम से स्थानांतरित होकर दुर्ग जिले की बालोद तहसील में पदस्थ थे। अक्सर शासकीय दौरों से लौटने में रात्रि में देरी होना आम बात थी। ऐसे ही एक दिन करीब रात्रि 12:30 के बाद हमारे सरकारी आवास के बाहर गाड़ी रूकी। हमारे चौकीदार परऊदादा ने दौड़कर दरवाजा खोला और अंदर आकर खबर की कि दादा आए हैं। मैंने बाहर जाकर देखाकि रायसाहब पू.गुरूजी का हाथ थामे धीरे धीरे गाड़ी से उतरने में मदद कर रहे हैं। अंदर हॉल में पू.गुरूजी का बिस्तर लगाकर विश्राम की सब व्यवस्था की। आधा धंटे के लगभग हम दोनों ने पू. गुरूजी के पास नीचे बैठकर सान्निध्य का सुख लिया। कम से कम मैं यह सोच रही थी कि कुछ दिन पिता समान स्नेही व्यक्तित्व का साथ मिलेगा।

अगले दिन से गुरूजी को नाश्ते व भोजन में क्या देना है, यह मैंने पू.गुरूजी से ही पूछ लेना उचित समझा। कम दूध की चाय शकरयुक्त, उसमें इलायची,दालचीनी जरा सी, स्वाद के लिए डाल कर तैयार की। गुरूजी ने जब –उत्तम है– कहा तो एकदम खुश हो गई मैं। मात्र 6–7 दिन ही गुरूजी ने हमें अपने सान्निध्य का अवसर दिया। इन कुछ दिनों में कभी कांदा बड़ा, तो कभी सूजी और बेसन से तैयार चीजें गुरूजी को पसंद आती थीं। एक दिन जब मैं किचन में भजिए तल रही थी तो पीछे से गुरूजी ने पूछा, क्या बना रही है?मैंने कहा, भजिए। बोल, थोड़ा उबला आलू मसलकर डालो, क्रिस्पी बनेंगे। मैंने वैसा ही किया। जब उन्होंने उसे टमाटर की चटनी के साथ खाया तो (बच्चे जैसे) खुश होकर कहा, उम्दा है, ऐसे ही बनाना।

पू. गुरूजी को पूड़ी एकदम कम सिकी जरा भी अच्छी नहीं लगती थी। मैं बोलता नहीं, ऐसा कहकर वह कभी जिक्र करते थे कि बेसन की बनी चीजें कम तला या कच्ची खा लेने से कष्ट होता है। कचौड़ी, कटलेट और कुरकुरी सिकी ब्रेड शौक से ग्रहण करते थे। गुरूजी महाराष्ट्रीय व्यंजनों के बारे में अक्सर चर्चा करते। उन्हें कुंदरू की सब्जी का जिक्र करते सुना। गुरूजी मजाक में कहते रूह को कुंद कर दे, वह कुंदरू। श्रीखंड एवं पोहा भी शौक से कभी ग्रहण कर लेते थे। पापड़, चटनी एवं जरा सा पुलाव भी कभी ले लेते थे। आम बहुत पसंद थे।

गुरूजी सदैव संतुलित एवं सादा भोजन ही पंसद करते थे। लेकिन अपनों का मन रखने को एवं परिवार की अन्नपूर्णाओं को प्रोत्साहित करने हेतु व्यंजन चखकर प्रशंसा कर मुदित होते थे। भोजन करते समय बातचीत पसंद नहीं थी। प्रत्येक कार्य में सुघड़ता और सफाई बहुत पसंद थी। उनकी धोती कुरता स्नान के बाद कैसे धोना, फटकार लगाकर एकदम सलवटें रहित सुखाकर तह लगाकर नियत स्थान पर रखना , यह सब उन्हें अच्छा

लगता था। पिंडली में बीच में कुछ त्वचा संबंधी परेशानी हो गई थी तो तेल लगाकर धीरे धीरे मालिश कर उठती तो कहते आप हाथ धो लीजिए।

1986 से1990 तक हम लोग सागर में रहे। इस समय हमें पू.गुरूजी ने बहुत समय दिया। इसके पूर्व 1981 से1983 तक छिंदवाड़ा रहे। पू. गुरूजी ने यहां भी हमारे परिवार पर स्नेहवर्षा और आशीष प्रदान किया। पू.गुरूजी भोजन समय पर कर लेने को प्राथमिकता देते थे। कभी आगन्तुक एवं स्नेही जन आ जाते और भोजन का समय बीत रहा होता तो हम निवेदन कर उन्हें बैठक में बैठाते और गुरूजी की थाली लगाकर सामने बैठकर, जब तक पूरा न हो जाए, बैठे रहते। गुरूजी भोजन समाप्ति तक कई बार, बढ़िया है, उत्तम है, बिलकुल ठीक ऐसे ही बनाना चाहिए, कहते। फिर जब बर्तन में हाथ धुलाते तो पू.गुरूजी दोबारा हाथ धोकर पानी आंखों पर लगाते, फिर माथे पर लगाते और कहते '' किस्मत की बात है, मालिक के हाथ है, अपनी क्या बिसात है'' और मुस्करा कर मेरी ओर देखते और इतने आशीष देते—आनंद हो, आनंदमंगल हो, अन्नपूर्णा सदा प्रसन्न रहे, यश, कीर्ति, स्वास्थ्य बना रहे, आदि अनेकानेक आशीष देते नहीं थकते थे। मैं भाव में आकर रोने लगती थी। गुरूजी कहते, अच्छा, अब आप भी भोजन करें। पश्चात् उनके दाँत धोकर डिब्बे में रखती थी। उन्हें मोगरे के फूल बहुत पसंद थे, दो चार तकिए के नीचे लाकर रख देती थी। वहीं बैठ जाती थी। कुछ देर बाद तकिए से सिर उठाकर देखते, कौन?आप भी भोजन करें। जाओ, 3बजे चाय पिएंगे। शाम को चाय, कभी बिस्किट, कभी सलोनी के साथ, लेकर थोड़ा घूमता हूँ कहकर बाहर टहलते थे। सागर की बात है, ज्येष्ठ का महीना बीत गया। बारिश आई नहीं। मैंने कहा, गुरूजी सूखा पड़ेगा, लगता है, बारिश तो हो नहीं रही। गुरूजी ने कहा, मेरे लिए बरसाती जूते ला देना। अगले दिन जूते खरीद कर लाए। शाम 4बजे के करीब नए बरसाती जूते पहन, गुरूजी लॉन में टहलने लगे। 10—15 मिनिट बाहर रहे, फिर घर में आकर बैठ गए,पुनः चाय पीने लगे। इतने में झमाझम बारिश हुई, काफी देर तक।

गुरूजी को एकदम कम तेल, धी का सादा, बिना मिर्च का, भोजन ही पसंद था हालांकि प्याज, लहसुन से कोई परहेज नहीं था। बाद के दिनों में दूध व दूध से बनी चीजें भी बंद हो गई थीं। टमाटर भी नहीं लेते थे। छिंदवाड़ा में बीकानेर मिष्ठान्न वाले की रसमलाई गुरूजी शौक से खाते थे। पू.गुरूजी के साथ ग्वालियर से हम लोग श्रीनगर गए थे। वहां रास्ते में ऊधमपुर में एक ढाबे में गुरूजी के लिए मूंग की दाल व कुरकुरी रोटी बनवाई थी। इतनी सरलता से ग्रहण की कि हमारी चिंता दूर हो गई। बाद में रास्ते में ढाबे पर एक —दो बार गाड़ी रोकी। हम लोगों के साथ गुरूजी ने भी सहज भाव से चाय पी, हालांकि उनके बर्तन अलग से साथ में थे, उसी ग्लास में उन्हें दी।

गुरूजी भजिए, गुलगुले,चना दाल की कचौड़ी,मैदे की खस्ता नमकीन, सलोनी, शाही टोस्ट, खीर भी थोड़ी चख लेते थे। उन्हें खजूरें भी पसंद आती थीं। किंतु समय गुजरने के साथ सब धीरे धीरे छूट गया। सूजी और रवा की जगह आटे का हलवा चाव से ग्रहण करते थे। कहने लगते थे, सूजी सीमेंट है, जम जाती है पेट में। रोटी खाते ही पहले कौर में

यह बता देते थे कि आटा सही तरह से गूंथा गया है या नहीं।सही तरह से फूली हुई रोटी की भी चर्चा करते थे। कहने का तात्पर्य है कि रसोई में भोजन किस भाव व प्रक्रिया से तैयार किया है, उन्हें पता चल जाता था। कभी चाय के साथ या बाद में भी, कुछ हल्का सा तैयार करके दें, तो प्रेम से ग्रहण कर लेते थे और हम लोग खुश हो जाते थे। यह उनकी ही कृपा थी।

सागर प्रवास के दौरान हम लोग गुरूजी के साथ ओरछा गए, टीकमगढ़ और पन्ना भी गए। रात में सर्किट–हाउस में विश्राम करते। हम अपने परिवारिक धनिष्ठ मित्र, रिश्तेदार आदि को सूचना दे देते कि पू. गुरूजी साथ में हैं, तो वे टिफिन में बहुत धन्यभाग सराहते हुए भोजन आदि तथा चाय लेकर आते एवं गुरूजी द्वारा प्रेम से ग्रहण कर लेने पर भाग्य सराहते रहते कि आज धन्य हो गए। छतरपुर में श्री नारायण अग्रवाल जी, जो श्री मानस मर्मज्ञ रामकिंकरजी के शिष्य थे (अब नहीं रहे स्वर्गीय हैं), के यहां गुरूजी ने विश्राम किया। पूरा परिवार गुरूजी से अत्यधिक प्रभावित व श्रद्धा से ओतप्रोत रहा।

एक बार मांसाहार पर चर्चा चल रही थी। स्नेही शिष्य जन बैठे थे। मैंने कहा, गुरूजी, मैं माँस नहीं खाती। मैंने एक बार खरगोश को तैयार करते देखा तो मुझे बहुत दुख हुआ। गुरूजी कहने लगे, मत खाना बेटी, मुझे जीव सामने दिखता है, कभी नहीं खाना। गुरूजी कभी थाली में बहुत भोजन नहीं छोड़ते थे। परोसते समय ही, नहीं बाबा बस, कहते तो मैं कहती, गुरूजी हम खा लेंगे, आप छोड़ देना। तो अच्छा कहते और हम उसे प्रसाद स्वरूप ले लेते।

गुरूजी की याद में क्या लिखूं अनंत विस्तार है। मैनें तो एक बात यह जानी कि कर्त्तव्य संसार के लिए और भावनाएं  भवानी के लिए, यह जीवन जीने का सच्चा मंत्र है। मेरे पू. गुरूजी ने यह समझा दिया। पशु–पक्षी भी यह समझते हैं कि प्रतिदान की आशा नहीं करना। वह अपने बच्चों से कोई आशा नही करते। किंतु हम इंसान भी समझें। एक बार गुरूजी को मैं अपनी डायरी में से श्रीपाद् आद्यशंकराचार्य के द्वारा रचित छन्द की पंक्ति सुना रही थी– किं करोमि, क्वगच्छामि, किं गृहणामि त्याजामि, किं आत्मापूरितं (अब पूरा याद नहीं है)–सुनते ही गुरूजी बहुत खुश हुए, जैसे अपनी खुशी छिपा नहीं पाए और फिर जल में पत्ते पर तैरते हुए वासुदेव वाली बात सुनाई। बोले, यह तुमने कहाँ से संकलित किया। यह तो मैं खोज रहा था।

गुरूजी के पास जो स्नेही व शिष्यजन एवं जिज्ञासु, दर्शन व सत्संग प्राप्ति हेतु, आते थे एवं बाद के वर्षो में जो एक या दो सज्जन सदैव साथ रहते थे, उनके प्रति दिल की भावना ये रहती थी (गुरूजी की) कि उन्हें यथोचित आदर दें। समय पर स्वल्पाहार, समयानुसार भोजन, चाय आदि अवश्य दिया जाए। ये उन आगंतुकों का नहीं अपितु गुरूजी का भी सम्मान था जिसका ह्रदय से पालन करने की भावना रही व प्रयास गुरूकृपा से ही पूर्ण होता रहा।

अध्यक्ष : 51319
कोषाध्यक्ष : 51007 (O)
: 51327 (R)

# ॐ श्री वासुदेव गुरुपरिवार आत्मोत्थान न्यास

बड़ा बाजार, मुंगेली 495334, जिला -बिलासपुर (म.प्र.)

क्रमांक .......... दिनांक .....................

## आंकडा 2012–13

| | |
|---|---|
| 16,73,568.25 | श्री पूंजी खाते जमा |
| 10,000.00 | श्री सस्पेंस खाते जमा |
| 81,106.00 | श्री मंदिर हाल मार्बल खाते |
| 43,460.00 | श्री महिला प्रसाधन निर्माण खाते |
| 3,000.00 | श्री नया गैस कनेक्शन खाते |
| 18,11,134.25 | |

| | |
|---|---|
| 1,48,958.42 | श्री पंजाब नेशनल बैंक मुंगेली (सेविंग खाता 2526000100108533) |
| 35,965.00 | श्री भारतीय स्टेट बैंक मुंगेली (सेविंग खाता 31505295999) |
| 12,11,332.00 | श्री एफडीआर खाते (SBI & PNB) |
| 2,00,00.00 | श्री मार्केट प्लस खाते (LIC) |
| 1,04,820.00 | श्री जीवन वर्षा खाते (LIC) |
| 3,484.00 | श्री टेलीफोन मोबाईल खाते |
| 41,527.00 | श्री दरी गद्दा रजाई खाते |
| 2,722.00 | श्री मंदिर घण्टी खाते |
| 6,930.00 | श्री बर्तन खरीदी खाते |
| 2,359.00 | श्री इलेक्ट्रिक पंप खाते |
| 9000.00 | श्री इनवर्टर खाते |
| 39,872.00 | श्री फर्नीचर लागत खाते |
| 100.00 | श्री सुगनामल तेजवानी राजीम |
| 500.00 | सुश्री डॉ. चन्द्रा रजक रीवां |
| | 18,07,569.42 |
| 3,564.83 | श्री पोते बाकी |
| | 18,11,134.25 |

वास्ते, ॐ श्री वासुदेव गुरुपरिवार आत्मोत्थान न्यास

कोषाध्यक्ष सचिव अध्यक्ष

## श्री वासुदेव गुरू परिवार आत्मोत्थान न्यास

मुंगेली

### आय—व्यय 2012—13

| क. | खाते का नाम | आवक | | जावक |
|---|---|---|---|---|
| | | मार्च 2012 से पूर्व | 2012—13 | |
| 1 | श्री अखण्ड ज्योत खाते | | 33989 | 2470 |
| 2 | श्री आरती दीपक खाते | | | 1210 |
| 3 | श्री चढ़ावा खाते | | 63777 | |
| 4 | श्री गुरू दीक्षा खाते | | 1002 | |
| 5 | श्री क्षि उद्यान खाते | | 106461 | 36232 |
| 6 | श्री मेन्टनेंस खाते | | 194331 | 51896 |
| 7 | श्री भोजन शाला खाते | | 192216 | 52650 |
| 8 | श्री महानिर्वाण खाते | | 8825 | 14425 |
| 9 | श्री मूर्ति प्रतिष्ठा भोजन खाते | | 11550 | 21345 |
| 10 | श्री गुरू पूर्णिमा महोत्सव खाते | | | 43400 |
| 11 | श्री भारत पर्दापण दिवस खाते | | | 3185 |
| 12 | श्री आवास निर्माण खाते | | 47909 | |
| 13 | श्री ध्यान कक्ष निर्माण खाते | 123450 | 32102 | 446463 |
| 14 | श्री ब्याज खाते | | 49448 | 2554 |
| 15 | श्री बैक कमीशन खाते | | | 220 |
| 16 | श्री न्यास प्रबंधन खाते | | | 31000 |
| 17 | श्री सेलरी खर्च खाते | | | 53000 |
| 18 | श्री लेबर खर्च खाते | | | 27020 |
| 19 | श्री विद्युत खर्च खाते | | | 10480 |
| 20 | श्री पोस्टेज खर्च खाते | | | 3675 |
| 21 | श्री मोबाईल रिचार्ज खाते | | | 1560 |
| 22 | श्री स्टेशनरी खर्च खाते | | | 300 |
| | योग— | **123450** | **741610** | **803085** |

| | |
|---|---|
| आवक— मार्च 2012 से पूर्व | 123450 |
| सत्र 2012—13 | 741610 |
| | 865060 |
| जावक — | 803085 |
| पूंजी खाते में जमा किया | 61975 |

वास्ते, ॐ श्री वासुदेव गुरूपरिवार आत्मोत्थान न्यास

कोषाध्यक्ष सचिव अध्यक्ष

# अनुदान देने वालों की सूची ता. 01.04.12 से 31.03.13 तक

| क्र. | नाम | स्थान | राशि |
|---|---|---|---|
| 1 | श्री गोदिया गुरू परिवार | गोदिया | 3000.00 |
| 2 | श्री आदित्य आकाश छितरका | गोदिया | 501.00 |
| 3 | श्री सिद्धान्त गगन छितरका | गोदिया | 501.00 |
| 4 | श्री कृषि उद्यान खाते जमा | | 15879.00 |
| 5 | श्री कृषि उद्यान खाते जमा | | 17298.00 |
| 6 | श्री कृषि उद्यान खाते जमा | | 900.00 |
| 7 | श्रीमती रूखमणी देवी लूनिया | मुंगेली | 11550.00 |
| 8 | श्री रवि पौराणिक | मुंगेली | 500.00 |
| 9 | श्री कृषि उद्यान खाते जमा | | 350.00 |
| 10 | श्री कृषि उद्यान खाते जमा | | 1920.00 |
| 11 | श्री कृषि उद्यान खाते जमा | | 1480.00 |
| 12 | श्री कृषि उद्यान खाते जमा | | 1832.00 |
| 13 | श्री बर्तन बिक्री खाते जमा | | 9561.00 |
| 14 | श्री कृषि उद्यान खाते जमा | | 900.00 |
| 15 | श्री उधोव पुरी गोस्वामी | बिलासपुर | 1500.00 |
| 16 | श्री प्रकाश मिश्रा | दुर्ग | 1000.00 |
| 17 | श्री वासुदेव गुरू परिवार | आमगांव | 3311.00 |
| 18 | श्री शांति लाल लूनिया | मुंगेली | 2500.00 |
| 19 | श्रीमती रूखमणी देवी लूनिया | मुंगेली | 2500.00 |
| 20 | श्री नरेन्द्र कुमार लूनिया | मुंगेली | 2500.00 |
| 21 | श्रीमती अनुपमा लूनिया | मुंगेली | 2500.00 |
| 22 | श्री मोहित लूनिया | मुंगेली | 2500.00 |
| 23 | कु. शचि लूनिया | मुंगेली | 2500.00 |
| 24 | श्री शहडोल गुरू परिवार | शहडोल | 54500.00 |
| 25 | श्री कृषि उद्यान खाते जमा | | 285.00 |
| 26 | श्री कृषि उद्यान खाते जमा | | 25961.00 |
| 27 | श्री ध्यान कक्ष निर्माण खाते जमा | | 7100.00 |
| 28 | श्री कृषि उद्यान खाते जमा | | 1700.00 |
| 29 | श्री कृषि उद्यान खाते जमा | | 385.00 |
| 30 | श्री कृषि उद्यान खाते जमा | | 700.00 |
| 31 | श्री कृषि उद्यान खाते जमा | | 1540.00 |
| 32 | स्व. श्री डा.व्ही. ई. शिन्दे | | 1000.00 |
| 33 | डा. श्रीमती सईदा शिन्दे | | 1000.00 |
| 34 | डा. श्रीमती नताशा राव | | 1000.00 |
| 35 | श्री भोपाल गुरू परिवार | भोपाल | 41460.00 |
| 36 | श्री डी.एस., कुसुम,शालिनी वलय राम | भोपाल | 1000.00 |
| 37 | श्री कमल सिंह | | 500.00 |
| 38 | श्री प्रखर साहू | | 1000.00 |
| 39 | श्री राजेन्द्र पटेल | पिपरिया | 500.00 |
| 40 | श्री प्रकाश मिश्रा | भिलाई | 1000.00 |
| 41 | श्री व्ही.एन.शुक्ला | भिलाई | 1000.00 |
| 42 | श्री शांति लाल लूनिया | मुंगेली | 500.00 |
| 43 | श्री संतोष कुमार त्रिपाठी | कोतमा | 500.00 |
| 44 | श्री वाल्मिक तिवारी | कोतमा | 500.00 |
| 45 | श्री ज्योतिर्मय दास गुरू परिवार | शहडोल | 1000.00 |
| 46 | श्री प्रमोद कुमार गुप्ता | पथरिया | 500.00 |
| 47 | श्री सुनील गुप्ता | पथरिया | 100.00 |
| 48 | श्री विष्णु तिवारी | शहडोल | 100.00 |
| 49 | श्री प्रभुनाथ सिंह बिसेन | शहडोल | 150.00 |
| 50 | श्री डी.वी. गुप्ता | शहडोल | 200.00 |
| 51 | श्रीमती हीरावती,शैलेन्द्र सिंह | जबलपुर | 200.00 |
| 52 | श्री गजानन वडलाकर | दुर्ग | 100.00 |
| 53 | श्रीमती तारा वर्मा | भोपाल | 250.00 |
| 54 | श्रीमती श्रद्धा खरे | शहडोल | 101.00 |
| 55 | सुश्री डा. चन्द्रा | रीवां | 1000.00 |
| 56 | श्री ग्वालियर गुरू परिवार | ग्वालियर | 10000.00 |
| 57 | स्व. श्री बाबू राव धर्माधिकारी | अमरावती | 500.00 |
| 58 | स्व. श्रीमती विमला बाई धर्माधिकरी | अमरावती | 500.00 |
| 59 | श्री कृषि उद्यान खाते जमा | | 199.00 |
| 60 | श्री शांति लाल लूनिया | मुंगेली | 101.00 |
| 61 | श्री अखिल तिवारी | पानीपत | 100.00 |
| 62 | श्री भरत भूषण तिवारी | नौवरोजाबाद | 1000.00 |
| 63 | श्री निखिल तिवारी | | 100.00 |
| 64 | श्री सुरेश मारोतराव फाउतेर | | 1001.00 |
| 65 | श्री संजय विजय कुमार चोरे | वर्धा | 211.00 |
| 66 | श्री राजेन्द्र प्रसाद, सुमित्रा शर्मा | इन्दौर | 5002.00 |
| 67 | सौ. रिना, नीतीनराव राउस | अमरावती | 3001.00 |
| 68 | डा.किरन वासुदेव देवरस | बिलासपुर | 11001.00 |
| 69 | कु. शचि देवरस | बिलासपुर | 1000.00 |
| 70 | श्री मुकंद कास्ट्रक्शन | शहडोल | 305.00 |
| 71 | सौ. सुनीता, उमेश देशमुख | वर्धा | 101.00 |
| 72 | श्री चंद्रसेन रोमन | ग्वालियर | 501.00 |
| 73 | श्री विकम शितोले | ग्वालियर | 501.00 |
| 74 | श्री दिलीप शितोले | ग्वालियर | 501.00 |
| 75 | श्री जय प्रकाश शुक्ला व परिवार | कोरबा | 5002.00 |
| 76 | श्री सुरेश मारोतराव फडटरे | वर्धा | 1001.00 |
| 77 | श्री प्रकाश केशव मुडे | अमरावती | 11001.00 |

| | | | |
|---|---|---|---|
| 78 | श्रीमती सुनीता ना पाडे | बडौदा | 2000.00 |
| 79 | श्री मोहन यादव राव देशपांडे | नागपुर | 1100.00 |
| 80 | श्री आकाश छितरका | गोंदिया | 2100.00 |
| 81 | श्री रीतेश अग्रवाल | गोंदिया | 1100.00 |
| 82 | श्री रमेश द्विवेदी | रायपुर | 101.00 |
| 83 | श्रीमती मनी जैन, श्रीमती प्रिया जैन | रायपुर | 2000.00 |
| 84 | श्री जय प्रकाश शुक्ला व परिवार | कोरबा | 1005.00 |
| 85 | श्री आर.के. दुबे | बिलासपुर | 2100.00 |
| 86 | श्री मधुकर नागरची | चांपा | 101.00 |
| 87 | संतोषी नागरे | दुर्ग | 101.00 |
| 88 | श्री डॉ. पवन सिंह नागरे | दुर्ग | 101.00 |
| 89 | श्री मयंक जमा नागरे | दुर्ग | 101.00 |
| 90 | सुलोचना नागरे | दुर्ग | 101.00 |
| 91 | श्री युवराज साहू | दुर्ग | 151.00 |
| 92 | श्री सारांश लक्ष्मीकांत सिरके | दुर्ग | 251.00 |
| 93 | श्री चढ़ावा खाते जमा | | 2491.00 |
| 94 | कु अरूषी शुक्ला | मुंगेली | 101.00 |
| 95 | श्री रामशरण यादव | मुंगेली | 500.00 |
| 96 | श्री निलेश शुक्ला | शहडोल | 500.00 |
| 97 | श्री कृषि उद्यान खाते जमा | | 725.00 |
| 98 | श्रीमती रूखमणी देवी लूनिया | मुंगेली | 8825.00 |
| 99 | ममता गोवर्धन | मुंगेली | 1500.00 |
| 100 | श्री डा. अखिलेश देवरस | विकासपुर | 1000.00 |
| 101 | श्री डा. वेद श्री तिवारी | इन्दौर | 1300.00 |
| 102 | श्रीमती प्राची शर्मा | इन्दौर | 200.00 |
| 103 | श्री विष्णु वासुदेव तिवारी | रायपुर | 500.00 |
| 104 | श्री हरीश गुप्ता | रायपुर | 151.00 |
| 105 | श्री राहुल मराठे | भोपाल | 5000.00 |
| 106 | श्री रजनीश,वीणा जैन | जबलपुर | 10000.00 |
| 107 | श्री संजय, राजेन्द्र, सीमा जैन | गोंदिया | 1001.00 |
| 108 | श्रीमती संतोष कैलाश छितरका | गोंदिया | 3100.00 |
| 109 | श्री राजीव जैन | जबलपुर | 600.00 |
| 110 | श्री विपिन कुमार जैन | रायपुर | 1001.00 |
| 111 | श्री विलय कुमार मालोदे | रोहा | 5001.00 |
| 112 | सुश्री चंदा रजक | रीवां | 5000.00 |
| 113 | श्री डा. एच.व्ही.खंडकर | ग्वालियर | 501.00 |
| 114 | श्री दिलीप शितोले | ग्वालियर | 500.00 |
| 115 | श्री विकम शितोले | ग्वालियर | 500.00 |
| 116 | श्रीमती हेमलता पिसाल | | 1125.00 |
| 117 | श्रीमती चिन्मई आग्निहोत्री | मुंबई | 1000.00 |

| | | | |
|---|---|---|---|
| 118 | श्री अमर एवं पूजा टोवले | देवास | 1100.00 |
| 119 | श्री सुनील चौधरी | इन्दौर | 501.00 |
| 120 | श्री शरद मंदसौर वाले | ग्वालियर | 500.00 |
| 121 | श्री आर.के.शिंदे | ग्वालियर | 101.00 |
| 122 | श्री ग्वालियर गुरू परिवार | ग्वालियर | 7240.00 |
| 123 | सौ अनिता | मुंबई | 500.00 |
| 124 | सौ. शीतल | मुंबई | 500.00 |
| 125 | श्री शिव कुमार पांडे | शहडोल | 1151.00 |
| 126 | श्री राम रहीस मिश्रा | रीवां | 500.00 |
| 127 | श्री आर.एन.शर्मा | रीवां | 500.00 |
| 128 | श्री आनंद प्रकाश शर्मा | रीवां | 1000.00 |
| 129 | श्री एम.के. शर्मा | रीवां | 251.00 |
| 130 | श्री लव सिंह | मुंगेली | 201.00 |
| 131 | श्री अजय मिश्रा | शहडोल | 100.00 |
| 132 | श्री राजीव भटली वाले | इन्दौर | 5000.00 |
| 133 | श्री शिवनारायण विश्वकर्मा | | 500.00 |
| 134 | श्री आर.एस.शर्मा | भोपाल | 10000.00 |
| 135 | श्री गोपाल वर्मा | रायगढ़ | 100.00 |
| 136 | श्री योगेन्द्र चौहान | भोपाल | 1100.00 |
| 137 | श्री संतोष पाण्डेय | शहडोल | 800.00 |
| 138 | श्री हिरा लाल चौहान | भोपाल | 1100.00 |
| 139 | श्री वीरचंद जैन व अतुल तिवारी | पेन्ड्रा | 5000.00 |
| 140 | श्री दीपनारायण पाठक | शहडोल | 501.00 |
| 141 | श्री रत्नाकर कुलकर्णी | वर्धा | 301.00 |
| 142 | श्री के.पी. जायसवाल | पेन्ड्रा | 501.00 |
| 143 | श्री रवि शंकर पाण्डेय | शहडोल | 500.00 |
| 144 | श्री श्याम नारायण पाठक | अनुपपुर | 500.00 |
| 145 | श्री सनत कुमार पाठक | शहडोल | 101.00 |
| 146 | डां. व्ही.ए.शिंदे | | 5000.00 |
| 147 | श्रीमती सईदा जी शिंदे | | 3000.00 |
| 148 | श्रीमती नताशा | | 2000.00 |
| 149 | रश्मि अम्यंकर | | 5000.00 |
| 150 | श्री निलय शिकोले | देहली | 500.00 |
| 151 | श्री आलोक एवं स्वीटी | दिल्ली | 5000.00 |
| 152 | कु नतलिया | दिल्ली | 1000.00 |
| 153 | श्री गिरधारी लाल कश्यप | पेन्ड्रा | 100.00 |
| 154 | सौ. सुमन चिचंपाले | भोपाल | 200.00 |
| 155 | श्रीमती सरोज विश्वकर्मा | पेन्ड्रा | 300.00 |
| 156 | श्री रजनीकांत तिवारी | | 100.00 |
| 157 | श्रीमती रमा वर्मा | रायगढ़ | 100.00 |

| | | | |
|---|---|---|---|
| 158 | श्री अथर्वस्वनिल मानेकर | जबलपुर | 501.00 |
| 159 | श्री सिध्देश, आयुषी,सोनल श्याम लोनारकर | बरावली | 251.00 |
| 160 | श्री विष्णु तिवारी | शहडोल | 200.00 |
| 161 | श्री जगदीश चंद्र बाजपेयी | धार | 2100.00 |
| 162 | श्री मनोज पाठक | शहडोल | 365.00 |
| 163 | श्री संदीप द्विवेदी | शहडोल | 50.00 |
| 164 | श्री विनोद पाठक | शहडोल | 500.00 |
| 165 | श्री संजीव पाठक | शहडोल | 500.00 |
| 166 | श्री ध्रुव शुक्ला | सतना | 1001.00 |
| 167 | श्रीमती सुषमा त्रिपाठी | रीवां | 1001.00 |
| 168 | श्री चित्रसेन पटेल | शहडोल | 150.00 |
| 169 | श्री डी.एस.कुसुम,शालिनी बलय राम | भोपाल | 1004.00 |
| 170 | श्री आशीष तिवारी | पंडरिया | 150.00 |
| 171 | श्री गिरीश देशपाडे | पूना | 1001.00 |
| 172 | श्री शिरिष देशपाडे | पूना | 500.00 |
| 173 | श्री आर.सी.मिश्रा | पेन्ड्रा | 1100.00 |
| 174 | श्री तारा वर्मा | | 1100.00 |
| 175 | श्री उधोव पुरी गोस्वामी | | 1551.00 |
| 176 | श्री डां रवि आचार्य | रायपुर | 300.00 |
| 177 | श्री जीतेन्द्र द्विवेदी | शहडोल | 501.00 |
| 178 | श्री राजेन्द्र मिश्रा | रीवां | 100.00 |
| 179 | श्री मिश्री लाल पाडे | रीवां | 100.00 |
| 180 | श्री दीपक शर्मा | शहडोल | 3700.00 |
| 181 | श्री प्रमोद गुप्ता | पथरिया | 500.00 |
| 182 | श्री राम बदन मिश्रा | रीवां | 101.00 |
| 183 | श्री गोविंद राम वर्मा | रायपुर | 301.00 |
| 184 | श्री धनराज वर्मा | रायपुर | 201.00 |
| 185 | श्री नामदेव वर्मा | सोंधड | 201.00 |
| 186 | श्री तुलसीदास ज्ञान चंदानी | रायपुर | 101.00 |
| 187 | श्री दिनेश चंद शुक्ला | शहडोल | 101.00 |
| 188 | श्री भोला प्रसाद पटेल | रीवां | 251.00 |
| 189 | श्री डां डी.पी. सिंह | रीवां | 1001.00 |
| 190 | श्री कमल सिंह, डां अरविंद | रीवां | 501.00 |
| 191 | श्री अंजनी प्रसाद तिवारी | रीवां | 101.00 |
| 192 | श्री डां प्रदीप जलगावकर | नागपुर | 11111.00 |
| 193 | कु. दिव्य श्री प्रकाश राजदेरकर | नागपुर | 15000.00 |
| 194 | कु. वेद श्री प्रकाश राजदेरकर | नागपुर | 5000.00 |
| 195 | श्री श्री निवास त्रिपाठी | शहडोल | 110.00 |
| 196 | श्री रामानंद ताम्रकार | मुंगेली | 501.00 |

| | | | |
|---|---|---|---|
| 197 | श्री चैतुराम पटेल | मुंगेली | 201.00 |
| 198 | कृष्णा, सौ. किरण करडे | भोपाल | 1002.00 |
| 199 | श्री राजीव पाठक | शहडोल | 500.00 |
| 200 | श्री रामरति पन्नालाल यादव | नागपुर | 101.00 |
| 201 | श्री संतोष कुमार त्रिपाठी | कोतमा | 501.00 |
| 202 | श्री प्रसाद कुलकर्णी | नागपुर | 500.00 |
| 203 | श्री लखन लाल साहू | पेन्ड्रा | 500.00 |
| 204 | श्री डा़ मोहन साहू | पेन्ड्रा | 200.00 |
| 205 | श्री राम किशोर दुबे | शहडोल | 150.00 |
| 206 | श्री सनजू भटजी वाले परिवार | इन्दौर | 100000.00 |
| 207 | श्री सूर्यप्रकाश सिंह | मुंगेली | 121.00 |
| 208 | ाोभा प्रजापति | भोपाल | 101.00 |
| 209 | मनीषा राजपूत | मुंगेली | 121.00 |
| 210 | श्री जीतेन्द्र कौशल | भोपाल | 220.00 |
| 211 | श्री प्रकाश मिश्रा | भिलाई | 5000.00 |
| 212 | श्री व्ही.एन.शुक्ला | भिलाई | 500.00 |
| 213 | श्री एम. व्ही. राव | बिलासपुर | 100.00 |
| 214 | श्री राजेश सोनकर | भिलाई | 151.00 |
| 215 | श्री भोपाल गुरू परिवार | भोपाल | 285.00 |
| 216 | श्री राजेन्द्र घनश्याम माहेश्वरी | दुर्ग | 501.00 |
| 217 | श्री गुरूप्रसाद पाण्डेय | | 100.00 |
| 218 | श्री राहुल श्रीवास्तव | शहडोल | 501.00 |
| 219 | श्री विजेन्द्र तिवारी | सतना | 500.00 |
| 220 | श्री रेखा मिश्रा | रीवां | 101.00 |
| 221 | श्री गुरू परिवार | वर्धा | 685.00 |
| 222 | श्री प्रदीप खान खोणे | वर्धा | 501.00 |
| 223 | श्री अरूण कुमार तिवारी | शहडोल | 501.00 |
| 224 | श्री प्रभुनाथ सिंह बिसेन | शहडोल | 101.00 |
| 225 | श्रीमती माई धर्माधिकारी | पुणें | 5000.00 |
| 226 | आराधना अनिल चौबे | पुणें | 501.00 |
| 227 | श्री अमित जहागिरपार | पुणें | 501.00 |
| 228 | श्री अतुल तिवारी | शहडोल | 501.00 |
| 229 | श्री वात्मिक तिवारी | कोतमा | 210.00 |
| 230 | श्री गितिका अभिषेक सिंह | रायपुर | 2001.00 |
| 231 | श्री दुर्गशंकर तिवारी | मुंगेली | 1000.00 |
| 232 | श्री मृगेन्द्र सिंह बघेल | रीवां | 5001.00 |
| 233 | श्री के. आर. रविद्रन | भोपाल | 1000.00 |
| 234 | श्रीकांत त्रिपाठी | शहडोल | 201.00 |
| 235 | श्री शांति पाडे | शहडोल | 201.00 |
| 236 | आकांश पाण्डे | शहडोल | 100.00 |

| | | | |
|---|---|---|---|
| 237 | श्री संजय चांदोरकर | बडौदा | 25000.00 |
| 238 | श्री डां विद्याकांत तिवारी | पेन्ड्रा | 110.00 |
| 239 | श्री डां यदु शुक्ला | इन्दौर | 501.00 |
| 240 | श्री प्रकाश लांजेवार | वर्धा | 101.00 |
| 241 | सौ. राखी राकेश बाबुलकर | जबलपुर | 500.00 |
| 242 | श्री लोकनाथ जायसवाल | दुर्ग | 100.00 |
| 243 | श्री मनोहर वडयालकर | दुर्ग | 100.00 |
| 244 | श्री गजानन वडलाकर | दुर्ग | 5000.00 |
| 245 | श्री परमेश्वरी हा.से. स्कूल | राजिम | 1500.00 |
| 246 | श्री भुवनेश्वरी प्रसाद तिवारी | रीवां | 101.00 |
| 247 | श्रीमती माधुरी तुम्मन यदु | रायपुर | 500.00 |
| 248 | श्री अनिल कुमार तिवारी | रीवां | 101.00 |
| 249 | श्री सुरज मक्कड | मुंगेली | 501.00 |
| 250 | श्री शरद यदु | रायपुर | 501.00 |
| 251 | श्री अनघा मोहरिल | नागपुर | 501.00 |
| 252 | श्री राकेश यादव | वर्धा | 510.00 |
| 253 | श्री अतुल बरगी | शहडोल | 501.00 |
| 254 | श्रीमती चंद्रारानी मिश्रा | शहडोल | 251.00 |
| 255 | श्रीमती मनोरमा मिश्रा | शहडोल | 201.00 |
| 256 | श्रीमती मंजू मिश्रा | शहडोल | 101.00 |
| 257 | श्रीमती गायत्री मिश्रा | शहडोल | 201.00 |
| 258 | डॉ. उषा दुबे | रायपुर | 501.00 |
| 259 | प्रेमलता दुबे | बिलासपुर | 2100.00 |
| 260 | श्री प्रणित देशमुख | वर्धा | 300.00 |
| 261 | श्रीमती शोभा यादव | नागपुर | 500.00 |
| 262 | श्रीमती शैलजा देशपाण्डे | नागपुर | 501.00 |
| 263 | श्री कपश देशपाण्डे | नागपुर | 1001.00 |
| 264 | श्रीमती अरजवी देशपाण्डे | नागपुर | 5000.00 |
| 265 | श्रीमती नशिता देशवाण्डे | नागपुर | 5000.00 |
| 266 | श्री सुभाष शुक्ला | रायपुर | 101.00 |
| 267 | श्रीमती ज्योत्सना दास | रायपुर | 500.00 |
| 268 | श्री संतोष कुमार सोनी | राजीम | 500.00 |
| 269 | श्री इन्द्रपाल तिवारी | रीवां | 101.00 |
| 270 | श्री गुरूपरिवार बिलाडी | नेवरा | 350.00 |
| 271 | श्री ओ.पी.शर्मा / प्राची शर्मा क्षितिज आमतेन्दु वेदश्री | इन्दौर | 5000.00 |
| 272 | श्री संतोष गुप्ता | बैकुंठपुर | 500.00 |
| 273 | श्री चन्द्रप्रकाश देवरस | बिलासपुर | 501.00 |
| 274 | श्री भरत लाल गुप्ता | बैकुंठपुर | 151.00 |
| 275 | श्री बहादुर सिंह ठाकुर | भोपाल | 1101.00 |

| | | | |
|---|---|---|---|
| 276 | श्री मोहित कुमार लूनिया | मुंगेली | 500.00 |
| 277 | श्री राजेश वडयालकर | दुर्ग | 100.00 |
| 278 | श्री नेपाल सिंह | भोपाल | 501.00 |
| 279 | श्री ओ.एन. पाण्डेय | दुर्ग | 150.00 |
| 280 | श्री राम आशिष द्विवेदी | रीवां | 500.00 |
| 281 | श्री ब्रजेश कुमार द्विवेदी | रीवां | 500.00 |
| 282 | श्री योमेश अग्रवाल | शहडोल | 251.00 |
| 283 | श्री एन.एन. पाण्डेय | दुर्ग | 100.00 |
| 284 | श्री बसंत सोनी | मुंगेली | 100.00 |
| 285 | श्री विनोद गोस्वामी | मुंगेली | 1100.00 |
| 286 | श्री अनघा रानडे | वर्धा | 500.00 |
| 287 | श्री के.आर. साहू | दुर्ग | 151.00 |
| 288 | श्री के.के. अग्रवाल | दुर्ग | 50.00 |
| 289 | श्री दिवाकर नागरची | चांपा | 101.00 |
| 290 | श्री ओम नागरे | खैरागढ़ | 101.00 |
| 291 | श्री नागरची | रतनपुरा | 101.00 |
| 292 | श्री मयंक सिंह नागरे | दुर्ग | 101.00 |
| 293 | जया नागरे | दुर्ग | 101.00 |
| 294 | श्री मोहन शर्मा | दुर्ग | 21.00 |
| 295 | श्री युवराज साहू | दुर्ग | 101.00 |
| 296 | श्री डी.एम. चीचोलकर | बिलासपुर | 501.00 |
| 297 | श्री दीपक चीचोलकर | बिलासपुर | 101.00 |
| 298 | श्रीमती सरस्वती गुप्ता | रायपुर | 501.00 |
| 299 | श्री रमन कुमार पाठकर | बिलासपुर | 101.00 |
| 300 | श्री मोहन लाल सोनी | कोतमा | 101.00 |
| 301 | श्री भरत भूषण तिवारी | उमरिया | 500.00 |
| 302 | श्रीमती उर्वशी रमेश वादयाकर | दुर्ग | 101.00 |
| 303 | श्री भैयालाल तिवारी | शहडोल | 100.00 |
| 304 | श्री राजेन्द्र कुमार | वनखेडी | 500.00 |
| 305 | श्री आर.क. दुबे | शहडोल | 501.00 |
| 306 | श्री सुधीर कौशल | जबलपुर | 1001.00 |
| 307 | श्री विकास शर्मा | शहडोल | 1000.00 |
| 308 | श्री शुभम त्रिपाठी | शहडोल | 500.00 |
| 309 | श्री वीरेन्द्र गिरि गोस्वामी | रायपुर | 500.00 |
| 310 | श्री अमन शर्मा | शहडोल | 500.00 |
| 311 | श्री यश त्रिपाठी | पेन्ड्रा | 200.00 |
| 312 | श्री अरविन्द चौहान | भोपाल | 500.00 |
| 313 | श्री राममिलाप मिश्रा | रीवां | 101.00 |
| 314 | श्री माहेश्वरी प्रसाद द्विवेदी | रीवां | 151.00 |
| 315 | श्री संजय नागरे | खैरागढ़ | 1001.00 |

| | | | |
|---|---|---|---|
| 316 | श्रीमती सुशीला नागरे | दुर्ग | 500.00 |
| 317 | श्री राजेश दुबे | बैकुठपुर | 100.00 |
| 318 | श्री मधुकर नागरची | चांपा | 501.00 |
| 319 | श्री अर्जूना सिंह नागरे | दुर्ग | 501.00 |
| 320 | श्रीमती रूखमणी देवी | रतनपुर | 101.00 |
| 321 | श्री राधे आनदेव | वर्धा | 201.00 |
| 322 | श्री अनिल कुमार द्विवेदी | रीवां | 101.00 |
| 323 | श्रीमती सुशिला छलोत्रे | भोपाल | 1500.00 |
| 324 | श्री संजय छलोत्रे | भोपाल | 1500.00 |
| 325 | सौ. निशा छलोत्रे | भोपाल | 1500.00 |
| 326 | कु. नम्रता छलोत्रे | भोपाल | 1500.00 |
| 327 | कु. चेतना छलोत्रे | भोपाल | 1500.00 |
| 328 | श्री रामदास मांगीलाल छलोत्रे | भोपाल | 2100.00 |
| 329 | श्री एस.एन.मिश्रा | भोपाल | 501.00 |
| 330 | श्री चढावा खाते जमा | | 61286.00 |
| 331 | श्री राजेश तेजवानी | | 250.00 |
| 332 | श्री डी.के.द्विवेदी | रीवां | 2000.00 |
| 333 | श्री सुबोध मिश्रा | शहडोल | 1000.00 |
| 334 | श्रीमती रामरती सतमईमा | नागपुर | 1100.00 |
| 335 | श्री शिवनारायण चौहान | नागपुर | 500.00 |
| 336 | श्री हिसाब में बढ़त राशि | | 13.00 |
| | | | **748634** |

**वास्ते, ॐ श्री वासुदेव गुरूपरिवार आत्मोत्थान न्यास**

**कोषाध्यक्ष सचिव अध्यक्ष**